तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका
वर्ष- 14, अंक - 1, दिसंबर 2025 , मूल्य-15 रु
schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

सांस्कृतिक राग-रंगों और परंपराओं का संगम

निपुण हरियाणा

लक्ष्य अपना निपुण हरियाणा का, होगा पूर्ण ज़रूर।
ठाना जो भी अब तक हमने, पूरा किया हुज़ूर।

निपुण बनें ये बालक अपने, सबका यह अरमान।
मूलभूत साक्षरता सीखें, सीखें संख्या मान।
फलीभूत हों सपने इनके, सीखें सभी शऊर।
लक्ष्य अपना निपुण हरियाणा का ...

देते हैं अध्यापक भी अब, नवाचार से ज्ञान ।
खेल-खेल में हर कौशल को, करते हैं आसान।
आज चढ़ा है उन पर भी ये, निपुणता का सरूर।
लक्ष्य अपना निपुण हरियाणा का ...

बच्चों की हम करें बात अब, करते वर्ण डिकोड।
पाठ पढ़ें वे साथ समझ के, हर्फों का कर जोड़।
पढ़ें मिनट में शब्द साठ वे, लक्ष्य अब नहीं दूर।
लक्ष्य अपना निपुण हरियाणा का ...

हो गणित में गिनती पहाड़े, अंकों की पहचान।
घटा जोड़ या गुणा भाग हो, सबका उनको ज्ञान।
हो रहा अब निपुण हरियाणा ये, करते सभी ग़रूर।
लक्ष्य अपना निपुण हरियाणा का ...

नरेंद्र कुमार, अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला, सफेदारनगर
खंड- पटौदी, जिला- गुरुग्राम, हरियाणा

शिक्षा सारथी
दिसंबर 2025

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विनीत गर्ग
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. विवेक अग्रवाल
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा
जितेंद्र कुमार
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्
गौरव कुमार
अतिरिक्त निदेशक
(प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक**: 150 रुपये

Published & Printed by **Parveen Sangwan** on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"कलाओं और परंपराओं को शिक्षा की मुख्यधारा में लाया जाये - नई शिक्षा नीति"

» कल्चरल फेस्टः सांस्कृतिक राग-रंगों और परंपराओं का संगम 5
» शिक्षा, संस्कृति व नवभारत निर्माण का संकल्प 12
» क्यों आवश्यक है सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षा 13
» 21 हजार बच्चों ने कुरुक्षेत्र में किया वैश्विक गीता पाठ 14
» जब शिक्षक का मन स्वस्थ होता है, तब शिक्षा खिल उठती है 16
» डेटा-आधारित निर्णय एवं स्कूली शिक्षा की सीमाएँ 18
» गणित से मत डरिए 20
» प्रकृति-प्रेम और शिक्षा-सेवा का समन्वय 22
» बच्चों के लिए बेहद प्रेरक साहित्य 24
» बहुमुखी प्रतिभा की धनी है छात्रा मीनाक्षी 25
» भाषा सीखने के 'खेल पिटारे' का विमोचन 25
» खेल-खेल में विज्ञान 28
» मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
» मामूली-सा पत्थर 31
» Holistic Growth in Education: A Comprehensive Approach 32
» The Art of Sensitivity in Awareness 34
» Unforgettable Vendors of Z Street 38
» Gita Jayanti: The Celebration of Divine Wisdom 40
» Guru Gobind Singh Jayanti: The Celebration of Courage... 44
» The Winter Solstice: The Longest Night... 47

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

सीखना सिर्फ करियर नहीं, एक संस्कार भी बने

इस महीने का 'शिक्षा सारथी' अंक केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक विचार है। भारत की वह शिक्षा-यात्रा है, जिसमें कला, संस्कृति, नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और आध्यात्मिक चेतना एक साथ चलती हैं। शिक्षा का अर्थ सिर्फ पाठ्य पुस्तकें नहीं, बल्कि वे मूल्य हैं जो हमें मनुष्य बनाते हैं -यही भाव इस अंक की मूल धुरी है।

हमारी कवर-स्टोरी हरियाणा राज्य के भव्य सांस्कृतिक उत्सव को समर्पित है। वहाँ मंच पर सजी लोक विरासत, बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्तियाँ और विद्यालयों की सृजनशीलता एक ही संदेश देती हैं- स्कूल सिर्फ पाठशाला नहीं, संस्कृति की प्रयोगशाला भी हैं। जब कला शिक्षा से जुड़ती है, तो सीखने की सतह गहरी हो जाती है। बच्चे केवल प्रदर्शन नहीं करते, भविष्य की सामाजिक संवेदनशीलता का अभ्यास करते हैं।

इस अनुक्रम में एक और ऐतिहासिक घड़ी दर्ज हुई- वैश्विक गीता पाठ में हरियाणा के 21,000 बच्चे कुरुक्षेत्र में एक स्वर में जुड़े और ऑनलाइन माध्यम से एक लाख से अधिक विद्यार्थी इस आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक प्रयास का हिस्सा बने। यह महज एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि नई पीढ़ी को अपने ज्ञान-स्रोतों से जोड़ने का मार्ग है। गीता, योग या भारतीय दर्शन का अर्थ किसी धर्म से नहीं, बल्कि कर्तव्य, धैर्य, स्व-अनुशासन और नैतिक निर्णय-क्षमता से है। आधुनिक शिक्षा इन्हीं गुणों को जीवनयोग बनाना चाहती है- यह अंक उसी परिवर्तन का जश्न है।

इसके साथ ही इस महीने की विशेषता है- SEEL (Social-Emotional-Ethical Learning) को समर्पित हमारे दो लेख- एक विद्यार्थियों पर और एक शिक्षकों पर केंद्रित। बदलती दुनिया में शिक्षा की चुनौती यह नहीं कि बच्चों को कितनी जानकारी है, बल्कि यह कि वे इसे जीवन में कैसे जीते हैं। सहानुभूति, ज़िम्मेदारी, संवाद, मित्रता, टीमवर्क, आत्म-नियमन ये आज की शिक्षा का अनिवार्य आधार हैं। हरियाणा का विद्यालयी तंत्र इन आयामों पर जिस तीव्रता से काम कर रहा है, वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की वास्तविक आत्मा है, क्योंकि शिक्षा तभी सार्थक है, जब वह बच्चों को मानव-मूल्यों की भाषा में जीना सिखाए।

इस अंक का मूल संदेश यही है कि हम ऐसे विद्यालय बना रहे हैं जो बुद्धि विकसित करें, हृदय को संवेदनशील बनाएँ और संस्कृति को जीवित रखें। सिर्फ ज्ञान नहीं, चरित्र, करुणा और कर्म भी शिक्षा के केंद्र में हों। आने वाली पीढ़ी ज्ञानवान ही नहीं, संवेदनशील और सशक्त भी हो, यही हमारा राष्ट्रीय संकल्प है और यही 'शिक्षा सारथी' का मार्ग भी। आइए, हम सब मिलकर एक ऐसी शिक्षा-यात्रा का निर्माण करें जहाँ सीखना सिर्फ करियर नहीं, एक संस्कार भी बने।

-संपादक

कल्चरल फेस्ट: सांस्कृतिक राग-रंगों और परंपराओं का संगम

दीपा रानी

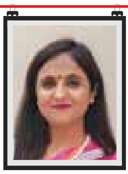

हमारी शिक्षा पद्धति तभी सचमुच देश और समाज के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है, जब उसके केंद्र में केवल पाठ्य-अध्ययन ही नहीं, बल्कि कला, संस्कृति और संस्कारों का समन्वय भी हो। यह सत्य है कि विद्यालयी पाठ्यक्रम स्वयं भी विद्यार्थियों को नैतिक मूल्य सिखाता है, उन्हें विचारशील और जिम्मेदार बनाता है; परंतु केवल पाठ्यज्ञान पर्याप्त नहीं होता। जब बच्चों को किताबों के साथ-साथ सांस्कृतिक उत्सवों, कलात्मक गतिविधियों, लोकपरंपराओं और सृजनात्मक अभिव्यक्तियों से जोड़ा जाता है, तब उनका विकास बहुआयामी हो जाता है। ऐसे अवसर बच्चों को न केवल मानसिक रूप से, बल्कि शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से भी समर्थ बनाते हैं। मंच पर प्रस्तुति का साहस, समूह में काम करने की कला, समाज और संस्कृति से सीधा जुड़ाव- ये सभी अनुभव बच्चों में आत्मविश्वास जगाते हैं और उनके व्यक्तित्व को सँवारते हैं। इसी प्रक्रिया में वे अधिक सामाजिक, जागरूक और मूल्य-सम्पन्न बनते हैं तथा उनमें देश-समाज के प्रति अपनापन और उत्तरदायित्व की भावना प्रबल होती है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग का उद्देश्य केवल गुणवत्तापरक शिक्षा देना भर नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के

सर्वांगीण और संतुलित विकास को सुनिश्चित करना है। इसी सोच के अंतर्गत विभाग समय-समय पर खेल प्रतियोगिताओं, एडवेंचर कैंपों, कला-उत्सवों, कल्चरल फेस्ट, चित्रकला प्रतियोगिताओं, बालरंग जैसे सांस्कृतिक आयोजनों का विस्तार से आयोजन करता है। ये केवल कार्यक्रम नहीं, बल्कि शिक्षा के वे जीवंत पड़ाव हैं, जहाँ बच्चे पुस्तकों में लिखे ज्ञान को जीवन के अनुभवों से जोड़ना सीखते हैं। इन सभी गतिविधियों में बच्चों को जिस उत्सव का सर्वाधिक इंतज़ार रहता है, वह है कल्चरल फेस्ट, अर्थात् सांस्कृतिक उत्सव।

सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों के लिए उस खुले आकाश की तरह है, जहाँ वे प्रदेश की जीवंत परंपराओं, लोककला, लोकगीत, वेशभूषा और सांस्कृतिक विविधता को देखते, समझते और आत्मसात् करते हैं। यह उत्सव उन्हें खण्ड, जिला और राज्य स्तरों की विरासत से सीधा संवाद स्थापित करने का अवसर देता है। वे जान पाते हैं कि हमारी विविधता ही हमारी शक्ति है और हमारी लोक-संस्कृति ही हमारी पहचान। इस उत्सव में प्रस्तुत किए गए नृत्य, संगीत, नाटक, वेशभूषा-प्रदर्शन और लोक-परंपराएँ बच्चों में संवेदनशीलता, सौंदर्यबोध और रचनात्मकता का संचार करती हैं।

वास्तव में कल्चरल फेस्ट हरियाणवी संस्कृति का एक भव्य, रंगीन और प्राणवान् समागम है। इसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है मानो लघु हरियाणा सजीव रूप में हमारे सामने खड़ा हो। हरियाणवी परिधानों में सजे-धजे छात्र-छात्राओं की हँसी, उत्साह और ऊर्जा पूरे परिसर में एक विशेष उल्लास बिखेर देती है। लड़कियों की घेरदार चुनरिया, लड़कों का सफ़ेद धोती-कुर्ता और सिर पर सुशोभित साफ़ा -सब मिलकर मानो सदियों पुरानी लोकपरंपरा को पुनर्जीवित करते हैं। मंच पर नृत्य-भंगिमाएँ, ढोलक की थाप, बाँसुरी की मधुर तान, रागिनी और लोकगीत -सब मिलकर हरियाणा की आत्मा को साकार कर देते हैं।

इस सांस्कृतिक उत्सव का एक अनुपम दृश्य यह भी होता है कि बच्चों के साथ-साथ सभी उच्च अधिकारी, अध्यापकगण और अतिथि भी हरियाणवी पगड़ी पहनकर इस उत्सव में सहभागी बनते हैं। पगड़ी धारण करते ही उनके चेहरे पर जो गरिमा और प्रसन्नता झलकती है, उससे यह संदेश मिलता है कि संस्कृति केवल बच्चों की नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक धरोहर है, जिसे सँजोना और अपनाना हम सभी का दायित्व है। इस प्रकार कल्चरल फेस्ट न केवल एक उत्सव होता है, बल्कि हरियाणा की प्रतिष्ठा, परंपरा और सामूहिक गौरव का सजीव उत्सव बन जाता है।

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी विद्यालय स्तर से लेकर राज्य स्तर तक कल्चरल फेस्ट का आयोजन अत्यन्त उत्साह, उमंग, उल्लास और गरिमामयी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। यह सिर्फ़ एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि हरियाणा के विद्यालयी जीवन का वह विशेष पर्व है, जिसका विद्यार्थी, शिक्षक, अधिकारी और समस्त आयोजन-समुदाय वर्षभर प्रतीक्षा करते हैं। विविध विद्यालयों में प्रारम्भ हुए चयन-चरणों, ब्लॉक और जिला स्तर की प्रतिस्पर्धाओं से होकर चुनिंदा प्रतिभाएँ राज्यस्तरीय मंच तक पहुँचती हैं, और यही क्रम इस वर्ष भी गौरव और गरिमा के साथ आगे बढ़ा।

राज्य स्तरीय तीन दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव इस वर्ष 11 से 13 नवंबर 2025 तक हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के मार्गदर्शन में एक सुव्यवस्थित, वैभवपूर्ण और सुसंस्कृत आयोजन के रूप में सामने आया। इस महोत्सव

की समग्र रूपरेखा, संचालन तथा गुणवत्ता सुनिश्चित करने का श्रेय अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा श्री विनीत गर्ग, महानिदेशक मौलिक शिक्षा, हरियाणा डॉ. विवेक अग्रवाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा श्री जितेन्द्र कुमार, अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा श्री गौरव कुमार तथा संयुक्त निदेशक (एमएसएस) माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा सुश्री हरप्रीत कौर के दूरदर्शी नेतृत्व को जाता है। उनके सामूहिक मार्गदर्शन में यह आयोजन न केवल सुचारु रहा, बल्कि सभी के लिए स्मरणीय बन गया। तीनों दिनों तक कार्यक्रम-स्थल पर अनुशासन, कला-साधना और उत्सव-उर्जा का अद्भुत संयोजन दिखाई दिया।

महोत्सव की तैयारी लगभग बीस दिन पूर्व ही प्रारम्भ हो गई थी। योजना-निर्माण, आयोजन-स्थलों की व्यवस्था, मंच-निर्माण, पंजीकरण-प्रक्रिया, विद्यार्थियों के निवास व सुरक्षा, विभिन्न विधाओं के क्रम निर्धारण तथा प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन -इन सभी में हर विभाग ने तन-मन-धन से सहयोग दिया। पानीपत शिक्षा विभाग की टीम ने अतिथियों और प्रतिभागियों के स्वागत हेतु जिस प्रकार की आतिथ्य-परम्परा दिखाई, वह सराहनीय रही। आर्य पीजी कॉलेज का संपूर्ण परिसर इन दिनों हरियाणवी लोक-संस्कृति के रंगों से ओतप्रोत प्रतीत हो रहा था। प्रवेश-द्वार से लेकर मंचस्थलों तक हरियाणवी सौन्दर्य, लोकचित्र, रंग-रेखाएँ, पारंपरिक सजावट और ग्रामीण सौन्दर्य का संयोजन मानो वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति का मन आकर्षित कर रहा था।

कॉलेज में प्रवेश करते ही एक ओर सुसज्जित पंक्ति में खड़े एनसीसी कैडेट्स का गर्मजोशी से किया गया स्वागत मन को छू जाता था। कैडेट्स की वर्दी में परिलक्षित अनुशासन और मुस्कान में झलकती आत्मीयता एक सुखद प्रारम्भ का अहसास कराती थी। गेट के दाहिने ओर रजिस्ट्रेशन काउंटर व्यवस्थित ढंग से लगाए गए थे, जहाँ सभी विधाओं के लिए अलग-अलग स्टॉल बनाए गए थे। प्रत्येक स्टॉल पर शिक्षकगण अपने कार्य में तल्लीन थे-दस्तावेज़ जाँच रहे थे, प्रतिभागियों का स्वागत कर रहे थे, और मुस्कुराते हुए उन्हें आवश्यक सूचनाएँ प्रदान कर रहे थे। पंजीकरण स्थल पर विद्यार्थियों को उनके निवास-स्थल, प्रतियोगिता-स्थल, प्रस्तुति-समय और अन्य दिशा-निर्देश अत्यन्त सुव्यवस्थित ढंग से उपलब्ध करवाए जा रहे थे।

महोत्सव के प्रथम दिन कक्षा 5 से 8 के कनिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। विभिन्न जिलों से आई नन्ही-मुन्नी प्रतिभाएँ हरियाणवी परिधान में सचमुच मन को मोह लेने वाली लग रही थीं -चटख रंगों की घेरदार पोशाकें, सिर पर बँधे साफ़े, और चेहरे पर चमकता उत्साह। प्रतियोगिता-स्थलों को हर विधा नृत्य, संगीत, नाटक, एकल प्रस्तुति, लोकगीत, के अनुसार पृथक्-पृथक् तैयार किया गया था। हर मंच पर बच्चों की ऊर्जा, रंग, ताल, लय और आत्मविश्वास का अद्भुत संगम दिखाई दे रहा था।

पहले ही दिन यह अनुभव सहज मिल गया कि यह

कनिष्ठ वर्ग (कक्षा 5 से 8) में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान

- ग्रुप फोक डांस, राजकीय माध्यमिक विद्यालय बिधराना, ज़िला- जींद
- रागिनी, एसएनके राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हलुवास, ज़िला- भिवानी
- सोलो डांस, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शेरगढ़, ज़िला- कैथल
- स्किट (लघुनाटिका) राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय इंदा छोई, ज़िला- फतेहाबाद

वरिष्ठ वर्ग (कक्षा 9 से 12) में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान

- ग्रुप फोक डांस, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मडलौडा, जिला- पानीपत
- रागिनी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झाड़ सैंतली, ज़िला- फरीदाबाद
- सोलो डांस, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हंसका, ज़िला- रेवाड़ी,
- स्किट (लघुनाटिका) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय संगवारी, ज़िला- रेवाड़ी

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला द्वारा प्रारम्भ किया गया 'सांस्कृतिक उत्सव' हमारे नौनिहालों के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। यह उत्सव न केवल बच्चों में नई ऊर्जा, उल्लास और आत्मविश्वास का संचार करता है, बल्कि उन्हें कला, संस्कृति तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति की ओर प्रेरित भी करता है।

इस आयोजन के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ रहे हैं तथा हमारी धरोहर-स्वरूप लोककलाओं और समृद्ध परंपराओं से नवपीढ़ी का परिचय सुदृढ़ हो रहा है। जिन कलाओं और परंपराओं पर विलुप्ति का संकट मंडरा रहा था, उन्हें यह उत्सव पुनर्जीवित करने का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

ऐसी सांस्कृतिक गतिविधियाँ केवल पाठ्यक्रम की पूरक नहीं, बल्कि जीवननिर्माण का आवश्यक अंग हैं। ये गतिविधियाँ बच्चों में संतुलित व्यक्तित्व, वैचारिक परिपक्वता और रचनात्मक चिंतन विकसित कर उन्हें आत्मनिर्भर, सजग और संस्कारित नागरिक बनने की दिशा प्रदान करती हैं।

हमारे राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए यह सांस्कृतिक उत्सव हरियाणवी संस्कृति को सँजोने और सँवारने का अत्यंत प्रेरणादायी तथा प्रशंसनीय उपक्रम है। यह उत्सव हमारी सांस्कृतिक अस्मिता को गौरवपूर्ण स्वरूप प्रदान कर भविष्य के लिए एक सुदृढ़ सांस्कृतिक आधार निर्मित कर रहा है।

हरप्रीत कौर
संयुक्त निदेशक (एमएसएस)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

महोत्सव केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि उस विचार का उत्सव है जिसके केंद्र में हरियाणा की संस्कृति, विद्यालयी शिक्षा की सृजनात्मकता और विद्यार्थियों की प्रतिभा है।

सांस्कृतिक महोत्सव का औपचारिक शुभारंभ उपायुक्त पानीपत श्री वीरेंद्र दहिया द्वारा परंपरागत दीप-प्रज्वलन के साथ हुआ। दीप की लौ प्रज्वलित होते ही सम्पूर्ण सभागार में एक गरिमामयी आभा फैल गई, मानो कला, संस्कृति और ज्ञान की पवित्र ज्योति पूरे वातावरण को आलोकित कर रही हो। उपायुक्त महोदय ने सभी जिलों से आए हुए प्रतिभागियों का पानीपत की धरती पर हार्दिक स्वागत किया और उन्हें श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। उनके प्रेरक शब्दों ने उपस्थित विद्यार्थियों और शिक्षकों के मन में उत्साह, आत्मविश्वास और एक नई उमंग भर दी।

कुछ ही क्षणों में आर्य पीजी कॉलेज का विशाल सभागार हरियाणवी रागनी, लोक-धुनों और नृत्य-लयों से इस प्रकार गूँज उठा कि वातावरण उत्सव-रस में डूब गया। चारों ओर हरियाणवी संस्कृति की छटा, लोक-परंपरा की महक और ग्रामीण जीवन की सहजता का अद्भुत समागम देखा जा सकता था। बच्चों के सिर पर सजी विविध रंगों की पगड़ियाँ, कुर्ता-धोती, घाघरा-चुंदड़ी, कंठी, गलसरी, झालरा, बोरला, पाजेब, तगड़ी -ये सभी लोक-परिधान और आभूषण, जो आधुनिकता की भीड़ में कहीं धुँधले पड़ते जा रहे थे, यहाँ अपने प्राचीन सौन्दर्य के साथ निखरते हुए दिखाई दे रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो हरियाणा की लोक-विरासत एक बार फिर जीवित होकर मंच पर उतर आई हो।

समूह लोकनृत्य की विधा में हरियाणा की छोरियों ने दमदार प्रस्तुति देकर सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनके कदमों की लय, हाथों की मुद्राएँ और चेहरों पर झलकता आत्मविश्वास देखकर पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। वहीं दूसरी ओर कक्षा 5 से 8 के नन्हे प्रतिभाशाली बच्चों ने रागिनी में ऐसी सधे हुए स्वरों वाली प्रस्तुतियाँ दीं कि श्रोता आश्चर्य से भर उठे। उनके स्वर की मिठास, भाव-अभिनय की सहजता और प्रस्तुति की निपुणता देखकर अनेक क्षणों तक सभागार में भावविभोर शांति छाई रही-मानो हर व्यक्ति उस लोकरस में डूबा हुआ हो।

तीसरी विधा स्किट (लघुनाटिका) में बच्चों ने हरियाणवी संस्कृति, सामाजिक मूल्यों और पर्यावरण-संरक्षण से संबंधित विषयों पर ऐसे गहन संदेश दिए कि उन्हें शब्दों में बाँध पाना कठिन प्रतीत होता है। उनकी प्रस्तुति में जो सहज अभिनय, स्पष्ट उच्चारण और प्रभावी

संवाद-प्रवाह था, उसने दर्शकों के मन में संवेदनशीलता की गहरी लहर पैदा की। बच्चे अपनी मासूम ऊर्जा के साथ यह महसूस करा रहे थे कि विद्यालयी शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं, बल्कि समाज और प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदारी को समझने का भी माध्यम है।

दूसरा दिन -वरिष्ठ वर्ग का सांस्कृतिक वैभव

सांस्कृतिक उत्सव के दूसरे दिन कक्षा 9 से 12 के वरिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ हुआ। जिलों से आए उत्साहित विद्यार्थी जब हरियाणवी परिधान में कॉलेज परिसर में पहुँचे, तो वातावरण में एक नई चमक उत्पन्न हो गई। उनकी वेशभूषा में लोक-सौंदर्य, चेहरे पर आत्मविश्वास, और मन में कला-अभिव्यक्ति का उत्साह स्पष्ट रूप से झलक रहा था। जिस प्रकार कनिष्ठ वर्ग की प्रस्तुतियों ने सभी के मन को छुआ था, उसी गरिमा के साथ वरिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों ने भी अपने प्रदर्शन से दर्शकों के हृदय में गहराई से स्थान बना लिया।

फोक डांस (समूह और एकल) दोनों ही श्रेणियों में बच्चों ने लोकगीतों पर ऐसी तालमेल-युक्त प्रस्तुतियाँ दीं कि पूरा सभागार उत्साह से भर उठा। उनके घूमते घाघरे और लय के साथ बहती देहभाषा ने दर्शकों में हरियाणवी मिट्टी का स्पंदन जगा दिया। वहीं रागिनी की विधा में वरिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों की प्रस्तुतियाँ अत्यन्त परिपक्व, गम्भीर और भावपूर्ण रहीं। उनके सुरों में केवल स्वर-सौंदर्य ही नहीं, बल्कि हरियाणा की मिट्टी की आत्मा भी समाहित थी।

लघुनाटिका में वरिष्ठ वर्ग के बच्चों ने समाज में फैली कुरीतियों, आपसी वैमनस्य, पर्यावरण-उपेक्षा और मानवीय संवेदनाओं के क्षय जैसे विषयों पर सटीक टिप्पणी प्रस्तुत की। स्किट की यह विधा विद्यार्थियों में न केवल अभिव्यक्ति-कौशल विकसित करती है, बल्कि उनके हृदय में सामाजिक चेतना और संवेदनशीलता का संचार भी करती है। उनकी प्रस्तुतियों में कहीं व्यंग्य था, कहीं करुणा, कहीं चेतावनी, और कहीं प्रेरणा-जो दर्शकों को सोचने के लिए बाध्य कर देती है।

इस प्रकार दूसरा दिन भी अपने आप में उसी ऊर्जा, सृजनशीलता और सांस्कृतिक उत्साह से भरा रहा, जिसने यह प्रमाणित कर दिया कि हरियाणा के विद्यार्थी

इस वर्ष पानीपत ज़िले में सम्पन्न राज्य स्तरीय सांस्कृतिक महोत्सव अपने आप में एक अनुपम उत्सव रहा, जिसने समूचे नगर को कला, सौंदर्य और युवा सृजनशीलता के रंगों से आलोकित कर दिया। हरियाणा के 22 ज़िलों से आए 1800 से अधिक छात्रों और 300 से अधिक कुशल कलाकारों ने अपनी लोक-धरोहर, नृत्य-लयों, मधुर संगीत और भावनाओं से परिपूर्ण नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से ऐसा जादू बिखेरा कि परिसर का प्रत्येक कोना संस्कृति के स्पंदन से जीवंत हो उठा।

विभिन्न श्रेणियों में विजेता प्रतिभागियों को 40,000, 30,000 तथा 20,000 के पुरस्कारों के साथ आकर्षक ट्रॉफ़ियाँ प्रदान की गईं, जबकि विशिष्ट प्रतिभाओं को 10,000 के सांत्वना पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा छात्रों के परिश्रम और कलात्मक निष्ठा की प्रशंसा ने सभी प्रतिभागियों के उत्साह को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

11 से 13 नवंबर 2025 तक आर्य पीजी कॉलेज, पानीपत में आयोजित यह महोत्सव सुव्यवस्था, अनुशासन और आतिथ्य के लिए सर्वत्र सराहा गया। हमारे लिए यह गौरव का क्षण भी रहा कि जिले की लोकनृत्य टीम को राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ।

यह आयोजन केवल एक उत्सव भर नहीं था, बल्कि इसने यह सिद्ध किया कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी भी प्रतिभा, परिश्रम और संस्कृति के मंच पर अपनी उज्ज्वल पहचान निर्मित कर रहे हैं।

राकेश बूरा
जिला शिक्षा अधिकारी पानीपत, हरियाणा

पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ शिक्षा को सरस, रोचक और जीवंत बनाती हैं। ये न केवल विद्यार्थियों में नवीनता का संचार करती हैं बल्कि उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व-विकास का भी मार्ग प्रशस्त करती हैं। अतः आवश्यक है कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ गतिविधि-आधारित अधिगम पर भी समान बल दिया जाए। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला इस दिशा में निरंतर कार्यरत रहा है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण है- राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव, जिसने बच्चों को हमारी समृद्ध हरियाणवी संस्कृति से आत्मीय रूप से जोड़ दिया है।

इस मंच के माध्यम से विद्यार्थियों की छुपी प्रतिभाएँ उजागर हो रही हैं तथा वे लोककला, लोकनृत्य, रागिनी और अन्य सांस्कृतिक विधाओं को आत्मसात् करते हुए आत्मविश्वास के नए आयाम गढ़ रहे हैं। राज्य स्तरीय उत्सव ने हमारी संस्कृति को नई पहचान दी है और आज हमारे बच्चे राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना परचम लहरा रहे हैं।

इन उत्कृष्ट उपलब्धियों के पीछे बच्चों की अथक मेहनत के साथ-साथ उनके अध्यापकों का समर्पण भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जो उन्हें निरंतर दिशा, सहयोग और प्रेरणा प्रदान करते हैं। इस वर्ष जो टीम राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा का प्रतिनिधित्व करने जा रही है, उसे मैं हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देती हूँ। यह उत्सव निश्चय ही हमारी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

अमनप्रीत कौर

कार्यक्रम अधिकारी, निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ बालक के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इनका बालक की बौद्धिक क्षमता, भाषा तथा शारीरिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से बालक की जन्मजात शक्तियों को पहचाना जा सकता है। इन्हीं शक्तियों की पहचान करके एक कुशल अध्यापक, एक कुशल मार्गदर्शक की भाँति उचित देखरेख और मार्गदर्शन द्वारा इन शक्तियों को चरम तक पहुँचाता है।

बीज रूप में जो प्रतिभाएँ बच्चों में विद्यमान होती हैं, उन्हें पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा पहचाना जा सकता है और तभी बालक की प्रतिभा में निखार आता है। 'संस्कृति उत्सव' इसका एक ज्वलंत उदाहरण है। इसके साथ-साथ बालक में सामाजिक और नैतिक गुणों का भी विकास होता है तथा उसके समय का सदुपयोग होता है।

प्रत्येक अध्यापक को पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विशेष महत्त्व देना चाहिए, ताकि बालकों की मूल प्रवृत्तियों को ऊँचाइयों तक ले जाया जा सके और उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके।

संदीप रत्तेवाल

जिला सांस्कृतिक समन्वयक, पानीपत

हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत प्राचीन है, जिसकी जड़ें वैदिक काल, महाभारत और सिंधु-सरस्वती सभ्यता से जुड़ी हुई हैं। यहाँ की संस्कृति लोक-कथाओं, पारंपरिक संगीत, घूमर जैसे नृत्यों, तीज-होली जैसे लोक-पर्वों तथा विविध बोलियों की मधुरता में सजीव दिखाई देती है। इस अमूल्य विरासत को सुरक्षित रखने तथा अगली पीढ़ी तक सम्मानपूर्वक हस्तांतरित करने हेतु हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन अत्यंत सराहनीय पहल है।

इस उत्सव के माध्यम से विद्यार्थी न केवल अपनी परंपराओं से परिचित होते हैं, बल्कि वे हमारे लोक-साहित्य, लोकनृत्य और लोकसंगीत के महत्त्व को भी गहराई से समझने लगते हैं। सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए यह मंच प्रेरणा, प्रदर्शन तथा प्रगति- तीनों की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ ऐसी सांस्कृतिक गतिविधियाँ बच्चों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता और समूह-सहयोग जैसे गुणों को विकसित करती हैं, जो उनके सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य हैं। हरियाणा शिक्षा विभाग सदैव इस प्रयास में लगा रहा है कि विद्यार्थी किताबों के ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े हुए संपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में विकसित हों। यह उत्सव निश्चय ही उसी दिशा की एक सार्थक पहल है।

डॉ. नीलम शर्मा

जिला सांस्कृतिक समन्वयक, अम्बाला

न केवलशैक्षणिक रूप से प्रखर हैं, बल्कि सांस्कृतिक परंपरा को आगे बढ़ाने में भी अद्वितीय क्षमता रखते हैं।

सांस्कृतिक उत्सव का तीसरा दिन अपने आप में अत्यन्त चहल-पहल, उत्सुकता और उल्लास से भरपूर था। सुबह से ही आर्य पीजी कॉलेज का सभागार विद्यार्थियों की उपस्थिति से खचाखच भरा हुआ था। चारों ओर सजी हुई रंग-बिरंगी पगड़ियाँ, सुचारु पंक्तियों में बैठे विद्यार्थी, और वातावरण में फैली हुई हल्की-सी प्रत्याशा-सब मिलकर एक अद्भुत दृश्य रच रहे थे। सभागार में उपस्थित प्रत्येक बाल-प्रतिभा अपनी धड़कनों के साथ अपने परिणामों का इंतज़ार कर रही थी। उनके चेहरों पर उत्साह और जिज्ञासा का सम्मिश्रण, आँखों में चमक, और मन में उमड़ता-घुमड़ता गर्व, मानो हर पल इतिहास रचने की प्रतीक्षा थी।

इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में माननीय शिक्षा-मंत्री श्री महीपाल ढांडा जी का आगमन हुआ। मंत्री जी को देखते ही विद्यार्थियों की प्रसन्नता चरम पर पहुँच गई। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा सभागार गूँज उठा। बच्चों की आँखों में अपने शिक्षा मंत्री के प्रति सम्मान, अपनापन और उत्साह स्पष्ट चमक रहा था।

मंच पर अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव कुमार की उपस्थिति इस कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ा रही थी। जिला शिक्षा अधिकारी श्री रमेश बूरा ने मुख्य अतिथि सहित सभी माननीय अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया और संस्कृति-समृद्ध आयोजन के सभी पहलुओं का संक्षिप्त परिचय दिया।

मंत्री महोदय के समक्ष बच्चों ने विविध विधाओं की अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुतियाँ दीं-किसी ने रागिनी के भाव-सागर में डुबोया, किसी ने लोकनृत्य से मंच को जीवंत कर दिया, और किसी ने लघुनाटिका में समाज के सरोकारों को हृदयस्पर्शी ढंग से व्यक्त किया। मंत्री जी विद्यार्थियों की प्रतिभा से अत्यन्त प्रसन्न हुए। उनके प्रोत्साहन-भरे शब्दों ने बच्चों के मन में गर्व की एक नई चमक भर दी। और फिर वह घड़ी आई जिसका तीन दिनों से सभी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे- परिणाम घोषणा।

कनिष्ठ वर्ग (कक्षा 5 से 8) तथा वरिष्ठ वर्ग (कक्षा 9 से 12) की विभिन्न सांस्कृतिक स्पर्धाओं में इस वर्ष हरियाणा के विद्यालयों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और राज्य स्तरीय प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने ज़िलों का गौरव बढ़ाया। कनिष्ठ वर्ग में राजकीय माध्यमिक विद्यालय बिधराना, ज़िला जींद ने शानदार ग्रुप डांस प्रस्तुत कर प्रथम स्थान हासिल किया। रागिनी विधा में एसएनके राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हलुवास, जिला भिवानी ने अपनी लोक-संगीत-समृद्ध प्रस्तुति से सभी का मन मोहा। सोलो डांस श्रेणी में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शेरगढ़, ज़िला कैथल के विद्यार्थी ने मनमोहक नृत्य के दम पर प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि स्किट (लघुनाटिका) प्रतियोगिता में राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय इंदा छोई, ज़िला फतेहाबाद की टीम ने श्रेष्ठ अभिनय के साथ प्रभावशाली संदेश देकर बाज़ी मारी।

वरिष्ठ वर्ग (कक्षा 9 से 12) में भी विद्यार्थियों ने

अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन किया। ग्रुप फोक डांस में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मडलौडा, जिला पानीपत ने अपनी पारंपरिक लोकनृत्य शैली से प्रथम स्थान प्राप्त किया। रागिनी श्रेणी में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झाड़ सैंतली, जिला फरीदाबाद ने श्रेष्ठ गायन प्रस्तुत किया। सोलो डांस में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हंसका, ज़िला रेवाड़ी के विद्यार्थी ने लय, ताल और अभिव्यक्ति से सभी को प्रभावित किया। वहीं स्किट (लघुनाटिका) में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय संगवारी (रेवाड़ी) की टीम ने सामाजिक विषय पर सशक्त प्रस्तुति देकर प्रथम स्थान अपने नाम किया। यह उपलब्धियाँ विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और विद्यालयों के समर्पित प्रयासों का सुंदर प्रमाण हैं।

कक्षा 5 से 8 के कनिष्ठ समूह में ओवरऑल ट्रॉफी पर जिला पानीपत का कब्जा रहा।

कक्षा 9 से 12 के वरिष्ठ समूह में भी ओवरऑल ट्रॉफी जिला पानीपत ने ही अपने नाम की, जिससे वहाँ उपस्थित पूरे पानीपत दल का उत्साह दुगुना हो गया।

इसके बाद श्री महीपाल ढांडा जी ने सभी विजेता टीमों को ट्रॉफी और प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। पुरस्कार ग्रहण करते समय बच्चों के चेहरों पर झलकती चमक तथा शिक्षकों की आँखों में उभरता गौरव-दोनों ही दृश्य अविस्मरणीय थे।

कार्यक्रम का समापन उतना ही भव्य रहा जितना कि इसका आरम्भ। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह रहा कि कक्षा 9 से 12 वर्ग में ग्रुप डांस में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली टीम आगामी राष्ट्रीय स्तर की बाल रंग प्रतियोगिता में हरियाणा का प्रतिनिधित्व करेगी। यह उपलबधि केवल विद्यार्थियों ही नहीं, बल्कि पूरे राज्य के लिए गर्व का विषय है।

यह सांस्कृतिक उत्सव नई पीढ़ी के मन में ऐसे भाव, विचार और संस्कारों के बीज बो गया है जो आने वाले वर्षों में हमारी सांस्कृतिक धरोहर के सुदृढ़ वृक्ष बनेंगे। जिन लोकपरंपराओं, लोकगीतों, लोकनृत्यों और लोक-आभूषणों को हम आधुनिकता की दौड़ में धीरे-धीरे खोते जा रहे थे, उन्हें इस मंच ने पुनः सहेजने का अवसर दिया। यह सांस्कृतिक महोत्सव इस बात का प्रमाण है कि जब विद्यालयी शिक्षा कला और संस्कृति से जुड़ती है, तो बच्चे न केवल प्रतिभाशाली बनते हैं, बल्कि अपनी मिट्टी, अपने लोक और अपने संस्कारों से भी गहराई से जुड़ते हैं।

यदि सच्चे मन से कहा जाए, तो शिक्षा विभाग का यह प्रयास हमारी लोककला, लोकसाहित्य, और लोकसंस्कृति को संरक्षण देने की दिशा में अत्यन्त सराहनीय और प्रभावशाली है। यह महोत्सव केवल तीन दिनों का आयोजन नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक आत्मा का पुनर्जागरण है -एक ऐसा पुनर्जागरण जो आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ता रहेगा।

पीजीटी फाइन-आर्ट्स
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सेक्टर-19, पंचकूला

गत तीन वर्षों से मैं जिला यमुनानगर में सांस्कृतिक समन्वयक के रूप में कार्यरत हूँ और इस वर्ष का सांस्कृतिक महोत्सव मेरे लिए अत्यंत विशेष रहा। पिछले वर्ष हमारी टीम ने राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा का प्रतिनिधित्व करते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया था, जिसने पूरे जिले के उत्साह को कई गुना बढ़ा दिया। इसी प्रेरणा से इस वर्ष विद्यालय स्तर के बाद ब्लॉक स्तर पर सभी छह खंडों- रादौर, बिलासपुर, जगाधरी, साढ़ौरा, सरस्वती नगर व छछरौली में प्रतियोगिताओं का अत्यंत भव्य आयोजन किया गया।

जिला स्तरीय उत्सव में समूह लोकनृत्य, रागिनी तथा अन्य सांस्कृतिक विधाओं की मनमोहक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी कला, मेहनत और समर्पण का अद्भुत प्रदर्शन किया। इस वर्ष राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, प्रतापनगर ने 5-8 तथा 9-12 दोनों श्रेणियों में आठों प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री उमेश खरबंदा जी का मार्गदर्शन और निरंतर परिश्रम इस उपलब्धि के मूल में रहा।

राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव 2025, पानीपत में भी यमुनानगर ने उम्दा प्रदर्शन किया- समूह लोकनृत्य (9-12) में तृतीय स्थान, रागिनी (9-12) में तृतीय स्थान तथा समूह लोकनृत्य (5-8) में सांत्वना स्थान प्राप्त कर जिले ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन की परंपरा को आगे बढ़ाया।

मुकेश कुमार
जिला सांस्कृतिक समन्वयक, यमुनानगर

मेरा नाम अंजली है। मैं कक्षा 12वीं में अध्ययनरत हूँ। नृत्य मेरे लिए केवल कला नहीं, बल्कि मेरे जीवन का आनंद और अभिव्यक्ति है। छठी कक्षा से ही रश्मि मैम ने मुझे इस दिशा में मार्गदर्शन दिया। अनेक कठिनाइयों और विरोधों के बावजूद मेरी माँ ने हर कदम पर मेरा साथ दिया और मैम ने हमें आगे बढ़ने की अनंत प्रेरणा दी। कई वर्षों तक हम राज्य स्तरीय उत्सवों में भाग लेते रहे, परंतु कई बार निराशा हाथ लगी। फिर भी रश्मि मैम ने कभी हमारा उत्साह टूटने नहीं दिया।

उन्होंने अपनी पूरी महीने की सैलरी से हमारे लिए कोरियोग्राफर और संगीतकार बुलाए- केवल इस विश्वास के साथ कि गाँव की बेटियाँ भी नृत्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती हैं। इस बार जब राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव में समूह नृत्य के परिणामों की घोषणा हुई और हमारे विद्यालय का नाम प्रथम स्थान पर आया, तो हमारी खुशी आँसुओं में बदल गई। रश्मि मैम भी भावुक हो उठीं- यह केवल हमारा नहीं, उनका भी सपना था।

अब हम राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा का प्रतिनिधित्व करने के लिए उत्साह, समर्पण और कठोर अभ्यास के साथ तैयारी कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि हम अपने प्रदर्शन से हरियाणा का गौरव और ऊँचा करेंगे।

-अंजली
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मडलौडा, पानीपत

मैं साक्षी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ढाणा खुर्द, (हिसार) की कक्षा छठी की छात्रा, अपने मन में अपार हर्ष लिए यह अनुभव साझा कर रही हूँ। राज्य स्तर पर आयोजित सांस्कृतिक उत्सव में रागिनी प्रतियोगिता में भाग लेना और पूरे हरियाणा में तृतीय स्थान प्राप्त करना मेरे लिए किसी मधुर स्वप्न के साकार होने जैसा है। इस उपलब्धि ने मेरे भीतर यह दृढ़ संकल्प और प्रबल कर दिया है कि मैं अपने हरियाणा की इस अमूल्य लोकविधा रागिनी को सम्पूर्ण भारतवर्ष तक पहुँचाऊँ, ताकि देश के हर कोने में हमारी माटी की महक, हमारी संस्कृति का सौंधा गीत और हमारे लोक-साहित्य की गरिमा पहचानी जा सके।

अपनी इस सफलता का सम्पूर्ण श्रेय मैं अपनी माँ को देती हूँ- जो मेरी पहली गुरु, मेरी प्रेरणा और मेरी सबसे बड़ी शक्ति हैं। उनके साथ-साथ मैं अपनी प्रिंसिपल मैम की भी हृदय से आभारी हूँ, जिनके सतत प्रोत्साहन, स्नेह और मार्गदर्शन ने मुझे हर कदम पर उत्साह से भर दिया। मैं हरियाणा शिक्षा विभाग का भी विशेष धन्यवाद करती हूँ, जिसने मुझ जैसी सामान्य परिवार की छात्रा को इतना भव्य और सम्मानपूर्ण मंच प्रदान किया, जहाँ प्रतिभा को निखरने और सपनों को उड़ान देने का अवसर मिलता है।

-साक्षी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ढाणा खुर्द
हाँसी-1, हिसार

शिक्षा, संस्कृति व नवभारत निर्माण का संकल्प : माननीय शिक्षा मंत्री का प्रेरक उद्‌बोधन

डॉ. प्रदीप राठौर

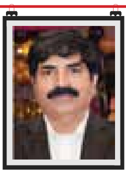

कल्चरल फेस्ट में मुख्यातिथि के रूप में आर्य पीजी कॉलेज पानीपत पहुँचे हरियाणा के माननीय शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा बच्चों की प्रस्तुतियाँ देखकर खूब अभिभूत हुए। उन्होंने कहा कि निर्णायक मंडल के लिए निर्णय करना वास्तव में बहुत कठिन होगा, क्योंकि प्रस्तुतियाँ एक से बढ़कर एक थीं। उन्होंने कहा कि बच्चों में कमाल की प्रतिभा है।

उन्होंने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि यदि जीवन में आगे बढ़ना है, तो हर कदम पर चुनौतियाँ मिलेंगी, और उन्हीं चुनौतियों का सामना करते हुए आगे जाना होगा। हमारे पूज्य गुरुजन अपने जीवन के अनुभव से विद्यार्थियों को तैयार करते हैं और समाज की सेवा के लिए उन्हें आगे भेजते हैं। शिक्षा मंत्री ने कहा कि आज का युग प्रतियोगिता का युग है, हमें सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के साथ आगे बढ़ना है।

आज भारत विश्व में सम्मान के साथ खड़ा है, क्योंकि भारत की संस्कृति, उसका विचार और उसकी जीवन-दृष्टि अद्वितीय है। मंत्री ने कहा कि आजकल विश्व में एक-दूसरे को हानि पहुँचाने, आक्रांत करने और निर्दोष की हत्या की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। पर्यावरण के संरक्षण की शिक्षा देने वाले अनेक देश स्वयं उस पर अमल नहीं करते, जिसके कारण विश्व में अराजकता फैल रही है। ऐसे हर समय में भारत ने अपने विचारों और जीवन-दर्शन से विश्व को मार्गदर्शन दिया है। भारत ने सदैव कहा है- 'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्‌भावना हो, विश्व का कल्याण हो।' क्या विश्व के किसी अन्य देश में ऐसी व्यापक, कल्याणकारी सोच की कल्पना भी की जाती है? उन्होंने कहा कि भारतीय जीवन-पद्धति वह है जिसमें सभी के विकास, समृद्धि, आनंद एवं प्रेम का भाव समाहित होता है, जहाँ बड़े-बुजुर्गों का सम्मान, सकारात्मक सोच और एक-दूसरे को आगे ले चलने की प्रेरणा दी जाती है।

उन्होंने गर्व के साथ कहा कि हरियाणा शिक्षा क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन किए गए हैं। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 लागू की, और इस नीति को निर्धारित समय में लागू करने वाला देश का पहला राज्य हरियाणा बन रहा है।

शिक्षा मंत्री ने गुरुजन से भी कहा कि देश की सबसे बड़ी पूँजी उनके पास है- विद्यार्थी। उन्होंने कहा कि शिक्षकों का दायित्व है कि वे ऐसे नागरिक तैयार करें जो जीवन की कठिनाइयों और चुनौतियों को प्रभावित हुए बिना, मुस्कुराते हुए पार कर जाएँ। चरित्र-निर्माण भी उतना ही आवश्यक है जितनी विद्या। यदि शिक्षक इस संकल्प के साथ कार्य करें कि भारत के बच्चे कल विश्व का मार्गदर्शन करेंगे, तो यह संकल्प अवश्य सिद्ध होगा, और उसी दिन भारत अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लेगा।

उन्होंने कहा कि यदि भारत का प्रत्येक जन उस संकल्प को धारण कर ले, तो जब भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी 2047 में मनाएगा, तब भारत विकसित राष्ट्र बन चुका होगा। हमारे ऋषि-मुनियों ने जिस दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी, हमें उसी भारत का निर्माण करना है- स्वर्णिम भारत का।

उन्होंने कहा कि सुपर-100 योजना के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि सरकारी विद्यालयों की पढ़ाई किसी भी प्रकार से कमतर नहीं है। सरकारी विद्यालयों के परीक्षा परिणाम काफी अच्छे रहे हैं। यह सब हमारे गुरुजन की कठोर मेहनत का परिणाम है। आज हरियाणा के सरकारी विद्यालयों का ढाँचा बदल चुका है। हम हर विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के बच्चों ने सुपर-100 जैसी योजनाओं में अद्भुत प्रदर्शन कर यह सिद्ध कर दिया है कि प्रतिभा किसी सुविधा या स्थिति की मोहताज नहीं होती। उन्होंने कहा कि निजी विद्यालयों में पढ़ना बुरा नहीं है, हर व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह जहाँ चाहे, वहाँ शिक्षा ग्रहण करे, परन्तु यह भी सत्य है कि सरकार ने अपनी शिक्षा व्यवस्था को अत्यधिक सक्षम, गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। उन्होंने कहा कि जो कमियाँ थीं, उन्हें दूर किया जा रहा है और सरकारी विद्यालयों को उत्कृष्टता के मानकों तक पहुँचाने के लिए सरकार निरंतर प्रयासरत है। 'हम अपने बच्चों को सर्वश्रेष्ठ देना चाहते हैं और इसी दिशा में पूरी निष्ठा से कार्य कर रहे हैं', उन्होंने कहा।

शिक्षा मंत्री ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि वे धैर्य बनाए रखें और अपनी पढ़ाई के प्रति ईमानदार रहें। उन्होंने कहा कि माता-पिता अत्यंत परिश्रम, संघर्ष और त्याग से अपने बच्चों के सुखमय भविष्य की कामना करते हैं। उनका जीवन कठिनाइयों से भरा होता है, परंतु वे केवल इस आशा में सब कुछ सहते हैं कि उनकी संतान प्रसन्न रहे, सुरक्षित रहे और आगे बढ़े। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि वे यह संकल्प लें कि माता-पिता के विश्वास को कभी टूटने नहीं देंगे और अपनी पढ़ाई में पूर्ण समर्पण के साथ सौ प्रतिशत प्रयास करेंगे।

शिक्षा मंत्री ने शिक्षकों से भी आह्वान किया कि वे यह निश्चय करें कि वे ऐसे नागरिक तैयार करेंगे जो भारत को विश्व का सबसे शक्तिशाली और सर्वाधिक विकसित राष्ट्र बनाने में योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन के मूल्यों-शांति, समृद्धि, आनंद, सद्भाव, धर्म की रक्षा और विश्व कल्याण को अपने आचरण में उतारते हुए आगे बढ़ना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि जब हम धर्म की रक्षा करते हैं, तो धर्म स्वयं हमारी रक्षा करता है। बच्चों को उन्होंने यह आशीर्वाद दिया कि वे अपने जीवन में खूब आगे बढ़ें, अपनी मंज़िल को अवश्य प्राप्त करें और किसी भी प्रकार का संदेह मन में न आने दें। अंत में उन्होंने कहा- 'आप सब बच्चों को मेरा हृदय से आशीर्वाद, और सभी गुरुजन को मैं सादर नमन करता हूँ।'

drpradeeprathore@gmail.com

क्यों आवश्यक है सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षा

डॉ. फिरोज़ ख़ान

कक्षा केवल पढ़ने-लिखने की जगह नहीं होती। यह वह स्थान है जहाँ बच्चे रिश्तों को समझना, भावनाएँ व्यक्त करना और चुनौतियों का सामना करना सीखते हैं। फिर भी हमारे शिक्षा तंत्र का केंद्र केवल अंकों, परीक्षाओं और मूल्यांकन तक सिमटा हुआ है। परिणामस्वरूप जीवन के बेहद महत्त्वपूर्ण आयाम, जैसे- भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक शिक्षा अक्सर पीछे छूट जाते हैं। यही कारण है कि आज बच्चों में तनाव, अवसाद, हिंसा और असंवेदनशीलता जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

हाल के वर्षों में भारत में बच्चों और बड़ों के बीच भावनात्मक असंतुलन के अनेक चिंता पैदा करने वाले उदाहरण देखने को मिले हैं। एक घटना ने सबको झकझोर दिया, जब एक पिता ने अपनी 17 वर्षीया बेटी को केवल इसलिए मार डाला, क्योंकि उसने नीट की मॉक परीक्षा में कम अंक प्राप्त किए थे। ऐसे हादसे केवल व्यक्तिगत अपराध नहीं हैं, बल्कि समाज में बढ़ती भावनात्मक अस्थिरता, असंवेदनशीलता और नैतिक गिरावट के प्रतीक हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल अकादमिक सुधारों से नहीं हो सकता इसके लिए भावनात्मक और नैतिक शिक्षा को शिक्षा प्रणाली के केंद्र में लाना होगा।

यहीं सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक अधिगम (Social Emotional and Ethical Learning SEEL) की आवश्यकता महसूस होती है। यह कोई नया सिद्धांत नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है, जो बच्चों को अपनी भावनाओं को पहचानने, दिशा देने और संतुलित ढंग से अभिव्यक्त करने में मदद करती है।

नीति-निर्माताओं और शिक्षकों द्वारा कक्षा को समावेशी और सकारात्मक बनाने के अनेक प्रयास हुए हैं, परंतु परीक्षा-केंद्रित शिक्षा पद्धति के कारण शिक्षक अक्सर केवल अंक और परिणाम तक सीमित रह जाते हैं। इस कारण बच्चों की भावनात्मक वृद्धि की गुंजाइश कम हो जाती है।

सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक अधिगम (SEEL) क्या है?

सरल शब्दों में, SEEL एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी भावनाओं को समझना, नियंत्रित करना, दूसरों के साथ संवेदनशीलता से व्यवहार करना और जिम्मेदार निर्णय लेना सीखता है। यह कोई एक बार सीखी जाने वाली चीज़ नहीं, बल्कि जीवन-भर चलने वाली प्रक्रिया है। इसके माध्यम से व्यक्ति में सहानुभूति, संवेदना और सकारात्मक संबंध स्थापित करने की क्षमता विकसित होती है। अंततः यह मनुष्य को भावनात्मक रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से जागरूक और नैतिक रूप से उत्तरदायी बनाता है।

भारत में SEEL क्यों ज़रूरी है-

भारत जैसे विविधता-भरे देश में, जहाँ बच्चे विभिन्न भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों से आते हैं, वहाँ प्रत्येक बच्चे के लिए सुरक्षित, सम्मानपूर्ण और समावेशी वातावरण बनाना अत्यंत आवश्यक है। हर बच्चे के अधिकारों का सम्मान और संरक्षण कक्षा में होना चाहिए।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, वर्ष 2023 में भारत में 13,000 से अधिक विद्यार्थियों ने आत्महत्याएँ कीं, जिनमें 2,000 से अधिक मामलों का संबंध शैक्षणिक असफलता से था। यह आँकड़ा बताता है कि केवल अकादमिक सफलता ही नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

SEEL इस दिशा में एक सशक्त उपकरण है। यह बच्चों में आत्मसम्मान, आत्मनियंत्रण और सहानुभूति का भाव उत्पन्न करता है। इससे कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनता है जहाँ बच्चे एक-दूसरे को समझते, सुनते और सम्मान देते हैं।

SEEL के मुख्य घटक और क्रियान्वयन के उपाय-

SEEL को कक्षा में लागू करना कठिन नहीं है। इसे खेल, कहानी, कला, संगीत और संवाद के माध्यम से सहज रूप से सिखाया जा सकता है। उदाहरण के लिए-

- कहानी और नाटक के ज़रिए बच्चे भावनाओं, सहानुभूति और नैतिक मूल्यों को अनुभव करते हैं।
- चित्रकला, संगीत और रचनात्मक गतिविधियाँ बच्चों को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का माध्यम देती हैं।
- समूह-गतिविधियाँ और खेल सहयोग, विश्वास और टीम भावना सिखाते हैं।
- ध्यान, योग और साँस लेने के अभ्यास एकाग्रता और आत्म-जागरूकता को बढ़ाते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विशेषज्ञ डैनियल गोलमैन ने SEEL से जुड़ी पाँच मूल क्षमताओं की पहचान की है-

1.आत्म-जागरूकता, 2.आत्म-प्रबंधन, 3. सामाजिक जागरूकता, 4.संबंध कौशल, 5.उत्तरदायी निर्णय-निर्माण

-ये सभी गुण भारतीय संस्कृति और नैतिक परंपरा में गहराई से निहित हैं। इन्हें बचपन से सिखाया जा सकता है। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) ने भी समग्र शिक्षा की दिशा में सहानुभूति, नैतिकता और भावनात्मक संतुलन पर विशेष बल दिया है।

क्रियान्वयन की चुनौतियाँ- हालाँकि नई शिक्षा नीति समग्र विकास की बात करती है, पर SEEL को लागू करने का ठोस ढाँचा अभी तक तैयार नहीं हुआ है। मुख्य चुनौतियाँ हैं-

- शिक्षक प्रशिक्षण की कमी- अधिकांश शिक्षकों को SEEL आधारित प्रशिक्षण नहीं मिला है।
- सीमित संसाधन- विशेषकर ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में।

इन चुनौतियों को कम करने के लिए-

- शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए, ताकि वे बच्चों की भावनात्मक ज़रूरतों को समझ सकें।
- पाठ्यक्रम को इस प्रकार पुनर्गठित किया जाए कि SEEL विषयों को कहानी, खेल, कला और संवाद के माध्यम से हर विषय में जोड़ा जा सके।
- शिक्षण संस्थानों को इस क्षेत्र में अनुसंधान और डाटा-संग्रह को बढ़ावा देना चाहिए ताकि प्रभावी नीतियाँ बनाई जा सकें।

निष्कर्ष

SEELकोई अलग विषय नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। यह बच्चों को संवेदनशील, आत्मविश्वासी, और जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करता है। भारत आज शिक्षा में समग्र विकास की ओर बढ़ रहा है -ऐसे में SEEL एक आशावान् मार्ग प्रस्तुत करता है, जो न केवल बच्चों के मस्तिष्क को बल्कि उनके हृदय को भी शिक्षित करता है।

रिसर्च एसोसिएट
मॉडर्न इंस्टिट्यूट फॉर एजुकेशन, नई दिल्ली

21 हजार बच्चों ने कुरुक्षेत्र में किया वैश्विक गीता पाठ

डॉ. सुदेश रानी

अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र के केशव पार्क में भव्य और ऐतिहासिक वैश्विक गीता पाठ आयोजित किया गया। इस सामूहिक पाठ में इक्कीस हजार बच्चों ने एक स्वर में गीता के अठारह श्लोकों का उच्चारण कर वह दिव्य दृश्य प्रस्तुत किया, जिसने पूरे वातावरण को ज्ञान, भक्ति और अध्यात्म से सराबोर कर दिया। ऐसा लग रहा था मानो पूरा प्रदेश ही गीतामय हो गया हो। प्रदेश के लाखों विद्यार्थी ऑनलाइन इस कार्यक्रम के साथ जुड़े। इस अभूतपूर्व सहभागिता ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भारतीय अवधारणा को साकार रूप दिया। इस कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने शिरकत की। इस अवसर पर योग गुरु बाबा रामदेव और गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज भी उपस्थित रहे।

गौरतलब है कि गीता जयंती के अवसर पर विद्यालयों में अनेक प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। इसी दौरान निबंध लेखन, गीता श्लोकोच्चारण, भाषण, संवाद, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। ये प्रतियोगिताएँ क्रमशः विद्यालय, खंड, जिला व राज्य स्तर पर आयोजित की गईं। विद्यार्थियों ने खूब उत्साह से इनमें भाग लिया।

कुरुक्षेत्र के केशव पार्क में मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन आयोजित वैश्विक गीता पाठ के कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री ने गीता-जयंती के पावन-पर्व की शुभकामनाएँ देते हुए भगवान् श्री कृष्ण से नागरिकों के जीवन को ज्ञान के आलोक से आलोकित करने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि इसी शुभ तिथि पर 5,163 वर्ष पूर्व भगवान् श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को श्रीमद्भगवद् गीता का दिव्य उपदेश दिया, जिसका संदेश आज भी संपूर्ण मानवता के लिए पथ-प्रदर्शक है। 21 हजार विद्यार्थियों द्वारा अष्टादशी श्लोकों के जाप से आकाश गूँज उठा है। यह गर्व की बात है कि आज भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा अनेक देशों में भी एक साथ इन श्लोकों के स्वर गूँज रहे हैं। उन्होंने कहा कि गीता पाठ का महत्त्व केवल धार्मिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक भी है। वेद, उपनिषद् और गीता के मंत्रों के उच्चारण से उत्पन्न होने वाली सकारात्मक ध्वनि तरंगें मन और मस्तिष्क को शांति प्रदान करती हैं, विचारों में नैतिकता लाती हैं और व्यक्ति को नई ऊर्जा प्रदान करती हैं।

गीता महोत्सव बन चुका है अंतरराष्ट्रीय उत्सव

मुख्यमंत्री ने कहा कि कर्मयोगी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की ही प्रेरणा से हम गीता जयंती समारोह को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाते हैं। उन्होंने वर्ष 2014 में अमेरिका की अपनी प्रथम यात्रा के दौरान 19 सितम्बर, 2014 को अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा को श्री महादेव देसाई द्वारा लिखित पुस्तक -'द गीता अकॉर्डिंग टू गांधी' भेंट की। इस अद्भुत पहल से प्रेरित होकर हम वार्षिक गीता जयंती समारोह को वर्ष 2016 से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने लगे हैं। इसमें कई देशों के प्रतिभागी और लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं।

'कर्मण्येवाधिकारस्ते' का उपदेश व्यक्ति को कर्तव्य पालन के मार्ग पर करता है अग्रसर

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान समय में तनाव, क्रोध और अनिश्चितता जैसी कई चुनौतियाँ हैं, जिनसे निपटने के लिए गीता हमें जीवन के हर उतार-चढ़ाव में समभाव बनाए रखने की प्रेरणा देती है। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन गीता का पाठ करने वाला व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से ऊपर उठ जाता है। गीता का प्रत्येक श्लोक ज्ञान का दीप है और प्रत्येक

अध्याय जीवन का मार्गदर्शक। भगवान् श्री कृष्ण द्वारा दिया गया 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' का उपदेश व्यक्ति को कर्तव्य पालन के मार्ग पर अग्रसर करता है और समाज में अनुशासन व संतुलन स्थापित करता है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस सिद्धांत को अपने जीवन में उतार ले, तो समाज में अनुशासन, समरसता और संतुलन स्वतः स्थापित हो जाएगा।

गीता का संदेश पूरी मानवता के लिए प्रेरणा-स्रोत

मुख्यमंत्री ने कहा कि गीता का हर श्लोक हमें जीवन जीने की नई प्रेरणा देता है। गीता केवल अर्जुन और भगवान् श्री कृष्ण जी के बीच का संवाद ही नहीं है, यह हमारे हर प्रश्न का समाधान करती है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जिस भी घर में गीता का नियमित रूप से पाठ होता है, वहाँ पर कभी किसी तरह की कोई नेगेटिव एनर्जी नहीं आ सकती। गीता हमें सिखाती है कि सुख-दुःख, सफलता असफलता, लाभ-हानि जीवन का हिस्सा हैं। इनसे विचलित हुए बिना हमें समभाव बनाए रखना चाहिए। यदि हर व्यक्ति इस शिक्षा को अपने जीवन में उतारे, तो आपसी संघर्ष और तनाव कम होगा।

उन्होंने कहा कि गीता का संदेश कालातीत है-यह केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति गीता के उपदेशों को अपनाएँ, तो कुरीतियाँ, असमानताएँ और संघर्ष स्वतः समाप्त हो जाएँगे और एक आदर्श समाज की स्थापना होगी। गीता के इस संदेश को अपनाकर हम एक-दूसरे के साथ बेहतर संबंध स्थापित कर सकते हैं और समाज में समरसता ला सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने उपस्थित-जन को गीता के ज्ञान को समझकर अपने जीवन में अपनाने और इसे दूसरों तक पहुँचाने का संकल्प दिलवाया।

गीता युवा पीढ़ी को सुसंस्कार देने का ग्रंथ

गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने देशवासियों का गीता जयंती की बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन को कर्म करने का संदेश दिया। यह सौभाग्य है कुरुक्षेत्र की भूमि पर गीता-जयंती मनाई जा रही है और भगवान् श्री कृष्ण ने भी इसी पावन धरा को उपदेश स्थली के रूप में चयनित किया। पिछले 10 सालों से अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव को बड़े स्तर पर मनाया जा रहा है। गीता जयंती के दिन कुरुक्षेत्र के केशव पार्क से जहाँ 21 हजार विद्यार्थी वैश्विक गीता पाठ कर रहे हैं, वहीं हरियाणा के एक लाख से ज्यादा विद्यार्थी, 50से ज्यादा देशों में भी वैश्विक गीता पाठ को लाखों-करोड़ों लोग देख रहे हैं। सरकार का प्रयास है कि आमजन मानस तक पवित्र ग्रंथ गीता के उपदेशों को पहुँचाया जाए, क्योंकि पवित्र ग्रंथ गीता में हर समस्या का समाधान है और यह ग्रंथ कर्म करने का संदेश देता है। इस पवित्र ग्रंथ गीता के उपदेश धारण करने पर युवा पीढ़ी के चरित्र, आत्मविश्वास और करियर को आगे बढ़ाने का मार्ग मिलता है।

श्रीमद्भगवद्गीता जयंती महोत्सव के अंतर्गत राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा फरीदाबाद की जूनियर रेडक्रॉस, गाइड्स और सेंट जॉन एंबुलेंस ब्रिगेड ने हुड्डा कन्वेंशन हॉल में रंगोली सजाई। प्राचार्य रवींद्र कुमार मनचंदा ने कहा कि विद्यालय की बालिकाओं ने सामूहिक रूप से विद्यालय की प्राध्यापिका सरिता, शमीम जावेद, किरण, गीता, प्राध्यापक निखिल सहित अन्य अध्यापकों के सान्निध्य में श्रीमद्भगवद्गीता आधारित रंगोली कन्वेंशन हाल फरीदाबाद में सजाई और विद्यालय के विद्यार्थियों और अध्यापकों ने रँगोली बनाने में महत्त्वपूर्ण सहयोग किया। प्राचार्य ने कहा कि जिला स्तरीय श्रीमद्भगवद्गीता जयंती महोत्सव में विद्यालय की बालिकाओं ने एचएसवीपी कन्वेंशन हाल में रँगोली सजाने, पेंटिंग, श्लोक उच्चारण सहित अन्य गतिविधियों में भी प्रतिभागिता की। सराय ख्वाजा फरीदाबाद विद्यालय के विद्यार्थियों ने गीता-जयंती के अवसर पर श्लोकोच्चारण, निबंध-लेखन तथा संवाद द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षाओं को जीवन शैली में आत्मसात् करने का संदेश दिया।

प्राचार्य ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता से हमें कर्म करने की शिक्षा मिलती हैं। श्रीमद्भगवद्गीता जीवन दर्शन है तथा जीवन की सभी जटिलताओं और समस्याओं का समाधान इस में निहित हैं। श्रीमद्भगवद्गीता हमें आदर्श जीवन जीने के लिए मार्ग प्रशस्त करती है साथ ही श्रीमद्भगवद्गीता वर्तमान में धर्म से अधिक जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं, विदेशों में भी जनमानस का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही है। अतः हम सभी को दैनिक जीवन में निःस्वार्थ भाव में कर्म करते रहना चाहिए।

गीता में विज्ञान, विरासत और विकास का मार्ग निहित

योग गुरु स्वामी रामदेव ने कहा कि गीता स्थली कुरुक्षेत्र से पूरे विश्व को ज्ञान और संस्कार मिल रहा है। इस पवित्र ग्रंथ गीता में विरासत, विकास, ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का मार्ग मिलता है। इसलिए प्रत्येक मानव को बड़ी सोच रखकर कड़ी मेहनत से आगे बढ़ना चाहिए। इस पवित्र ग्रंथ गीता से वर्ष 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाने का मार्ग भी मिलेगा। इस देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए युवा पीढ़ी का अहम योगदान रहेगा। इसलिए युवा पीढ़ी को संस्कारवान् बनाने के लिए प्रदेश सरकार की तरफ से अंतरराष्ट्रीय गीता-महोत्सव जैसे बड़े कार्यक्रमों के साथ-साथ वैश्विक गीता पाठ जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी पावन धरा पर हजारों वर्ष पूर्व भगवान् श्री कृष्ण ने कर्म करने का संदेश दिया। आज युवा पीढ़ी को गीता के उपदेशों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए और अपने अंदर के ज्ञान को जागृत करना चाहिए।

हिंदी अध्यापिका
रामा विद्यालय सैक्टर-25, पंचकूला

जब शिक्षक का मन स्वस्थ होता है, तब शिक्षा खिल उठती है

नेहा सिंह

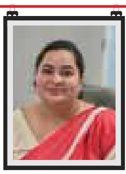

यह चर्चा क्यों आवश्यक है?

किसी छोटे शहर के अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालय में प्रवेश कीजिए। आपको वहाँ शिक्षक एक साथ कई भूमिकाएँ निभाते नज़र आएँगे- शिक्षक, मार्गदर्शक, सलाहकार और कभी-कभी कभी-कभी अभिभावक की भूमिका भी।

आज के अभिभावक अंग्रेज़ी दक्षता और परीक्षा परिणामों को अवसर और सफलता की सीढ़ी मानते हैं। लेकिन इन सुसज्जित वर्दियों, अनुशासित सभाओं और चमकते ब्लैक-बोर्डों के पीछे एक और कहानी चलती रहती है- उन शिक्षकों की, जो ऊँची अपेक्षाओं और सीमित भावनात्मक सहयोग के बीच जूझते हैं।

कई छोटे शहरों के विद्यालयों में स्टाफ़ रूम में हर समय हलचल रहती है- पाठ योजनाएँ, परीक्षा समय-सारिणी, अभिभावक बैठकें, प्रशासनिक कागज़ी कार्य। पर एक विषय ऐसा है जो अक्सर उन चर्चाओं में जगह नहीं बना पाता, वह है 'शिक्षकों का भावनात्मक स्वास्थ्य'।

एनसीईआरटी द्वारा 2024 में किए गए 'शिक्षक मानसिक कल्याण सर्वेक्षण' (71,635 शिक्षकों की भागीदारी, 28 राज्यों और 8 केंद्रशासित प्रदेशों से) ने इस तथ्य को और स्पष्ट किया कि शिक्षक का मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पूरी कक्षा के वातावरण को आकार देता है। छात्रों की भागीदारी, अनुशासन, परिणाम, और सृजनशीलता, सब पर इसका सीधा असर होता है।

जब शिक्षक थके, तनावग्रस्त या अवमूल्यित महसूस करते हैं, तो वह बेचैनी उनकी बातचीत और शिक्षण में झलकती है। लेकिन जब वे भावनात्मक रूप से संतुलित और समर्थ महसूस करते हैं, तो साधारण-सी कक्षा भी सुरक्षा, प्रेरणा और अपनत्व का आश्रय बन जाती है।

विडंबना यह है कि जहाँ एक ओर स्कूलों में बच्चों के लिए सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SEL) का प्रसार शुरू हो चुका है, वहीं शिक्षकों को स्वयं यह प्रशिक्षण या भावनात्मक सहारा बहुत कम मिलता है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे सहानुभूति, धैर्य और सकारात्मकता का उदाहरण बनें, जबकि उनके पास इन्हें बनाए रखने के साधन ही नहीं हैं।

इसलिए यह प्रश्न बेहद महत्त्वपूर्ण है- जब शिक्षक का भावनात्मक पात्र खाली है, तो हम प्रभावी शिक्षण की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं?

1. खोई हुई कड़ी- शिक्षक का आत्मिक स्वास्थ्य-

आज का शिक्षण केवल पाठ्य योजना बनाना या परीक्षा कॉपी जाँचना नहीं है, यह एक भावनात्मक श्रम है। इसमें संवेदनशीलता, सहनशीलता और संबंधों को साधने की कला चाहिए। छोटे शहरों में, जहाँ संसाधन सीमित हैं, शिक्षक अक्सर अनजाने में परामर्शदाता, अनुशासन अधिकारी और सामाजिक मार्गदर्शक- तीनों भूमिकाएँ निभाते हैं। पर इस बाहरी सजी-सँवरी तस्वीर के भीतर अक्सर थकान, दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ छिपा होता है।

एनसीईआरटी सर्वे के अनुसार, बड़ी संख्या में शिक्षक चिंता, थकावट और संस्थागत सहयोग की कमी की शिकायत करते हैं- जिससे उनके कक्षा संचालन और नौकरी से संतोष दोनों पर नकारात्मक असर पड़ता है।

विश्व स्तर पर हुए अध्ययनों से भी यही निष्कर्ष निकलता है-

- (Dreer et al., 2023) के 44 अध्ययनों की समीक्षा बताती है कि शिक्षक कल्याण और विद्यार्थी परिणामों के बीच गहरा संबंध है।
- (Chaudhry et al., 2023) के अनुसार, भारतीय शिक्षकों को कक्षा के भीतर ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक दायित्वों और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण भी मानसिक दबाव झेलना पड़ता है।
- कोविड-19 काल में कई शिक्षकों ने आपसी सहयोग समूह बनाकर भावनात्मक सहारा खोजने की कोशिश की, पर फिर भी अकेलेपन और तनाव की भावना हावी रही।
- सहरालाइन (Varanasi et al. ,2024) जैसी व्हाट्सऐप आधारित पहलें यह दिखाती हैं कि सीमित संसाधनों में भी शिक्षकों के लिए डिजिटल भावनात्मक समर्थन प्रणाली बनाई जा सकती है।

इन सभी अध्ययनों का सार यही है-

- शिक्षक कल्याण कोई अतिरिक्त सुविधा नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की नींव है।
- जब शिक्षक थक जाते हैं, तो कक्षा भी थकान से भर जाती है।

» छात्र उसका असर महसूस करते हैं- भागीदारी घटती है, संवाद कमजोर पड़ता है, और शिक्षण एक औपचारिक प्रक्रिया बनकर रह जाता है।

2. केवल विद्यार्थियों के लिए नहीं- शिक्षकों के लिए भी SEL जरूरी है

SEL क्या है?

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (Social-Emotional Learning) का अर्थ है- आत्म-जागरूकता, भावनाओं का नियंत्रण, सहानुभूति, स्वस्थ संबंध और ज़िम्मेदार निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना। यह केवल छात्रों के लिए नहीं, बल्कि शिक्षकों के लिए भी उतना ही आवश्यक है।

शिक्षकों के लिए SEL के लाभ-

- **भावनात्मक नियंत्रणः** आवेग में प्रतिक्रिया देने के बजाय ठहरकर सोचने की क्षमता विकसित होती है।
- **आत्म-जागरूकताः** तनाव या थकावट के संकेत पहचानकर उनका समय पर सामना किया जा सकता है।
- **संबंध-निर्माणः** सहकर्मियों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के साथ संवाद सहज होता है।
- **संतुलित निर्णयः** शिक्षक अपने कार्यभार पर सीमाएँ तय करना सीखते हैं।

सरल SEL अभ्यास-

- कक्षा के बीच एक गहरी साँस या कुछ क्षणों का माइंडफुल ब्रेक।
- दिन की शुरुआत या अंत में मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ? इस प्रकार का आत्म-प्रश्न।
- हर दिन एक उपलब्धि और एक चुनौती को डायरी में दर्ज करना।
- सहकर्मी समूहों में अनुभव साझा करना।
- जब शिक्षक SEL को अपनाते हैं, तो वे न केवल तनाव से बेहतर ढंग से निपटते हैं, बल्कि अपनी पहचान, प्रेरणा और पेशेवर स्थिरता भी मज़बूत करते हैं।

3. शिक्षक के संतुलन का असर विद्यार्थियों पर

- एक भावनात्मक रूप से संतुलित शिक्षक कक्षा में विश्वास और सुरक्षा का माहौल बनाता है।
- ऐसे वातावरण में विद्यार्थी अधिक निर्भीक होकर प्रश्न पूछते हैं, सृजनशील होते हैं, और मिल-जुलकर सीखते हैं।

उदाहरण के तौर पर-

यदि कोई छात्र समूह गतिविधि में नाराज़ होकर पेन पटक देता है, तो एक थका हुआ शिक्षक उसे डाँट सकता है, जिससे स्थिति बिगड़ सकती है। पर यदि शिक्षक SEL दृष्टिकोण रखता है, तो वह ठहरकर कहेगा- मैं देख रहा हूँ, तुम्हें यह बात परेशान कर रही है, बताओ क्या हुआ?

यही संवाद तनाव को कम करता है और विद्यार्थियों को सिखाता है कि विवादों को सम्मानपूर्वक सुलझाया जा सकता है। इस तरह शिक्षक केवल ज्ञान नहीं देते, वे भावनात्मक साक्षरता का पाठ भी पढ़ाते हैं।

4. स्कूल क्या कर सकते हैं?

यदि शिक्षक कल्याण इतना महत्त्वपूर्ण है, तो स्कूल इसे व्यावहारिक रूप से कैसे लागू करें?

(1) प्रशिक्षण और अभिसंस्करण में कल्याण को शामिल करें

- शिक्षकों के लिए SEL आधारित प्रशिक्षण वर्कशॉप आयोजित हों।
- आत्म-देखभाल, तनाव प्रबंधन और सहकर्मी कोचिंग पर सत्र रखे जाएँ।

(2) आंतरिक सहयोग संरचना बने-

- वरिष्ठ शिक्षकों को मार्गदर्शक बनाकर पीयर-कोचिंग सिस्टम तैयार हो।
- समय-समय पर 'वेलनेस डे' या टीम- बिल्डिंग सत्र आयोजित हों।
- स्थानीय परामर्शदाताओं या एनजीओ के साथ साझेदारी से मानसिक समर्थन मिल सके।

(3) नेतृत्व की भूमिका-

- स्कूल नेतृत्व कल्याण को संस्थागत प्राथमिकता बनाए।
- अनावश्यक प्रशासनिक बोझ घटाए।
- भावनात्मक चेक-इन या विचार-साझा सत्र के लिए समय तय करे।
- वार्षिक मूल्यांकन में शिक्षक संतोष और तनाव स्तर को भी शामिल करे।

(4) स्थानीय नवाचार और कम लागत वाले उपाय-

- सहरालाइन जैसी व्हाट्सऐप सहायता समूह।
- कृतज्ञता बोर्ड या इमोशनल कॉर्नर जहाँ शिक्षक अपने विचार साझा कर सकें।
- नो मीटिंग डे -जैसे छोटे प्रयोग।
- एक-दूसरे को धन्यवाद संदेश देने या सराहना करने की संस्कृति विकसित करना।

सच्चाई यह है कि इन पहलों में ज्यादातर धन की नहीं, नेतृत्व की संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। जब प्राचार्य और प्रबंधक शिक्षकों को पहले मनुष्य और फिर कर्मचारी के रूप में देखते हैं, तो विद्यालय जीवंत हो उठता है।

(5) शिक्षकों के लिए छोटे-छोटे व्यावहारिक उपाय

- हर कक्षा से पहले 60 सेकंड का श्वास व्यायाम।
- स्टाफ़ मीटिंग में 1 से 5 के स्केल पर दिन का मूड साझा करें।
- शनिवार को सप्ताह की एक सफलता, एक चुनौती और अगली योजना लिखें।
- समय प्रबंधन के लिए स्पष्ट सीमाएँ तय करें।
- किसी सहकर्मी से साप्ताहिक भावनात्मक संवाद रखें।
- दो मिनट का माइक्रो-मेडिटेशन।
- कृतज्ञता क्षण दिन के अंत में किसी एक व्यक्ति या घटना के प्रति आभार व्यक्त करें।
- छोटे कदमों से शुरुआत करने पर यही अभ्यास लचीलापन (Resilience) में बदल जाते हैं।

निष्कर्ष : साँस लेती हुई कक्षा

शिक्षक केवल पाठ्यक्रम का वाहक नहीं होता, वह कक्षा की आत्मा होता है। जब हम उसके मानसिक स्वास्थ्य में निवेश करते हैं, तो हम शिक्षा के भविष्य को सुदृढ़ करते हैं। एक समर्थ, सुने गए और सम्मानित शिक्षक केवल पढ़ाता नहीं- वह बच्चों के भीतर रोशनी जलाता है। वह सीखने की जगह को जीवंत बना देता है, जहाँ संवाद, संवेदना और सृजन साथ साँस लेते हैं। और जब SEL और शिक्षक कल्याण कक्षा की नींव बन जाते हैं, तब शिक्षा केवल प्रक्रिया नहीं रहती, वह जीवंत बन जाती है।

निदेशक
सेंट कबीर स्कूल, हिसार
और सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल, हिसार

डेटा-आधारित निर्णय एवं स्कूली शिक्षा की सीमाएँ

डॉ. प्रमोद कुमार

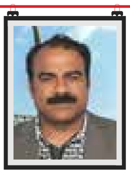

पिछले कुछ वर्षों में, डेटा-आधारित निर्णय निर्माण (Data-Driven Decision-Making) सरकारी विभागों, सरकारों की योजना और सुधार का नया मंत्र बन गया है। व्यापार से लेकर स्वास्थ्य सेवा और अब शिक्षा तक, हर जगह डैशबोर्ड, एनालिटिक्स और साक्ष्य-आधारित नीति (Evidence-Based Policy) की चर्चा है। इसका तात्पर्य है कि अब केवल आँकड़ों द्वारा कही गई बात ही सुनी और मानी जा रही है।

यह विचार अत्यंत आकर्षक है: तथ्यों पर आधारित निर्णय, मापने योग्य प्रगति, और सहज रणनीति जो अनुमान की जगह सटीकता लाती है। यह सुनने और देखने में अच्छा लगता है, परंतु सवाल यह है कि क्या केवल डेटा के आधार पर सीखने की दिशा तय की जा सकती है? क्योंकि स्कूल और कक्षा स्तर पर यह स्थिति बिल्कुल भिन्न होती है। शिक्षा कोई कार बनाने वाली फ़ैक्टरी की असेंबली लाइन नहीं है; यह तो विकास, भावना और रूपांतरण की मानवीय यात्रा है। कक्षा कोई प्रयोगशाला नहीं जहाँ हर विद्यार्थी को नियंत्रित किया जा सके, और न ही बच्चे कोई स्प्रेडशीट के आँकड़े हैं। जब हम केवल अंकों या आँकड़ों पर भरोसा करते हैं, तो हम शिक्षा की आत्मा खोने का जोखिम उठाते हैं, अर्थात् शिक्षक की संवेदना, उसका अनुभव और उसकी अवलोकन शक्ति हम गँवा देते हैं।

डेटा की अनिवार्यता-

सबसे पहले, यह मानना होगा कि वर्तमान युग में डेटा की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यह आज सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह हमें दृश्यता प्रदान करता है, क्योंकि विश्वसनीय जानकारी के बिना लिया गया निर्णय केवल अनुमान पर आधारित होता है। डेटा हमें सीखने की कमियाँ दिखाता है, उपस्थिति को ट्रैक करता है, संसाधनों के उपयोग को मापता है और परिणामों का मूल्यांकन करता है।

भारत जैसे विशाल शिक्षा तंत्र में, जहाँ 25 करोड़ बच्चे, 1 करोड़ से अधिक शिक्षक और 15 लाख विद्यालय हैं, वहाँ डेटा असमानता और अक्षमता को पहचानने का एक महत्त्वपूर्ण लेंस प्रदान करता है। इसी के आधार पर राज्यों के प्रदर्शन ग्रेडिंग सूचकांक (Performance Grading Index) बनते हैं, जो राज्यों की पारस्परिक स्थिति के आँकड़े देते हैं। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (NAS), UDISE+ और राज्य-स्तरीय आकलन जैसे उपकरण इसी उद्देश्य से बनाए गए हैं, ताकि नीति-निर्माण को साक्ष्य-आधारित बनाया जा सके।

डेटा का भ्रम और सीमाएँ

डेटा महत्त्वपूर्ण है और कई बार यह संस्थानों का धर्म बन जाता है, लेकिन वही डेटा, अगर आँख मूँदकर अपनाया जाए, तो भ्रम भी बन सकता है, जो भटकाव और अमानवीकरण का कारण बन सकता है। डेटा पर अंधभक्ति हमारे कार्य के लिए हानिकारक हो सकती है, क्योंकि यह हमेशा एक ज्वलंत प्रश्न रहा है: क्या डेटा जैसा दिखता है, वैसा है? क्या ये मापदंड अपनाते हुए डेटा धरातल से पूर्ण पारदर्शिता और सत्यता से आया है, या इसमें परिवर्तन (Variation) और वैधता (Validity) का प्रतिशत स्वीकार्य सीमा से अधिक है? अर्थात् क्या यह विश्वसनीय है?

कई राज्यों में शिक्षक स्वयं ही विभिन्न आकलन डेटा एकत्र करते हैं और बाद में उसकी विश्वसनीयता पर प्रश्न भी उठाते हैं। उन्हें मालूम होता है कि डेटा कैसे और किन परिस्थितियों में जुटाया गया है- अधूरी प्रविष्टियाँ, जल्दबाज़ी में भरे फ़ॉर्म, या सुधार दिखाने का दबाव। ऐसी आधारशिला पर गंभीर नीति-निर्माण कितना सही है, यह हमेशा एक गंभीर विषय रहा है।

क्या डेटा वही मापता है जो हम समझते हैं?

हो सकता है बच्चा पाठ न पढ़ रहा हो, क्योंकि उसे वह उबाऊ लग रहा है, जबकि हम सोचते हैं कि वह पढ़ नहीं सकता या उसमें पढ़ने की दक्षता नहीं है। इसी तरह, गणित की परीक्षा तब हो रही हो जब बच्चे भूखे हों या गर्मी से परेशान, और हम यह सोचें कि उनमें गणित की दक्षता नहीं है। संख्या हमेशा वास्तविक सीखने को नहीं दर्शाती; वह कुछ अन्य बिंदुओं के प्रभाव में हो सकती है।

विरोधाभासी डेटा

कई बार सजा, डर या दबाव के कारण डेटा इस प्रकार भर दिया जाता है जो केवल दिखावे का रूप होता है; धरातल पर कुछ नहीं होता। संख्या नैतिकता को नहीं समझती, इसलिए उसे विवेक की ज़रूरत होती है। ये गलतियाँ राज्यों में अक्सर देखने को मिलती हैं।

परिवर्तन में समय लगता है

शिक्षा में सुधारों और बदलावों का असर बहुत धीमी गति से होता है। ये सुधार, चाहे रचनात्मक लेखन या शिक्षकों की क्षमता निर्माण से संबंधित हों, वर्षों बाद फल देते हैं। यह कोई गेहूँ की फ़सल उगाना नहीं है जिसका पूरा चक्र 150 दिनों में समाप्त हो जाता है। यह तो चंदन का वृक्ष है जिसकी परिपक्वता और खुशबू के लिए कम से कम दो दशक चाहिए।

निगरानी का शिकार बनते शिक्षक और विद्यार्थी-

जब शिक्षक और बच्चे सर्वे के विषय बन जाते हैं, तो वे साझेदार नहीं रहते और न ही वे सहयोग करते हैं, क्योंकि वे निगरानी के शिकार बन जाते हैं। 20-30 व्हाट्सएप फ़ॉर्म भरने में समय जाता है और शिक्षण की ऊर्जा नहीं बचती।

सतही डेटा, गहरे कारण

एफ़एलएन आँकड़े जो बताते हैं कि बच्चे पिछड़ रहे हैं। यह परिणाम केवल शिक्षण पद्धति की कमी नहीं, यह भाषा, देर से आई पुस्तक आपूर्ति या कठिन अवधारणाओं से भी जुड़ा हो सकता है या बच्चे की कम हाजिरी और

अन्य कारणों से भी। डेटा हमेशा क्या हुआ है, क्या स्थिति है, इसका वर्णन करता है; लेकिन क्यों हुआ, इसके मामले में वह उतना समुचित नहीं है।

डेटा से पहचान नहीं, ठप्पा लगता है-

जब हम कहते हैं कि सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह (SEDG) के बच्चे कमज़ोर हैं, तो हम बच्चे को दोष देते हैं। सही वाक्य हैः हमारा तंत्र SEDG बच्चों के सीखने के स्तर को बढ़ाने में असफल है। यह नैतिक और विश्लेषणात्मक दोनों दृष्टि से सही है।

सब कुछ मापनीय नहीं है-

जब हम यह समझते हैं कि हम माप लेंगे, तो हम भूल जाते हैं कि सहानुभूति, नैतिक विवेक, सृजनशीलता और सहयोग का कोई माप नहीं है, जबकि शिक्षा की समुचित आत्मा यही है। बच्चे केवल विषय सीखने नहीं आते; वे सर्वांगीण विकास के लिए स्कूल आते हैं।

मापने से गुणवत्ता घटती है-

हम वही सिखाते हैं जो मापा जा सकता है। पढ़ने की आवृत्ति तो माप लेते हैं, परंतु विचार करना, विश्लेषण करना, राय बनाना, सीखना, आकलन करना या महसूस करना हम अक्सर माप/जाँच नहीं पाते हैं। जैसा कि देखने में आ रहा है, 100% अंक लेकर पास होने वाले विद्यार्थी के पास जीवनोपयोगी दक्षताओं का अभाव है, जबकि 80% अंक लेकर पास हुआ विद्यार्थी व्यवहार-कुशल है। जब माप शिक्षण को निर्देशित करता है, तो गुणवत्ता गिरती है, भले ही अंक बढ़ते जाएँ।

बीस वर्षों से हम जानते हैं कि अधिकांश शिक्षक एक साथ दो या तीन कक्षाएँ सँभालते हैं, और उनका 30-40% समय गैर-शैक्षणिक कार्यों में जाता है। फिर भी पाठ्यचर्या 1000 घंटे की कल्पना करती है, जो कि संभव नहीं दिख रहा है, और हम फिर भी माप रहे हैं तथा प्राप्त डेटा के अनुसार निर्णय कर रहे हैं। डेटा है, परंतु उसका उपयोग नहीं हो रहा है।

मानवीय निर्णय क्षमताः संतुलन का मंत्र-

ये बिंदु हमें डेटा की पेचीदगी और उसकी अक्षमता के बारे में अवगत करवाते हैं, तो अब सवाल यह है कि क्या हमें डेटा को अस्वीकार कर देना चाहिए? बिल्कुल नहीं। समाधान डेटा को संतुलित करना है, जिसमें अनुभव, अंतर्ज्ञान और संवेदना का समावेश हो।

शिक्षा में नेतृत्व संख्याओं का प्रबंधन नहीं, जीवन का पोषण है-

मानवीय निर्णय, जो अक्सर विवेक, अनुभव और संवेदना से लिया जाता है, वह डेटा नहीं कर सकता। शिक्षक का अनुभव, विद्यालय की स्मृति और अभिभावकों की दृष्टि, इन सबका मेल ही संपूर्ण निर्णय का आधार बनता है। अभी तक डेटा-आधारित निर्णय इससे वंचित हैं। हमारी ज़रूरत है कि हम एक समुचित संतुलित कार्यप्रणाली का गठन करें।

उदाहरण के लिए, यदि उपस्थिति डेटा कम दिखा रहा है, तो अधिकारी को केवल रिपोर्ट नहीं देखनी चाहिए, बल्कि स्कूल जाकर बात करनी चाहिए। माता-पिता से मिलकर उनकी घरेलू और आमदनी की स्थिति समझकर लचीली और समावेशी योजना बनानी चाहिए। क्योंकि डेटा लक्षण दिखाता है, संवाद समाधान लाता है।

एक संतुलित निर्णय-प्रक्रिया चार तत्त्वों पर आधारित होनी चाहिए			
	तत्त्व	उद्देश्य	डेटा से संबंध
1	डेटा (साक्ष्य)	तथ्य और प्रवृत्तियों पर आधारित योजना	दिशा देता है, निर्णय नहीं करता
2	अनुभव (बुद्धि)	वास्तविक स्थितियों की समझ	संख्या को कहानी में बदलता है
3	संवेदना (मानवीय स्पर्श)	नीतियों को मानवीय बनाना	समावेशिता और करुणा जोड़ता है
4	मूल्यांकन (चिंतन)	निरंतर सुधार की प्रेरणा	सीखने को जीवंत बनाता है

डेटा से विवेक तक की पहुँच ही असली मूल मंत्र है, क्योंकि अच्छा डेटा कंपास की तरह है जो दिशा दिखाता है, मंज़िल नहीं। यह मार्गदर्शक होना चाहिए, भगवान नहीं। इसका उपयोग भी इसी दृष्टिकोण से होना चाहिए।

नेतृत्व की असली कला है- संख्या के पीछे छिपे अर्थ को समझना-

डेटा को साझा करते समय और विश्लेषण करते समय, हमें हमेशा स्वयं से, साथियों से तथा हितधारकों से पूछना चाहिए कि-

» यह संख्या वास्तव में क्या कहती है?
» इसके पीछे कौन-सी कहानी छिपी है?
» हम इसका उपयोग नैतिक और मानवीय ढंग से कैसे कर सकते हैं?

जब शिक्षक, अभिभावक और अधिकारी मिलकर डेटा की व्याख्या करते हैं, तो यह सूक्ष्मदर्शी नहीं, दर्पण बन जाता है। फिर किसी विशेषज्ञ की आवश्यकता नहीं रहती, और यह सामान्य हितधारक की समझ की चीज़ बन जाती है।

दिल वाला डेटा-

अंततः डेटा-आधारित निर्णय निर्माण को डेटा-सूचित मानवीय निर्णय (Data-Informed Human Judgement) में बदलना होगा। महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि संख्याएँ क्या हैं या क्या बताती हैं, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक समाधान क्या बता रहे हैं।

डेटा हमें रोशनी दे, पर निर्णय हमारा दिल ले-

शिक्षा की ताकत उसकी स्प्रेडशीट में नहीं, उसकी संवेदना में है। एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्तमान में 80% से अधिक इंजीनियरिंग स्नातकों के पास वह दक्षता नहीं है जिसके आधार पर वे अच्छे अंक लेकर स्नातक बने हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि शिक्षा कागज़ पर लिखित मार्कशीट के अतिरिक्त वस्तु है।

हर निर्णय में यह याद रहे कि हर संख्या के पीछे एक बच्चा है, एक शिक्षक है, एक सपना है, क्योंकि शिक्षा जीवन को मापने की नहीं, जीवन बनाने की प्रक्रिया है।

राज्य कार्यक्रम अधिकारी (राष्ट्रीय शिक्षा नीति)
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

गणित से मत डरिए

मेघा गुप्ता

क्या आपने कभी सोचा है कि हम गणित से इतना क्यों डरते हैं? जैसे ही गणित का नाम लिया जाता है, कई बच्चों के चेहरे उतर जाते हैं। लगता है मानो यह कोई बहुत कठिन, पहाड़ जैसा विषय है। लेकिन सच तो यह है कि गणित बिल्कुल भी कठिन नहीं, बल्कि बेहद मज़ेदार और उपयोगी विषय है। यह तो वह साथी है, जो हमारे जीवन के हर मोड़ पर हमारे काम आता है।

इस लेख में हम जानेंगे कि गणित को कठिन क्यों नहीं समझना चाहिए, गणित हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में किस तरह शामिल है और शिक्षक गणित को कैसे रोचक व दिलचस्प बना सकते हैं, ताकि विद्यार्थियों में गणित के प्रति उत्साह और आत्मविश्वास बढ़े।

गणित हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा-

हम चाहे बाजार जाएँ या घर पर चाय बनाएँ, चाहे मोबाइल का समय देखें या दोस्तों के साथ खेल का स्कोर निकालें-हर जगह गणित हमारे साथ चलता है। सोचिए, दुकान से चीज़ें खरीदते समय पैसों का हिसाब कौन करवाता है? -गणित। टिफिन में बचे पराठों को बराबर हिस्सों में बाँटने में कौन मदद करता है? -गणित। घड़ी देखकर समय समझने में कौन साथी बनता है? -गणित। मोबाइल का पासकोड डालना, खेल में अंक गिनना, यहाँ तक कि जन्मदिन गिनने तक में भी गणित है। अगर गणित को थोड़ा ध्यान से देखो, तो पता चलेगा कि यह कोई डरावना विषय नहीं, बल्कि हमारी रोजमर्रा की जीवन-शैली का मूल आधार है। गणित हमारे दिमाग को तेज़ बनाता है, तार्किक सोच विकसित करता है और समस्याओं को हल करने की क्षमता बढ़ाता है।

गणित से डर क्यों लगता है?

गणित से डर लगना बहुत सामान्य बात है। कई बच्चे यह कहते हुए मिल जाते हैं- गणित तो मेरा सबसे कमजोर विषय है। मुझे समझ ही नहीं आता, गणित देखते ही दिमाग भटकने लगता है। लेकिन यह डर अचानक नहीं आता, बल्कि कई छोटी-छोटी वजहों से धीरे-धीरे मन में जगह बना लेता है। सबसे **पहली** वजह है- अवधारणाओं की मूलभूत समझ की कमी। अक्सर विद्यार्थी केवल प्रश्न हल करने की विधि याद कर लेते हैं, पर उनके पीछे का तर्क नहीं समझते। जब एक-सा सवाल नहीं मिलता, तो घबराहट हो जाती है। **दूसरी** बड़ी वजह है- गणित को रटने की प्रवृत्ति। रटकर किया गया गणित परीक्षा तक ही चलता है और थोड़ी कठिनाई आते ही टूट जाता है। **तीसरी** वजह है- गलती करने का डर। बच्चों को लगता है कि अगर गलत जवाब आया तो उन्हें डाँट पड़ेगी या वे 'कमज़ोर' माने जाएँगे। यह डर उनकी सोच को दबा देता है। **चौथी** वजह है- स्वयं को गणित में कमज़ोर मान लेना। यह मानसिकता धीरे-धीरे आत्मविश्वास कम कर देती है और बच्चा कोशिश करने से भी डरने लगता है। **पाँचवीं** वजह है- रोचक गतिविधियों का अभाव। यदि गणित केवल किताब के सवाल हल करने तक सीमित रह जाए, तो यह सचमुच उबाऊ लग सकता है।

लेकिन अच्छी बात यह है कि यह डर स्थायी नहीं होता। सही मार्गदर्शन, नियमित अभ्यास, खेलों और गतिविधियों के माध्यम से सीखने, और सकारात्मक माहौल के साथ गणित दुनिया का सबसे रोमांचक और मज़ेदार विषय बन सकता है। बस जरूरत है-सही तरीके से समझने और धैर्य के साथ आगे बढ़ने की।

गणित को मज़ेदार बनाने के तरीके (विद्यार्थियों के लिए)

1. गणित को खेल की तरह सीखो-

गणित को खेल की तरह सीखने से पढ़ाई मज़ेदार और आसान हो जाती है। ताश के पत्तों से जोड़-घटाव का अभ्यास, पासा फेंककर संभावना (Probability) समझना, या ओरिगामी की मदद से ज्यामिति सीखना-ये सभी तरीके बच्चों की समझ बढ़ाते हैं। खेलों से सीखी गई बातें जल्दी याद रहती हैं और गणित बोझ नहीं लगता।

2. छोटी-छोटी शंकाएँ तुरंत दूर करो-

कभी भी कोई भी बात समझ न आए तो शिक्षक, माता-पिता या दोस्तों से पूछें। देर न करें।

3. हर दिन थोड़ा अभ्यास करें-

गणित एक ऐसा विषय है जो नियमित अभ्यास से मज़बूत होता है।

4. प्रश्न हल करते समय घबराएँ नहीं-

अगर गलती हो जाए तो घबराएँ नहीं; बल्कि सोचें कि गलती कहाँ हुई है। यही असली सीख है।

5. वास्तविक जीवन में गणित का उपयोग करें-

जैसे-किराने की दुकान का बिल जोड़ना, समय का हिसाब रखना, दूरी मापना, पैसे गिनना आदि। जब आप वास्तविक जीवन में गणित का उपयोग करेंगे, तो गणित आपका दोस्त बन जाएगा।

शिक्षकों के लिए कुछ प्रभावी सुझाव-

गणित के प्रति बच्चों की रुचि तभी बढ़ती है जब कक्षा में सीखना मज़ेदार, सरल और गतिविधि-आधारित हो। निम्न सुझाव गणित शिक्षकों के लिए बहुत उपयोगी हो सकते हैं-

1. गणित को वास्तविक जीवन से जोड़ें

गणित को वास्तविक जीवन से जोड़ना विद्यार्थियों की समझ और रुचि दोनों को गहराई से प्रभावित करता है। जब बच्चे यह महसूस करते हैं कि गणित केवल किताबों तक सीमित नहीं, बल्कि उनके रोज़मर्रा के जीवन में लगातार काम आता है, तो वे इसे उत्साह से सीखने लगते हैं। उदाहरण के लिए- बाज़ार में मिलने वाली छूट, लाभ-हानि, कीमतों की तुलना जैसे उदाहरण बच्चों को तुरंत समझ आते हैं। कक्षा की दीवारों, दरवाज़ों, खिड़कियों और डेस्क की मदद से आकृतियाँ व ज्यामिति आसानी से स्पष्ट हो जाती है। भिन्नों (Fractions) को पिज़्ज़ा,

रोटी या चॉकलेट बाँटने से समझाना बच्चों के लिए और भी मज़ेदार हो जाता है। जब गणित वास्तविक जीवन में दिखाई देने लगता है, तो यह डर नहीं, बल्कि समझ और आनंद का विषय बन जाता है।

2. गतिविधि आधारित शिक्षा अपनाएँ

गतिविधि आधारित शिक्षा अपनाने से गणित बच्चों के लिए बोझ नहीं, बल्कि आनंददायक अनुभव बन जाता है। जब शिक्षक 'डाइस गेम', 'मैथ बिंगो', 'नंबर कार्ड' जैसे सरल और रोचक खेलों का उपयोग करते हैं, तो बच्चे खेल-खेल में जोड़, घटाव, गुणा, भाग तथा पैटर्न पहचानना सीख जाते हैं। समूह गतिविधियाँ भी सीखने को सहयोगी और जीवंत बनाती हैं, जहाँ विद्यार्थी मिलकर समस्याएँ हल करते हैं, विचार साझा करते हैं और एक-दूसरे से सीखते हैं। इसी तरह प्रयोगात्मक शिक्षण, जैसे ब्लॉक्स, वस्तुओं, मॉडेल या चार्ट का उपयोग छात्रों की अवधारणात्मक समझ को गहरा करता है और उन्हें गणित को वास्तविक जीवन से जोड़ने में मदद करता है।

3. तकनीक का उपयोग करें

आज गणित सीखने में तकनीक एक महत्त्वपूर्ण सहायक बन गई है। इंटरैक्टिव वीडियो, विभिन्न मैथ्स ऐप, वर्चुअल लैब्स और ऑनलाइन क्विज़ जैसे डिजिटल साधन बच्चों को कठिन अवधारणाएँ भी आसान तरीके से समझने में मदद करते हैं। इन टूल्स के माध्यम से विद्यार्थी खेल-खेल में अभ्यास करते हैं, तुरंत फीडबैक पाते हैं और अपनी कमज़ोरियों को पहचानकर सुधार भी कर लेते हैं। तकनीक सीखने को रोचक, तेज और प्रभावी बनाती है, जिससे गणित के प्रति डर कम होकर रुचि बढ़ने लगती है।

4. गलतियों को 'अवसर' की तरह अपनाएँ-

बच्चे अक्सर इसलिए गणित से घबराते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि गलत उत्तर देने पर शिक्षक नाराज़ होंगे या उन्हें डाँट पड़ सकती है। यह डर उनकी सीखने की इच्छा और आत्मविश्वास दोनों को कम कर देता है। यदि शिक्षक यह समझाएँ कि गलतियाँ करना सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया है और हर गलती हमें सही उत्तर तक पहुँचने का रास्ता दिखाती है, तो बच्चों का तनाव काफी घट जाता है। कक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए जहाँ बच्चे निडर होकर प्रश्न पूछ सकें, प्रयोग कर सकें और अपनी सोच खुलकर व्यक्त कर सकें। जब 'गलती सीखने का अवसर' बन जाती है, तभी गणित सच में समझ आने लगता है।

5. गणितीय अवधारणाओं को दृश्य रूप में समझाएँ-

गणितीय अवधारणाओं को दृश्य रूप में प्रस्तुत करना बच्चों की सीखने की क्षमता को कई गुना बढ़ा देता है। जब शिक्षक चित्रों, मॉडल, चार्ट, ब्लॉक्स या अंकों की पट्टियों का उपयोग करते हैं, तो कठिन लगने वाले सिद्धांत आसानी से समझ में आने लगते हैं। बीजगणित को पैटर्न ब्लॉक्स से दिखाना, ज्यामिति को त्रि-आयामी आकृतियों के माध्यम से समझाना या आँकड़ों को ग्राफ की मदद से सिखाना-ये सभी तरीके बच्चों की कल्पना

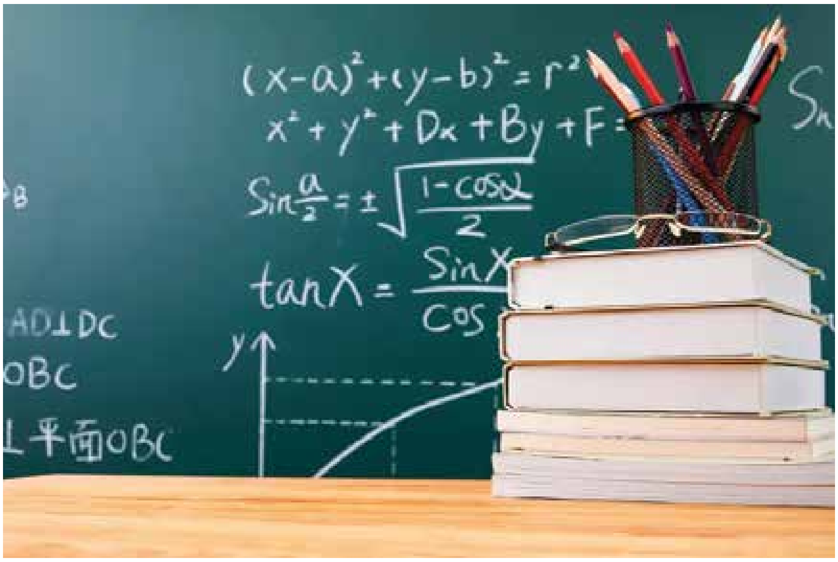

और समझ को सक्रिय करते हैं। ऐसा दृश्य शिक्षण (Visual Learning) न केवल गणित को रोचक बनाता है, बल्कि अवधारणाओं को लंबे समय तक याद भी रखता है।

6. विद्यार्थियों को 'क्यों?' पूछने के लिए प्रेरित करें-

गणित रटने का नहीं, बल्कि गहराई से समझने का विषय है। जब शिक्षक बच्चों से यह पूछते हैं -ऐसा क्यों हुआ?, तुमने यह तरीका क्यों चुना?, क्या कोई दूसरा समाधान भी हो सकता है? तो बच्चे केवल उत्तर याद करने के बजाय सोचने की प्रक्रिया सीखते हैं। यह अभ्यास उनकी तार्किक क्षमता को मज़बूत करता है और वे समस्याओं का विश्लेषण करना सीखते हैं। यही विश्लेषणात्मक सोच गणित की असली शक्ति है, जो आगे चलकर जीवन के हर क्षेत्र में निर्णय लेने, समस्या सुलझाने और नए विचार विकसित करने में मदद करती है।

7. छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करें-

पूरा अध्याय एक ही दिन में पूरा करने का दबाव बच्चों को घबराहट और तनाव में डाल देता है। इसलिए अध्याय को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटकर समझाना अधिक प्रभावी होता है। शिक्षक यदि दैनिक छोटे लक्ष्य तय करें- जैसे आज सिर्फ जोड़ सीखें, आज केवल भिन्नों को समझें, तो विद्यार्थी विषय को आसानी से पकड़ पाते हैं। इससे सीखने की प्रक्रिया सरल बनती है, बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे मानसिक रूप से भी हल्का महसूस करते हैं। धीरे-धीरे पूरा अध्याय सहजता से समझ में आ जाता है।

8. सकारात्मक माहौल बनाएँ-

सकारात्मक माहौल गणित सीखने की नींव मजबूत करता है। यदि शिक्षक मुस्कुराते हुए, उत्साह और धैर्य के साथ पढ़ाएँ, तो बच्चे भी ऊर्जा और आत्मविश्वास के साथ भाग लेते हैं। ऐसी कक्षा जहाँ विद्यार्थी बिना झिझक प्रश्न पूछ सकें, अपनी गलतियों पर खुलकर बात कर सकें और नए तरीके आज़माने की स्वतंत्रता हो, वही सच में सीखने का सर्वोत्तम वातावरण बनती है। सकारात्मक माहौल न सिर्फ पढ़ाई को आसान बनाता है, बल्कि बच्चों में गणित के प्रति स्वाभाविक रुचि भी विकसित करता है।

गणित-भविष्य की कुंजी-

गणित केवल अंकों का विषय नहीं, बल्कि सोचने और जीवन को व्यवस्थित करने का तरीका है। यह हमें योजनाबद्ध ढंग से कार्य करना, जटिल समस्याओं का समाधान ढूँढना, सही निर्णय लेना, तर्क के आधार पर निष्कर्ष निकालना और धैर्य व एकाग्रता बनाए रखना सिखाता है। यही कारण है कि इंजीनियरिंग, चिकित्सा, वैज्ञानिक शोध, वास्तुकला, बैंकिंग, डेटा विश्लेषण, डिजाइनिंग-हर क्षेत्र में गणित की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। गणित केवल परीक्षाएँ पास करने का साधन नहीं, बल्कि भविष्य की मज़बूत नींव है, जो जीवन के हर छोटे-बड़े निर्णय में हमारी मदद करता है।

गणित को अपना दोस्त बनाओ-

प्रिय विद्यार्थियो, गणित कोई मुश्किल पहेली नहीं है बल्कि यह तो वह साथी है जो हमारे जीवन को आसान बनाता है, हमारे विचारों को मज़बूत करता है और हमें समझदार बनाता है। आप इसे जितना समझेंगे, उतना ही यह आपको पसंद आएगा। डरकर इससे दूर मत भागो, बल्कि इसे अपनाओ, सीखो, खेलो और समझो। और प्रिय शिक्षको! आप ही वह पुल हैं जो बच्चों को गणित के भय से निकालकर आनंद की ओर ले जाते हैं। आपकी पद्धति, आपका व्यवहार, आपकी गतिविधियाँ-सब मिलकर गणित को बच्चों का पसंदीदा विषय बना सकती हैं।

पीजीटी गणित
राआवमा विद्यालय चिकन
ज़िला-पंचकूला, हरियाणा

प्रकृति-प्रेम और शिक्षा-सेवा का समन्वय

शिक्षक शमशेर कौशिक का प्रेरक अभियान

जितेंद्र कुमार

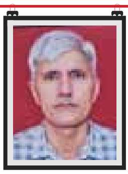

हरियाणा के शिक्षा जगत् में कुछ ऐसे नाम उभरकर सामने आते हैं, जो विद्यालय की चारदीवारी से परे जाकर समाज और प्रकृति -दोनों के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी को बड़े समर्पण के साथ निभाते हैं। ऐसे ही नामों में एक प्रेरक, अनुकरणीय और कर्मयोगी व्यक्तित्व है-हिंदी प्रवक्ता श्री शमशेर सिंह कौशिक का, जिन्होंने शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, समाज-सेवा और स्काउटिंग -चारों क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ते हुए अनेक लोगों को नई दिशा दी है।

वर्ष-2010 में हरियाणा शिक्षा विभाग में हिंदी अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए और बाद में 2016 में पीजीटी हिंदी के पद पर पदोन्नत हुए। श्री कौशिक आज भी उतने ही विनम्र, उत्साही और विद्यार्थियों के प्रति समर्पित हैं, जितने अपने प्रथम दिवस पर थे। उनका मानना है कि शिक्षा केवल विषयों का बोध नहीं, बल्कि चरित्र, संवेदना और सामाजिक चेतना का विकास है। यही कारण है कि वे छात्रों में अध्ययन के साथ-साथ देशभक्ति, अनुशासन, सामाजिक सहभागिता और प्रकृति-प्रेम के गुणों का बीजारोपण करते हैं।

वृक्षरोपण को जीवन-धर्म बनाने वाला शिक्षक-

श्री शमशेर कौशिक का वृक्ष-प्रेम किसी क्षणिक उत्साह का परिणाम नहीं, बल्कि दीर्घकालिक संकल्प का रूप है। उनका नियमित पौधारोपण अभियान वर्ष 2012 में शुरू हुआ, जिसे उन्होंने अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बना लिया। वे अपने जन्मदिन, परिवार के सदस्यों के जन्मदिन और विद्यालय के विशेष अवसरों पर स्वयं पौधे लगाते हैं तथा सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों को भी यह प्रेरणा देते हैं कि हर उत्सव एक पेड़ के नाम।

आज तक वे 1000 से अधिक पौधों को पेड़ का रूप दे चुके हैं। शिक्षक के रूप में यह उपलब्धि इसलिए भी विशिष्ट है, क्योंकि वे केवल पौधा लगाकर अपनी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं मानते; बल्कि उस पौधे की परवरिश तब तक करते हैं, जब तक वह अपने 'पैरों पर खड़ा' न हो जाए। यही कारण है कि विद्यालयों में उनके नेतृत्व में संचालित पौधारोपण केवल औपचारिक गतिविधि नहीं, बल्कि एक जीवंत आंदोलन है।

ढिगाना विद्यालय में नया जीवन-संचार-

वर्तमान में श्री कौशिक राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ढिगाना (जिला जींद) में कार्यरत हैं। जब 23 जनवरी 2023 को उन्होंने इस विद्यालय में पद-भार ग्रहण किया, तब पूरे विद्यालय प्रांगण में केवल 18 वृक्ष थे। उनके अथक प्रयासों, विद्यालय-परिवार के सहयोग और विद्यार्थियों के उत्साह के कारण आज यह संख्या 200 के निकट पहुँच चुकी है। तीन त्रिवेणी (पीपल, बरगद, नीम) भी प्रांगण को विशेष आध्यात्मिक गरिमा प्रदान कर रही हैं।

विद्यालय के प्राचार्य डॉ. कुलबीर सिंह, शिक्षकों और बच्चों के सामूहिक सहयोग ने इस हरे-भरे परिवर्तन को गति दी। इन प्रयासों का परिणाम तब सामने आया जब मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यकरण योजना के तहत 2023-24 में उनका विद्यालय जुलाना खंड में प्रथम स्थान प्राप्त कर सका। यह उपलब्धि केवल विद्यालय की सुंदरता का प्रतिफल नहीं, बल्कि उस सकारात्मक ऊर्जा का प्रमाण है जिसे प्रकृति स्वयं उत्पन्न करती है। श्री कौशिक के अनुसार हरा-भरा वातावरण बच्चों की सोच को सकारात्मक बनाता है और सकारात्मक सोच से ही विद्यार्थी उत्कृष्टता की ओर बढ़ते हैं।

हर विद्यालय में हरियाली का एक-सा संकल्प-

ढिगाना से पहले वे पाँच अन्य विद्यालयों में सेवा दे चुके हैं। प्रत्येक विद्यालय में उन्होंने पौधारोपण और हरित-अभियान को ही अपनी प्राथमिकता में रखा। उनके अनुसार- शिक्षक का स्थानांतरण विद्यालय बदलता है, परंतु संकल्प नहीं। मेरा उद्देश्य हर विद्यालय को सुंदर, स्वच्छ और हरा-भरा बनाना है।

राजकीय उच्च विद्यालय बहवलपुर, जींद और उनका वर्तमान विद्यालय ढिगाना- दोनों में उनकी हरित यात्रा विशेष रूप से सफल रही है, जहाँ विद्यार्थियों ने स्वयं इस अभियान को अपनी जिम्मेदारी माना और विद्यालय-परिसर को एक छोटे से बगीचे के रूप में विकसित किया।

ज्ञान, अनुशासन और पर्यावरण- तीनों का सम्मिलित शिक्षक-

श्री कौशिक केवल पर्यावरण-प्रेमी ही नहीं, बल्कि एक उत्कृष्ट शिक्षक भी हैं। हर वर्ष उनके विद्यार्थियों का परिणाम उत्कृष्ट श्रेणी में आता है, जो उनके अध्यापन कौशल की परिपक्वता को प्रमाणित करता है। वे छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ मानवीय मूल्य, कार्य संस्कृति, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रप्रेम भी सिखाते हैं। यही कारण है कि वे बच्चों के बीच एक शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरणा-स्रोत के रूप में पहचाने जाते हैं।

स्काउटिंग में उल्लेखनीय योगदान-

श्री शमशेर कौशिक भारत स्काउट एंड गाइड के हिमालय वुड बैज और प्री एएलटी होल्डर हैं। वे स्काउट गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को प्रकृति, अनुशासन, नेतृत्व और सेवाभाव का वास्तविक अनुभव कराते हैं। वे अब तक छह छात्रों को राष्ट्रपति टेस्टिंग कैंप तक ले जा चुके हैं। शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित तीन अंतरराष्ट्रीय कैंप तथा जंबूरी मैसूर (2017) और तिरुचिरापल्ली (2025) में भी भाग ले चुके हैं।

समाज-सेवा में भी अग्रणी-

एक प्रकृति-प्रेमी और शिक्षाविद् होने के साथ-साथ वे 29 बार रक्तदान कर चुके हैं। उनका मानना है- सेवाभाव और जीवनदान, दोनों ही प्रकृति के प्रति प्रेम जितने ही पवित्र कार्य हैं।

सम्मान और सराहना-

श्री कौशिक के निरंतर प्रयासों और समाजोन्मुख कार्यों को अनेक स्तरों पर सराहा गया है। उन्हें उपायुक्त जींद श्री अमित खत्री (2017) और श्री आदित्य दहिया (2020) द्वारा सम्मानित किया गया; खंड शिक्षा अधिकारियों-श्रीमती परिणीता मधोक, श्री राजबीर सिंह और श्री सुशील जैन ने भी उनके योगदान की प्रशंसा की है। इसी प्रकार डीपीसी श्री सुभाष वर्मा, डिप्टी डीईओ श्री राजबीर सिंह, डीईईओ श्री दलजीत सिंह तथा डीईओ श्रीमती सुनीता रुहिल भी उनकी कार्यनिष्ठा को सराह चुके हैं। ग्राम खरक रामजी विद्यालय प्राचार्य श्री सुभाष सिंहरोहा ने भी उन्हें सम्मानित किया है। साथ ही ग्राम खरक रामजी की सरपंच श्रीमती कविता और ग्राम ढिगाना के सरपंच श्री विनोद सिंहरोहा ने भी समाज और विद्यालय के हित में किए गए उनके प्रयासों को विशेष रूप से सम्मानित किया है। उनकी यह व्यापक सराहना उनके समर्पण, विनम्रता और हरित चेतना की गहराई का प्रमाण है।

डिजिटल माध्यम से हरित-संदेश का प्रसार-

उनका यूट्यूब चैनल 'ग्रीन हरियाणा-क्लीन हरियाणा'। प्रकृति-संरक्षण, पौधारोपण, पर्यावरण-शिक्षा और स्वच्छता-अभियान का मजबूत माध्यम बन चुका है। इस मंच के जरिए वे पूरे देश को संदेश दे रहे हैं कि पर्यावरण की रक्षा सरकारी योजनाओं का विषय ही नहीं, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है।

विद्यालय-परिसर से लेकर समाज-परिसर तक-

केवल पौधारोपण ही नहीं, वे विद्यार्थियों को अन्य जीवन-कौशल भी सिखाते हैं। अब तक वे 15 बच्चों को निःशुल्क तैराकी सिखा चुके हैं। यह उनकी उस विचारधारा का परिचायक है कि शिक्षा का अर्थ जीवन की व्यापक तैयारी है- केवल परीक्षा केंद्रित ज्ञान नहीं।

प्रकृति ही ईश्वर-उनका जीवनदर्शन-

श्री कौशिक कहते हैं कि प्रकृति ही भगवान है। यदि हम प्रकृति को सँवार रहे हैं तो हम उसी दिव्य कर्तव्य का पालन कर रहे हैं- जो परमात्मा ने हमें सौंपा है। यह विचार ही उनकी हरित-यात्रा का मूल है। वे बच्चों को प्रकृति से प्रत्यक्ष रूप में जोड़ने का निरंतर प्रयास करते हैं- कभी विद्यालय के बगीचे में, कभी स्काउट शिविरों में, और कभी अपने चैनल के माध्यम से।

एक शिक्षक, एक संवेदना, एक संदेश-

श्री शमशेर कौशिक की कहानी केवल एक शिक्षक की उपलब्धि नहीं, बल्कि संकल्प, सहयोग और सतत प्रयास की मिसाल है। उनकी यह यात्रा हमें बताती है कि एक शिक्षक विद्यालय को बदल सकता है। एक पौधा वातावरण को बदल सकता है और एक व्यक्ति समाज में परिवर्तन की शुरुआत कर सकता है। ज्ञान, सेवा, प्रकृति और समाज- इन चारों स्तंभों पर टिका उनका जीवन हर उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा है जो कुछ अलग करने का संकल्प रखता है। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय घोंघड़िया के प्राचार्य श्री जितेंद्र कुमार के शब्दों में- श्री शमशेर कौशिक जिस भी विद्यालय में कार्य करते हैं, वहाँ शिक्षा और पर्यावरण- दोनों को एक नए आयाम तक पहुँचा देते हैं।

आज जब पर्यावरण संकट और सामाजिक दायित्व, दोनों ही राष्ट्र के सामने महत्त्वपूर्ण प्रश्न बने हुए हैं, ऐसे में श्री कौशिक जैसे शिक्षक आने वाली पीढ़ियों के लिए आशा की लौ हैं।

प्राचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय घोंघड़िया
जिला जींद, हरियाणा

बच्चों के लिए बेहद प्रेरक साहित्य

सत्यवीर नाहड़िया

किसी ने ठीक कहा है कि शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता। यदि शिक्षक साहित्य, कला एवं संस्कृति से जुड़ा हो, तो वह सेवानिवृत्ति के बाद भी विद्यालय संस्कृति और विद्यार्थियों से अपनी रचनात्मकता के माध्यम से निरंतर जुड़ा रहता है। माध्यमिक शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त कला अध्यापक डॉ. ओमप्रकाश कादयान इसी दृष्टांत के जीवंत उदाहरण हैं। साहित्य और कला के क्षेत्र में उनके योगदान का परिचय किसी परिचय के मोहताज नहीं है। डॉ. कादयान न केवल एक उत्कृष्ट शिक्षक रहे हैं, बल्कि साहित्य सृजन, चित्रांकन, छायांकन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के संचालन में भी उनकी महारत प्रसिद्ध है।

डॉ. कादयान ने अपने साहित्यिक योगदान के लिए अकादमी द्वारा पंडित लख्मीचंद सम्मान और शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य शिक्षक पुरस्कार प्राप्त किया है। यह सम्मान उनके ज्ञान, सृजनशीलता और कक्षा में छात्रों के प्रति उनके समर्पण का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। पिछले तीन दशकों से वे साहित्य, कला और संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय हैं। उनके लेखन में बाल-साहित्य, निबंध, कहानियाँ, कविताएँ और शैक्षिक आलेख शामिल हैं। इसके साथ ही छायांकन और चित्रांकन में भी उनका योगदान उल्लेखनीय रहा है। उनके अनेक चित्रों और रचनाओं की प्रदर्शनी प्रदेश और देशभर में आयोजित हो चुकी हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनका रचनात्मक दायरा बहुत व्यापक है।

बेरी में जन्मे और हिसार में रह रहे डॉ. कादयान ने फतेहाबाद के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मोहम्मद रोही स्कूल से कला अध्यापक के रूप में सेवानिवृत्ति प्राप्त की। लेकिन उनके रचनात्मक कार्य केवल विद्यालय की सीमाओं तक सीमित नहीं रहे। उन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद बाल-साहित्य पर विशेष ध्यान दिया और तीन बाल कविता संग्रह- 'अगर हम पंछी होते', 'सर उठा कर चलना सीखो', तथा 'धरती को हम स्वर्ग बनाएँगे' प्रकाशित कर नये आयाम स्थापित किए। इन संग्रहों में न केवल बालक की जिज्ञासा और उत्साह झलकता है, बल्कि जीवन के प्रति आशावाद और सकारात्मक दृष्टिकोण भी मुखरित होता है।

इन कविताओं की विशेषता यह है कि वे बच्चों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं और भावनाओं को समझते हुए लिखी गई हैं। कहानियाँ, कविताएँ और चित्र सभी मिलकर बच्चों में रचनात्मक सोच, संवेदनशीलता और नैतिक मूल्य विकसित करने का कार्य करते हैं। डॉ. कादयान बताते हैं कि ये कविताएँ कई वर्षों पहले लिखी गई थीं, लेकिन समय की कमी के कारण उन्हें प्रकाशन नहीं मिल पाया। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने इसे प्राथमिकता दी और बच्चों तक अपनी रचनाओं को पहुँचाया।

डॉ. कादयान का मानना है कि हर बच्चे में प्रतिभा होती है, और शिक्षक ही वह मार्गदर्शक होता है जो इस प्रतिभा को पहचानकर उसे प्रोत्साहित कर सकता है। इसलिए विद्यालय और शिक्षक का दायित्व है कि वे बच्चों की प्रतिभाओं को खोजें, उन्हें दिशा दें और समाज के लिए जिम्मेदार नागरिक बनाने में योगदान दें।

उनकी बाल कविताओं में न केवल शब्दों की मधुरता है, बल्कि उनमें जीवन की सच्चाइयों, प्रकृति-प्रेम, सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों की झलक भी मिलती है। 'अगर हम पंछी होते' में स्वतंत्रता और उड़ान की भावना है, 'सर उठा कर चलना सीखो' में आत्मविश्वास और साहस का संदेश है, और 'धरती को हम स्वर्ग बनाएँगे' में पर्यावरण-संरक्षण और मानवता के प्रति जिम्मेदारी का भाव प्रकट होता है। ये संग्रह बच्चों के मन में सकारात्मक विचार और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना जागृत करते हैं।

लेखन के अलावा डॉ. कादयान छायांकन, चित्रांकन, रेखांकन में भी कुशल हैं। उनकी रचनात्मक प्रतिभा के आधार पर प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रदर्शनियाँ आयोजित हो चुकी हैं। उनकी यह बहुआयामी प्रतिभा शिक्षा और कला के क्षेत्र में नवाचार और शोध की प्रेरणा देती है।

'शिक्षा सारथी' सहित अनेक राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में डॉ. कादयान की रचनाएँ लगातार प्रकाशित होती रही हैं। उनके सेवानिवृत्त होने के बावजूद वे शिक्षा, साहित्य और कला में सक्रिय हैं और नवाचार करते रहेंगे, ऐसी उम्मीद है।

इस प्रकार, डॉ. ओमप्रकाश कादयान का जीवन और कार्य हमें यह सिखाता है कि शिक्षा, कला और साहित्य में समर्पण और निरंतरता ही सच्ची श्रेष्ठता का मार्ग है। उनके बाल कविता संग्रह बच्चों के मन को संवेदनशील, रचनात्मक और सकारात्मक बनाते हैं, और यह उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि शिक्षक का वास्तविक प्रभाव केवल कक्षा में नहीं, बल्कि जीवनभर महसूस किया जाता है।

प्राचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीहा
रेवाड़ी, हरियाणा

बहुमुखी प्रतिभा की धनी है छात्रा मीनाक्षी

वैसे तो हर विद्यार्थी में कोई न कोई प्रतिभा छिपी होती है, किंतु कुछ छात्र-छात्राएँ तो बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं। हरियाणा प्रदेश के रेवाड़ी ज़िले के अंतर्गत खंड खोल के गाँव सीहा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की दसवीं कक्षा की छात्रा मीनाक्षी एक ऐसी ही छात्रा है, जिसने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

8 जून, 2011 को रेवाड़ी ज़िले के गाँव लुहाना में जन्मी मीनाक्षी बचपन से ही कुशाग्र-बुद्धि की बनी रही है। सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक दादा रामकुमार यादव, पिता सोमेंद्र कुमार तथा माता पूनम देवी के अलावा सभी पारिवारिक सदस्यों तथा गुरुजन के अच्छे संस्कारों के साथ निरंतर कुछ नया सीखने की ललक रखने वाली मीनाक्षी ने शिक्षा विभाग की विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन की छाप छोड़ी है। वह बचपन से ही पढ़ाई में अव्वल रही है, जिसके चलते अब तक उसने सभी कक्षाएँ उत्कृष्टता के साथ उत्तीर्ण की हैं।

अपने दादाजी तथा गुरुजन के प्रेरक मार्गदर्शन में वह विज्ञान प्रदर्शनी में गत वर्ष राज्य स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर चुकी है तथा इस वर्ष भी राज्य स्तर पर जाने की तैयारी में है। अब तक वह विज्ञान प्रदर्शनी में पंद्रह हज़ार रुपए से ज़्यादा के नकद पुरस्कार जीत चुकी है। पेंटिंग प्रतियोगिता में गत तीन वर्षों से वह ज़िला स्तर पर कई बार विजेता रह चुकी है। इसी प्रकार कला-उत्सव में उसके द्वारा तैयार की गई 'साँझी' सर्वश्रेष्ठ रही, जिसने विद्यालय की सृजनात्मक पहचान को और सशक्त बनाया। उसकी कलात्मक दृष्टि और रंगों की समझ ने हर बार निर्णायकों को प्रभावित किया है। हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत मीनाक्षी ने 'कहानी लिखो' प्रतियोगिता में अपने मौलिक सृजन के आधार पर जीत हासिल की।

उपरोक्त विभिन्न प्रतियोगिताओं के अलावा मीनाक्षी विद्यालय के हिमालय सदन की कैप्टन होने के चलते एक सप्ताह विद्यालय की प्रार्थना सभा, वॉल मैगज़ीन तथा अन्य गतिविधियों का संचालन-संपादन भी करती है। इतना ही नहीं, वह विभिन्न अवसरों पर विद्यालय के मुख्य मंच का संचालन भी करती रही है। अपनी कक्षा की मॉनिटर, बालिका मंच की छात्रा प्रभारी, विद्यालय के भाषा मंच की छात्रा संयोजक, रंगोली प्रकोष्ठ जैसे विभिन्न प्रभार भी मीनाक्षी पूरे समर्पण के साथ सँभालती है। वह कई बार स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में भी विजेता रही है।

मीनाक्षी अपनी सादगी, विनम्रता और अनुशासित व्यवहार के लिए भी जानी जाती है। विद्यालय में जब भी कोई गतिविधि आयोजित होती है, तो वह सबसे पहले तैयारी में जुट जाती है- चाहे मंच सजावट का कार्य हो या विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देना। उसकी यह आदत है कि वह हर कार्य को टीम-भावना के साथ करती है। उसे सहपाठियों के बीच एक आदर्श बनाती है।

शिक्षकगण बताते हैं कि मीनाक्षी की विशेषता केवल उसकी उपलब्धियाँ नहीं, बल्कि उसका सकारात्मक दृष्टिकोण है। वह हर चुनौती को सीखने का अवसर मानती है। पढ़ाई के अतिरिक्त वह पुस्तकालय में जाकर नई-नई किताबें पढ़ना पसंद करती है और अनेक बार अन्य विद्यार्थियों को भी पठन के लिए प्रेरित करती है। उसकी बोलचाल में आत्मविश्वास और स्पष्टता झलकती है। उसका मन है कि वह कुछ बड़े-बड़े मंचों का संचालन करे और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य करे। विद्यालय में सभी शिक्षक तथा उसके सहपाठी विभिन्न गतिविधियों में उसकी रचनात्मकता, समर्पण और साधना की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते देखे जा सकते हैं। मीनाक्षी अपने सहपाठियों की सहायता करने में भी आगे रहती है और समूह कार्यों में सदैव सबको साथ लेकर चलती है। विद्यालय के शिक्षकों का कहना है कि उसमें नेतृत्व, संवेदना और सेवा-भाव तीनों का अद्भुत समन्वय है। विद्यालय परिवार तथा शिक्षा विभाग को मीनाक्षी जैसी बहुमुखी प्रतिभाओं पर गर्व होना स्वाभाविक है।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीहा
रेवाड़ी, हरियाणा

भाषा सीखने के 'खेल पिटारे' का विमोचन

जिला शिक्षा अधिकारी कैथल सुरेश कुमार ने आरोही स्कूल ग्योंग, कैथल में कार्यरत हिंदी प्राध्यापक डॉ. विजय चावला द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2023 के निर्देशानुसार भाषायी दक्षताओं के विकास हेतु तैयार नवाचारी खेल गतिविधियों के 'खेल पिटारे' का विमोचन किया।

हिंदी प्राध्यापक डॉ. विजय चावला ने जिला शिक्षा अधिकारी कैथल सुरेश कुमार को जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2023 में खेल-आधारित, अनुभव-आधारित और गतिविधि-आधारित शिक्षा को विशेष रूप से शिक्षा का मूल आधार माना गया है। उन्होंने बताया कि उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उनके द्वारा यह नवाचारी भाषायी खेल पिटारा तैयार किया गया है। इस खेल पिटारे में शतरंज भूलभुलैया खेल, शब्द पिटारा खेल, बूझो तो जानो खेल, वर्ग-पहेली खेल, बिंगो खेल, साँप-सीढ़ी खेल, कार्ड खेल, पासा खेल, शब्द सीढ़ी खेल, हमें हमारे परिवार से मिलाओ तथा टिक-टैक-टो खेल शामिल किए गए हैं। इन खेलों के माध्यम से विद्यार्थी खेल-खेल में भाषा ज्ञान प्राप्त कर पाएँगे और उनकी भाषायी दक्षताओं का विकास हो सकेगा।

जिला शिक्षा अधिकारी कैथल सुरेश कुमार ने डॉ. विजय चावला से सभी खेलों के बारे में क्रमवार विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने साँप-सीढ़ी खेल, शतरंज भूल-भुलैया खेल, बिंगो खेल, शब्द पिटारा खेल आदि की विशेष रूप से सराहना की।

जिला शिक्षा अधिकारी ने अंत में डॉ. विजय चावला के हिंदी भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे अभिनव प्रयासों को खूब सराहा। इस अवसर पर अधीक्षक सुरेश कुमार, प्रवीण थरेजा तथा पुरुषोत्तम कौशिक आदि उपस्थित रहे।

- शिक्षा सारथी डेस्क

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

हर वाक्य में फल खोजिए

1. मोहन दुबे लम्बे हैं।
2. सेना रियल हीरो है।
3. मैना रंगीन चिड़िया है।
4. कुबेर यक्षों के राजा हैं।
5. बुआ मम्मी की ननद हैं।
6. ऋतुओं में वसंत राजा है।
7. मैंने ताजा मुनक्का खाया।
8. एक खेल ऊँची कूद भी है।
9. पेड़ों के लाभ असीमित हैं।
10. अनारकली बहुत सुंदर थी।
11. खिलौनों से बच्चे खेलते हैं।
12. वह दवा का सिरप पीता है।
13. हम इंफाल सात बजे पहुँचे।
14. महल में मनसुख जू रहते हैं।
15. तेज बोली चीख कहलाती है।
16. मैंने दवा रात के टाइम ली थी।
17. विजय पाराशरी फाइल ले गये।
18. अभिमन्यु की वीरता अद्भुत थी।
19. बच्चे रीछ का नाच पसंद करते हैं।
20. डमरू का भाई अमरू दवा लाया।

1. बेल, 2. नारियल, 3. नारंगी, 4. बेर, 5. आम, 6. संतरा, 7. जामुन, 8. चीकू, 9. केला, 10. अनार, 11. सेब, 12. पपीता, 13. फालसा, 14. खजूर, 15. लीची, 16. इमली, 17. शरीफा, 18. कीवी, 19. चेरी, 20. अमरूद

पहेली-निर्माता :
प्रशान्त अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी, जिला बरेली, उत्तर प्रदेश

बाल पहेलियाँ

1. गुल ही गुल तुम मुझमें पाओ,
   खूबी यही हमारी।
   देखकर मुझे सब हर्षित होते,
   कहते हैं -----------।

2. मुझसे लिखते रामू, श्यामू,
   राधा-राम, जुगिन्दर।
   श्यामपट्ट मेरा आँगन है,
   लिखते राज सिंकदर।

3. छोटा करना काम हमारा,
   बात है अभी अधूरी।
   हर बस्ते में मुझको पाओ,
   हुई बात अब पूरी।

4. हर कक्षा में मुझको पाओ,
   सदा मिटाना मेरा काम।
   गुरुजन का हूँ अति प्यारा,
   चीज न समझो मुझको आम।

5. सुनकर सब आवाज़ हमारी,
   बच्चे सब हर्षाते।
   फिर आने का वादा करके,
   अपने घर को जाते।

6. मुझमें है ज्ञान खज़ाना,
   शब्दों का भंडार।
   पढ़ो मुझको, विद्वान बनो,
   महिमा अपरंपार।

7. मुझ पर लिखते लालू, शालू,
   काला-काला रंग।
   मास्टरजी भी मुझमें लिखते,
   लिखते राज उमंग।

8. लिखते-लिखते अगर कभी,
   मोटी मैं हो जाऊँ।
   मुझे छीलकर उपयोग करो,
   घर-घर पाई जाऊँ।

9. मुझ पर लिखते रानी-राजा,
   श्वेत रंग है मेरा।
   पढ़-लिख कर विद्वान बनो सब,
   करके दूर अँधेरा।

10. खेलो-कूदो, मौज मनाओ,
    मेरे आँगन में पढ़ने आओ।
    अगर निपुण बन जाओ प्यारे,
    झट मॉनिटर तुम बन जाओ।

11. दिव्य ज्ञान की ज्योति जलाते,
    दिशा नई दिखलाते हैं।
    छल, दम्भ, पाखण्ड, द्वेष से
    दूर रहना सिखलाते हैं।

उत्तर- 1. फुलवारी. 2. चॉक, 3. कटर, 4. डस्टर, 5. घंटी, 6. शब्दकोश, 7. श्यामपट्ट, 8. पेंसिल, 9. कॉपी, 10. स्कूल, 11. गुरु

डॉ. कमलेन्द्र कुमार (प्रअ)
रावगंज, कालपी, जिला जालौन
उत्तर प्रदेश, पिन कोड-285204

इंद्रधनुष में क्यों नहीं दिखते काले, भूरे और धूसर रंग

बच्चो! क्या तुमने बारिश के बाद आसमान में इंद्रधनुष देखा है? कितना सुंदर लगता है न, लाल से लेकर बैंगनी तक के सात रंगों वाला वह आधा गोल धनुष! लेकिन क्या तुमने कभी सोचा है कि इसमें काला, भूरा या धूसर (ग्रे) रंग क्यों नहीं होता?

दरअसल, सूरज की रोशनी सफेद दिखती है, लेकिन वह असल में सात रंगों से मिलकर बनी होती है लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, जामुनी और बैंगनी। जब यह रोशनी बारिश की बूँदों से टकराती है, तो हर रंग थोड़ा-थोड़ा अलग दिशा में मुड़ जाता है। लाखों बूँदें मिलकर तब बनाती हैं वह सतरंगी इंद्रधनुष, जो हमें बहुत सुंदर दिखाई देता है।

अब जानते हैं कि काला, भूरा और धूसर रंग क्यों नहीं दिखते

काला रंग वहाँ बनता है, जहाँ बिल्कुल रोशनी नहीं होती। लेकिन इंद्रधनुष तो तभी बनता है जब चारों तरफ रोशनी होती है, इसलिए उसमें कालेपन की कोई जगह नहीं होती।

भूरा रंग लाल और हरे के मिलने से बनता है। लेकिन इंद्रधनुष में लाल और हरे के बीच पीला और नारंगी रंग होते हैं, इसलिए वे सीधे मिल नहीं पाते, और भूरा रंग बन ही नहीं पाता।

धूसर (ग्रे) रंग सफेद और काले के मिलने से बनता है। इंद्रधनुष में न तो सफेद रहता है (क्योंकि वह सात रंगों में बिखर चुका होता है) और न ही काला, इसलिए ग्रे भी नहीं दिखता।

इंद्रधनुष के रंग एक-दूसरे में धीरे-धीरे घुलते हैं। नीले और हरे के बीच कभी-कभी फिरोज़ी जैसा सुंदर रंग भी झलक जाता है। असल में यह रंगों की एक लंबी श्रृंखला होती है बस हमारी आँखें सात मुख्य रंगों को ही पहचान पाती हैं।

तो अगली बार जब इंद्रधनुष दिखे, तो उसके रंगों को ध्यान से गिनना। तुम्हें पता चलेगा कि यह प्रकृति की बनाई सबसे सुंदर रंगोली है, जिसमें काला, भूरा और धूसर तो नहीं, पर बाकी सारे रंग चमक उठते हैं।

-शिक्षा सारथी डेस्क

प्यारा मोर

मोर नाचा अँगना मेरे,
बरखा आई प्यारे!
नीले पंख फैलाए उसने,
जैसे चाँद-सितारे।।

घूम-घूमकर पंख फैलाए,
नाच करे मनभावन।
देख उसे सब खुश हो जाएँ,
मुस्काए नभ सावन।।

नील गगन का टुकड़ा लगे,
मोर मुकुट सिर प्यारा।
राजा जैसे बन घूमे वो,
वन का श्रृंगार न्यारा।।

पंखों में इंद्रधनुष चमके,
सात रंग झिलमिलाते।
उसकी चाल बड़ी सलोनी,
सब मन मोहित हो जाते।।

चलो बचाएँ वन-पंछी सब,
मोर रहे निर्भय प्यारा।
हरी-भरी हो अपनी धरती,
भारत चमके सारा।।

डॉ. सुदेश रानी
हिंदी अध्यापिका
रामा विद्यालय सैक्टर-25, पंचकूला

पौष माह का जाड़ा आया

थर-थर खूब कँपाता आया।
धुंध कोहरा वर्षा ओले
ओस गिराता जाड़ा आया।
शीत लहर के तीर चलाता
नीर जमाता जाड़ा आया।
स्वेटर जर्सी मफलर कोट
जन-जन को पहनाता आया।
काजू किशमिश और बादाम
गजक खजूर खिलाता आया।
गरमा गरम पुए पकौड़े
गर्म चाय के प्याले लाया।
धूप सुहानी मन भर लाया।
पौष माह का जाड़ा आया।

दिनेश विजयवर्गीय
215, मार्ग-4, रजत कॉलोनी, बूँदी-323001
राजस्थान

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! 'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के अंतर्गत कुछ नई और रुचिकर विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. सही मापन विधि / मापन में सावधानी का महत्त्व सीखा-

कक्षा-6 के विद्यार्थियों ने विज्ञान की पाठ्य-पुस्तक जिज्ञासा के पाठ-5 'लंबाई एवं गति का मापन' से प्रेरित होकर अनुभवात्मक अधिगम के आधार पर एक रोचक गतिविधि की। इस गतिविधि का उद्देश्य यह जानना था कि पैमाना पढ़ते समय आँख की

सही स्थिति क्या होनी चाहिए और गलत स्थिति से मापन में कितनी त्रुटि आ सकती है।

विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी पेंसिल को पैमाने के साथ सीध में रखकर उसकी लंबाई मापी। पहले उन्होंने आँख को पेंसिल की नोक के ठीक ऊपर (चित्रानुसार स्थिति 'ख') रखकर मापन किया, फिर आँख को बाईं और दाईं ओर (स्थिति 'क' और 'ग') रखकर माप लिया। परिणामस्वरूप उन्होंने पाया कि केवल तभी सही मापन प्राप्त होता है जब आँख पैमाने के निशान के ठीक ऊपर होती है।

इस प्रयोग के माध्यम से विद्यार्थियों ने अनुभवात्मक अधिगम द्वारा स्वयं अनुभव कर सीखा कि मापन करते समय आँख की गलत स्थिति से मिलीमीटर स्तर तक त्रुटि हो सकती है। इस गतिविधि ने विद्यार्थियों में सटीक मापन की आदत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रयोगात्मक सीखने की रुचि विकसित की।

2. गोल्डन रेन ट्री- प्रकृति की अद्भुत कलाकारी-

विद्यालय के खेल मैदान में विद्यार्थियों ने एक रोचक दृश्य देखा कि एक ही पेड़ पर दो अलग-अलग रंग दिखाई दे रहे थे। दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे पेड़ पर पीले और भूरे रंग के फूल एक साथ खिले हों, परंतु नज़दीक जाकर पता चला कि पीले रंग के भाग वास्तव में फूल थे, जबकि भूरे या गुलाबी रंग की बंद डिब्बीनुमा

आकृतियाँ उस पेड़ के बीज-फली (सीड पॉड्स) थीं।

जीवविज्ञान प्रवक्ता ने विद्यार्थियों को बताया कि यह पेड़ गोल्डन रेन ट्री है, जिसका वैज्ञानिक नाम (Koelreuteria paniculata) है। यह पेड़ चीन और कोरिया जैसे पूर्वी एशियाई देशों का मूल निवासी है। इसके फूल सुनहरे पीले होते हैं और फूल झड़ने के बाद बनने वाली हल्की, कागज़ी फली दिखने में सुंदर लालटेन जैसी लगती है, जिन्हें कई बार लोग फूल समझ लेते हैं। इन फलीदार भागों का उपयोग सूखे पुष्प सज्जा (ड्राई फ्लॉवर अरेंजमेंट) में भी किया जाता है।

गोल्डन रेन ट्री अपनी आकर्षक आकृति और रंगों के कारण बाग़-बगीचों व सड़कों के किनारे सजावटी पेड़ के रूप में लगाया जाता है। इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सूक्ष्म पर्यवेक्षण क्षमता और प्रकृति के प्रति जिज्ञासा वास्तव में प्रशंसनीय है।

3. कैरम बोर्ड पर संवेग संरक्षण की गतिविधि-

विद्यालय में बच्चों की जिज्ञासाएँ ही विज्ञान के नए प्रयोगों की जननी बन जाती हैं। ऐसा ही एक रोचक उदाहरण उस समय सामने आया जब कक्षा के कुछ विद्यार्थियों ने कैरम बोर्ड खेलते हुए संवेग संरक्षण के नियम पर एक प्रश्न उठाया।

उन्होंने देखा कि जब कैरम की दो गोटियाँ आपस में सटी हुई रखी जाती हैं और उनमें से एक पर स्ट्राइकर से चोट की जाती है, तो केवल एक ही गोटी आगे बढ़ती है, जबकि दूसरी अपनी जगह पर स्थिर रहती है। यह देखकर विद्यार्थियों ने जिज्ञासा प्रकट की- ऐसा क्यों होता है?

इसका समाधान खोजने के लिए उन्होंने प्रयोगात्मक रूप से इसे परखने का निश्चय किया। उन्होंने कैरम-बोर्ड पर दो पुस्तकों को आमने-सामने रखकर उनके बीच कैरम की कुछ गोटियाँ रखीं। फिर कुछ दूरी से लाइन में रखी सबसे पीछे की गोटी पर स्ट्राइकर की तरह चोट की गई। परिणाम अत्यंत रोचक रहा। लाइन की सबसे आगे रखी गोटी तीव्रता से आगे निकल गई, जबकि बीच की गोटियाँ लगभग स्थिर रहीं।

इस गतिविधि से विद्यार्थियों ने स्वयं अनुभव किया कि जब एक वस्तु दूसरी वस्तु से टकराती है, तो संवेग का स्थानांतरण होता है, किंतु कुल संवेग का परिमाण स्थिर रहता

है। यही तो है संवेग संरक्षण का नियम।

4. अर्जुन के वृक्ष पर बग का हमला-

विद्यालय परिसर में स्थित अर्जुन के वृक्ष पर हाल ही में कुछ बग्स का आक्रमण देखा गया। वृक्ष की पत्तियों पर हल्के भूरे धब्बे और सिकुड़न दिखाई देने लगी, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि किसी कीट का प्रभाव वृक्ष पर पड़ रहा है।

इस स्थिति को देखते हुए विद्यालय के दोनों विज्ञान अध्यापक तथा प्रवक्ता (जीवविज्ञान) ने विद्यार्थियों को इस प्राकृतिक घटना से अवगत कराने की योजना बनाई। आगामी विज्ञान कक्षा में विद्यार्थियों को अर्जुन के वृक्ष के पास ले जाकर यह दिखाया गया कि किस प्रकार कीट पौधों की पत्तियों को नुकसान पहुँचाते हैं और उनका जीवन-चक्र पौधों के स्वास्थ्य को किस प्रकार प्रभावित करता है।

इस गतिविधि का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और उन्हें यह सिखाना था कि प्रकृति में घटित हर परिवर्तन को वैज्ञानिक दृष्टि से देखना चाहिए। इस अवसर का उपयोग अनुभवात्मक अधिगम के रूप में किया गया, ताकि विद्यार्थी वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से विज्ञान को जोड़ सकें और अपने आसपास के पर्यावरण को अधिक संवेदनशीलता से समझ सकें।

5. डाक टिकट प्रदर्शनी- विज्ञान से जुड़ा एक रोचक अनुभव-

9 अक्तूबर को विश्व डाक दिवस के अवसर पर विद्यालय के विज्ञान कक्षा में डाक टिकट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों और शिक्षकों ने बड़ी रुचि दिखाई। मैंने अपने निजी डाक टिकटों और पोस्टल मेटेरियल के संग्रह का प्रदर्शन किया।

विद्यार्थियों को बताया गया कि डाक टिकट संग्रह (फिलेटली) एक शैक्षणिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अत्यंत उपयोगी गतिविधि है। संग्रहण, वर्गीकरण, संरक्षण और अभिलेखीकरण में विज्ञान की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। टिकटों की पहचान, उनकी आयु, कागज़ की गुणवत्ता, स्याही के रासायनिक गुण, तापमान और आर्द्रता के प्रभाव आदि का अध्ययन वैज्ञानिक विधियों द्वारा किया जाता है।

फिलेटली में वैज्ञानिक विधियाँ जैसे- अवलोकन, तुलना, वर्गीकरण और निष्कर्ष का प्रयोग किया जाता है, जिससे संग्रह को सुव्यवस्थित और सटीक रूप में सुरक्षित रखा जा सकता है।

यह शौक विद्यार्थियों में न केवल इतिहास और संस्कृति के प्रति रुचि जगाता है, बल्कि वैज्ञानिक सोच, अनुशासन और व्यवस्थित कार्य प्रणाली को भी प्रोत्साहित करता है। इस प्रदर्शनी से विद्यार्थियों को डाक-प्रणाली, पत्र-लेखन की परंपरा और दस्तावेज़ों के संरक्षण के वैज्ञानिक तरीकों के बारे में नया अनुभव प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में संचार के पारंपरिक माध्यमों के प्रति जागरूकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मकता को बढ़ावा देना रहा।

अच्छा तो, आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ। आशा है, आप उन्हें भी पसंद करेंगे और करके देखेंगे।

साइंस मास्टर/ईएसएचएम
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दामला
खंड जगाधरी, यमुनानगर

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

मोनिका शर्मा

प्यारे बच्चो!

सर्दियों की ठिठुरन में जब रसोई से चाय की ख़ुशबू फैलती है, तो लगता है मानो मम्मी की प्रयोगशाला से कोई गरम, मीठा और सुगंधित वैज्ञानिक प्रयोग निकल रहा हो। कड़क चाय की भाप में सिर्फ़ सुकून नहीं होता, उसमें छिपे होते हैं कई रोचक वैज्ञानिक सिद्धांत भी। पर क्या आपने कभी सोचा है कि यह साधारण-सी चाय कैसे एक प्याली में सुकून, ताज़गी और स्वाद भर देती है? यह जादू है विज्ञान का स्वाद! हाँ, वही विज्ञान जो किताबों में है, वही जो प्रयोगशालाओं में सिखाया जाता है।

मम्मी की रसोई तो सच में सबसे बड़ी प्रयोगशाला है, जहाँ हर दिन नए-नए एक्सपेरिमेंट होते हैं।

उबलता पानी : ऊर्जा और अवस्था परिवर्तन-

जब मम्मी पानी को गैस पर रखती हैं, तो उसमें गर्मी (Heat Energy) पहुँचती है। यह गर्मी पानी के अणुओं को तेजी से हिलने पर मजबूर करती है। छोटे-छोटे अणु तेज़ी से घूमने और टकराने लगते हैं। जैसे-जैसे यह गति बढ़ती है, पानी भाप में बदलने लगता है। यही है अवस्था परिवर्तन (Change of State) यानी पानी तरल से गैस में बदल जाता है।

लेकिन बच्चो, यह केवल भाप बनने की प्रक्रिया नहीं है। जब पानी उबलता है, तब उसमें छिपी ऊर्जा की शक्ति भी दिखती है। यही ऊर्जा चाय की पत्तियों और मसालों को सक्रिय करती है। पानी जितना ज़्यादा गर्म होगा, चाय उतनी ही जल्दी रंग, स्वाद और ख़ुशबू छोड़ने लगेगी। पानी के अंदर उठने वाले छोटे-छोटे बुलबुले दिखाते हैं कि गर्म ऊर्जा अणुओं को कैसे गति देती है। सर्दियों में यह गर्म भाप न सिर्फ़ चाय में स्वाद लाती है, बल्कि पूरे कमरे को महका देती है।

अगली बार जब मम्मी पानी उबालें, तो ध्यान से देखना कि कैसे छोटे बुलबुले उठते हैं और भाप बनती है। यही है मम्मी की प्रयोगशाला का पहला और सबसे मज़ेदार प्रयोग -ऊर्जा और अवस्था परिवर्तन का खेल।

चाय की पत्तियाँ : रासायनिक प्रयोग की शुरुआत-

जब गर्म पानी में चाय की पत्तियाँ डाली जाती हैं, तो उनमें मौजूद कई रासायनिक यौगिक (Chemical Compounds) घुलने लगते हैं। टैनिन (Tannin) हल्का कसैला स्वाद देता है और थियोफिलिन (Theophylline) शरीर को तरोताज़ा महसूस कराता है। जैसे-जैसे यह प्रतिक्रिया चलती है, रंग हल्के सुनहरे से गहरे भूरे में बदल जाता है यह है रासायनिक परिवर्तन (Chemical Change) का सुंदर उदाहरण। यह केवल स्वाद ही नहीं बदलता, बल्कि चाय की पत्तियों में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट हमारे शरीर को स्वस्थ और सर्दियों में मजबूत बनाए रखने में मदद करते हैं।

दूध और चाय का संगम : मिश्रण का जादू-

जब मम्मी उबलती चाय में दूध डालती हैं, तो यह एक कोलॉइडल मिश्रण (Colloidal Mixture) बन जाता है। दूध में मौजूद फैट और प्रोटीन के कण चाय में मिलकर एक समान रंग और मुलायम बनावट देते हैं।

शुरुआत में चाय और दूध अलग दिखते हैं, पर कुछ ही सेकंड में दोनों पूरी तरह घुलमिल जाते हैं यानी मिश्रण (Mixture) और विलयन (Solution) का सुंदर मेल। इस प्रक्रिया में आपको यह समझना चाहिए कि रसोई में भी घुलनशीलता और मिश्रण की पढ़ाई होती है। यही विज्ञान है, जो हर रोज़ हमारी प्याली में दिखाई देता है।

चीनी की मिठास : घुलनशीलता का सबक-

अब आती है मिठास की बारी। जब मम्मी चम्मच से चीनी डालती हैं, तो वह धीरे-धीरे घुल जाती है। यह घुलना दरअसल भौतिक परिवर्तन (Physical Change) है, क्योंकि चीनी का स्वाद वही रहता है। बस वह पानी में मिलकर विलयन (Solution) बना लेती है। चीनी के घुलने का यह खेल दिखाता है कि पदार्थ अलग-अलग तरीके से पानी में मिलते हैं। यही कारण है कि कभी-कभी हम शीत पेय में चीनी डालते हैं और वह धीरे-धीरे घुलती है।

ख़ुशबू का रहस्य : वाष्पशील यौगिकों की उड़ान-

गरमागरम चाय से उठती महक हवा में फैल जाती है। इसका कारण हैं वाष्पशील यौगिक (Volatile Compounds), जो गरम होते ही उड़कर हमारी नाक तक पहुँचते हैं। सर्दियों में चाय और भी अच्छी लगती है, क्योंकि ठंडी हवा में भाप और ख़ुशबू ज़्यादा देर तक महसूस होती है। यही कारण है कि कभी-कभी हम चाय की प्याली उठाते ही सुकून और ताज़गी महसूस करते हैं।

अन्य पेय और उनके पीछे का विज्ञान

1. हल्दी वाला दूध : गोल्डन ड्रिंक

हल्दी में पाए जाने वाले करक्यूमिन (Curcumin) शरीर में सूजन कम करने और रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) बढ़ाने में मदद करते हैं। दूध में घुलने पर यह एक कोलॉइडल मिश्रण बनाता है।

2. अदरक-तुलसी की चाय

अदरक में मौजूद जिंजरोल (Gingerol) और तुलसी के यूजेनॉल (Eugenol) यौगिक शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति बढ़ाते हैं। गर्म पानी में डालने से इनके वाष्पशील यौगिक उड़ते हैं और पूरे घर में ख़ुशबू फैलती है।

3. काढ़ा (Herbal Decoction)

दालचीनी, काली मिर्च, अदरक और गुड़ जब गर्म पानी में मिलते हैं, तो मसाले अपने औषधीय गुण छोड़ते हैं। काढ़ा पीने से शरीर को गर्मी, ऊर्जा और रोग प्रतिरोधक क्षमता मिलती है।

बीआरपी (साइंस) मोरनी हिल्स
जिला-पंचकूला, हरियाणा

मामूली-सा पत्थर

एक बार की बात है। एक किसान था, बहुत ही परिश्रमी और सादगीपूर्ण जीवन जीने वाला। वह एक विशाल और उपजाऊ खेत में खेती करता था। उस खेत ने कई वर्षों तक उसे भरपूर अनाज दिया था, लेकिन उसी खेत के बीच-बीच में एक समस्या हमेशा बनी रहती थी- ज़मीन से थोड़ा ऊपर उभरा हुआ एक बड़ा-सा पत्थर। यह पत्थर ऐसा था कि जिसकी वजह से किसान को ग्रामवासियों में अक्सर उपहास का सामना भी करना पड़ता था, क्योंकि न जाने कितनी ही बार वह उससे टकराकर गिर चुका था। उसके खेती के औज़ार कई बार टूट चुके थे। कभी हल टूट जाता, कभी खेत जोतते समय बैलों को दर्द पहुँचता और कभी उस पत्थर की वजह से उसे दोबारा से खेत समतल करना पड़ता। वह हर बार इस पत्थर को देखकर सोचता- एक दिन मैं इसे ज़रूर निकाल फेंकूँगा, पर हर बार यह विचार वहीं रह जाता, जैसे कि यह पत्थर उसके मन में ही जड़ें जमा चुका हो।

एक दिन की बात है। वह हमेशा की तरह सुबह-सुबह खेत में काम करने पहुँचा। खेत में हल चलाने लगा, और जो बरसों से होता आया था, वही फिर से हुआ। हल ज़ोरदार आवाज़ के साथ उसी पत्थर से टकरा गया और टूट गया। किसान का धैर्य इस बार टूट गया। वह गुस्से से भर उठा और स्वयं से बोला- अब बस! आज चाहे जो हो जाए, मैं इस चट्टान को ज़मीन से निकाल ही डालूँगा। अब मैं इसे और नहीं सह सकता।

वह तुरंत गाँव की ओर दौड़ा और 4-5 लोगों को साथ लेकर वापस खेत में आ गया। सबको उस पत्थर के पास ले जाकर बोला- मित्रो! देखो इस पत्थर ने मुझे कितना नुकसान पहुँचाया है। न जाने कितने औज़ार टूटे, कितनी बार परेशानी हुई। आज हम सब मिलकर इसे ज़मीन से जड़ समेत निकालेंगे और खेत के बाहर फेंक देंगे।

यह कहकर किसान फावड़ा लेकर पत्थर के किनारे मारने लगा। साथ खड़े लोग ध्यान से देखते रहे। लेकिन फिर जो हुआ, वह सबके लिए आश्चर्य की बात थी। किसान ने मुश्किल से दो-तीन बार ही फावड़ा चलाया था कि पूरा का पूरा पत्थर बाहर निकल आया। न यह कोई विशाल चट्टान थी, न कोई भारी-भरकम बाधा-बस एक छोटा-सा पत्थर निकला!

गाँव वाले हँस पड़े। उनमें से एक ने हँसते हुए कहा- क्यों भाई? तुम तो कह रहे थे कि खेत के बीच एक बड़ी-सी चट्टान दबी है। यह तो बेहद साधारण-सा पत्थर निकला!

किसान भी हैरान था। वर्षों तक जिसे उसने भय, संदेह और परेशानी का कारण समझा था, वह वास्तव में तो केवल एक मामूली-सा टुकड़ा था। उसे पछतावा हुआ कि काश! उसने पहले ही इसे हटाने का साहस किया होता। तो न उसके औज़ार टूटते, न समय और श्रम व्यर्थ जाता और न ही आज उसे अपने ही साथियों के सामने शर्मिंदा होना पड़ता।

यह घटना किसान की आँखें खोल गई। उसे समझ में आ गया कि समस्या उतनी बड़ी नहीं थी, जितनी बड़ी वह कल्पना करता रहा। असली समस्या तो उसके मन में थी- वह डर, वह हिचकिचाहट और वह टालमटोल जिसने उस छोटे-से पत्थर को उसके लिए वर्षों तक चट्टान बना कर रखा।

शिक्षाः हमारी ज़िंदगी में भी ऐसा ही होता है। कई बार छोटी-छोटी बाधाएँ हमें पहाड़ जैसी बड़ी लगने लगती हैं। हम उनसे लड़ने की बजाय उनसे डरते रहते हैं, समय खोते रहते हैं और समस्याएँ और बड़ी होती जाती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम हिम्मत के साथ पहला कदम उठाएँ। जब हम कोशिश करते हैं, तो मुश्किलें छोटी होती चली जाती हैं। इसलिए समस्याओं से भागें नहीं-उनका सामना करें। विश्वास रखें, वे उतनी बड़ी नहीं होतीं, जितनी हम उन्हें समझ लेते हैं।

-अज्ञात

2025

दिसंबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 दिसंबर - विश्व एड्स दिवस
2 दिसंबर - राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस
3 दिसंबर - विश्व दिव्यांगता दिवस
4 दिसंबर - संत सेन भगत महाराज जयंती
7 दिसंबर - सशस्त्र बल झंडा दिवस
9 दिसंबर - अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार निरोधक दिवस
10 दिसंबर - विश्व मानवाधिकार दिवस
11 दिसंबर - अंतरराष्ट्रीय पर्वत दिवस
14 दिसंबर - राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
18 दिसंबर - अंतरराष्ट्रीय प्रवासी दिवस
20 दिसंबर - महाराजा शूरसैनी जयंती
22 दिसंबर - राष्ट्रीय गणित दिवस
24 दिसंबर- गुरु ब्रह्मानंद जयंती
25 दिसंबर - क्रिसमस
26 दिसंबर - शहीद ऊधम सिंह जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Holistic Growth in Education: A Comprehensive Approach

Dr.Gunjan Goel

Holistic growth is an educational approach that focuses on developing the whole child, encompassing their academic, social, emotional, physical, and creative potential. This approach recognizes that each child is unique and that education should cater to their individual needs, interests, and abilities.

Key Principles of Holistic Growth:

1. **Integrated Learning:** Holistic growth emphasizes the interconnectedness of different subjects and disciplines, encouraging students to see the relationships between them.
2. **Student -Centered:** Holistic education prioritizes student-centered learning, where students are encouraged to take ownership of their learning and explore their interests.
3. **Experiential Learning:** Holistic growth emphasizes hands-on, experiential learning experiences that allow students to apply theoretical knowledge in practical ways.
4. **Emphasis on Process:** Holistic education focuses on the process of learning, rather than just the end product, encouraging students to reflect on their learning and identify areas for improvement.
5. **Development of the Whole Child:** Holistic growth aims to develop the whole child, including their academic, social, emotional, physical, and creative potential.

Benefits of Holistic Growth:

1. **Improved Academic Performance:** Holistic growth can lead to improved academic performance, as students become more engaged, motivated, and confident learners.
2. **Better Social Skills:** Holistic education fosters social-emotional learning, encouraging students to develop essential life skills, such as communication, teamwork, and conflict resolution.
3. **Emotional Intelligence:** Holistic growth helps students develop emotional intelligence, including self-awareness, self-regulation, and empathy.
4. **Physical and Mental Well-being:** Holistic education prioritizes physical and mental well-being, encouraging students to develop healthy habits and coping mechanisms.
5. **Preparation for Life:** Holistic growth prepares students for success in all aspects of life, including their personal and professional lives.

Implementing Holistic Growth:

1. **Project-Based Learning:** Encourage students to work on real-world projects that integrate multiple subjects and disciplines.
2. **Social-Emotional Learning:** Incorporate activities that promote social-emotional learning, such as role-playing, group discussions, and reflection.
3. **Physical Education:** Provide regular opportunities for physical activity and outdoor learning, promoting physical and mental well-being.
4. **Arts and Creativity:** Encourage students to explore their creative interests and talents, including

music, art, drama, and other forms of self-expression.

5. **Mentorship and Guidance:** Provide students with individualized support and guidance, helping them to develop their interests and talents.

Assessment and Evaluation:

1. **Authentic Assessment:** Use authentic assessment methods that capture the full range of student learning and development, including project-based assessments, presentations, and exhibitions.
2. **Portfolios:** Encourage students to develop portfolios that showcase their learning and achievements over time.
3. **Self-Assessment and Reflection:** Encourage students to reflect on their learning and identify areas for improvement, developing a growth mindset and a love of learning.
4. **Feedback and Feedforward:** Provide students with regular feedback and feedforward, helping them to understand their strengths and areas for improvement.

Strategies for Teachers:

1. **Create a Supportive Learning Environment:** Establish a positive, inclusive, and supportive learning environment that encourages student participation and engagement.
2. **Use Varied Teaching Methods:** Use a range of teaching methods, including project-based learning, problem-based learning, and experiential learning.
3. **Foster a Growth Mindset:** Encourage students to develop a growth mindset, emphasizing the importance of effort, persistence, and resilience.
4. **Provide Opportunities for Choice:** Provide students with opportunities to make choices and take ownership of their learning.
5. **Stay Current and Reflective:** Stay current with best practices in teaching and learning, and reflect on your own teaching practices.

Challenges and Opportunities:

1. **Balancing Academic Rigor and Holistic Development:** Finding ways to integrate holistic growth into existing curricula and assessment frameworks.

2. **Teacher Training and Support:** Providing educators with the necessary training and support to implement holistic approaches.
3. **Parental and Community Engagement:** Engaging parents and the broader community in the holistic education movement.
4. **Assessment and Accountability:** Developing assessment methods that capture the full range of student learning and development, while also meeting accountability requirements.

Holistic growth is a powerful approach to education that can help students develop the skills, knowledge, and attitudes necessary for success in all aspects of life. By prioritizing holistic growth, educators can create learning environments that foster the development of well-rounded, confident, and compassionate individuals who are equipped to make a positive impact in the world.

Educationist
Hisar, Haryana

The Art of Sensitivity in Awareness

Roy J Andersen

The following is a copyrighted extract from "Is AI making our kids stupid? Tips to help kids get smart again"

The story of Mathew will help you to understand not just how students develop poorer skills, but more importantly, how you can dramatically improve their ability in these through understanding how they came about.

This will help you understand the importance of "sensitivity in awareness," both in the way you introduce and guide the development of information to your students, and in how you can better encourage them to be more aware of the need for sensitivity in their interactions and explanations. The following account was taken from our book "Mediation: Crafting the Ability of the Child for School." In this and other books where we discuss Mathew (this is not his real name), I did not discuss another problem he had, which I would like to bring to your attention here. He was said to be dyslexic.

The section you are about to read will give you a hands-on understanding of the meaning and the value of the art of sensitivity in awareness, when it fails, and the value of it when it is developed in the student.

When I first met Mathew, he was 17 years old. I remember being very impressed with the way he explained his mind. He introduced himself very politely and with a clear manner of confidence. As soon as we exchanged formalities, he began immediately to inquire into my life and experiences. He wanted to know the countries I had been to, and what I thought about this and about that. He was very well-versed in current events.

The image he projected was of a confident and very able young man. In fact, I was confused why I had been asked to meet him by his mother, but I thought it was polite to encourage the meeting, and so I asked the student to write a few sentences for me.

Now, I can usually understand in five or ten lines all the grammatical problems a student has, but this gives insight into how they explain themselves and how they think to relate their thinking to others.. However, as soon as Mathew picked up a pen, the whole character of this young man changed. It was like watching a Jekyll and Hyde movie, except that instead of becoming a monster, the student transformed into a highly nervous and very stressed human being.

While I noticed a few simple grammar mistakes as word followed word, it was not this that startled me, but the grip

with which he held the pen. As I watched, white patches on the surface of his skin appeared with the pressure he applied, and I noticed how these coincided with his attempt to write a vowel.

His hand seemed relaxed for other letters, but when he came to a vowel, he displayed great tension in his hand. It was also interesting to see that the vowel was barely legible. Other letters were clearly written, but the vowels were written much smaller and much disguised. So, it was difficult to easily see if it was an "a" "e" or "o". Also, letters appeared with no conformity. One letter could be twice the size of the one it followed, and selected from a different model than the one it would precede.

Watching the stress build up in this young man as he struggled with the task of writing, I noticed how the end letters to a word would be hastily scribbled, as he urgently strove to conclude it. So, each word would begin clearly, but by the end it would be illegible.

His parents had been told he had a motor tremor and had been told by doctors that he would always be like this. They were told that nothing could be done. His mother had told me how he was the problem child in a class, the burden of every teacher. I was not interested in the account of his class behaviour. I understood that Mathew's bad behaviour was simply his way of objecting to a system that he saw as poorly classifying him in relation to others he was forced to learn with. His bad behaviour was simply an act of self-defiance, rather than one of inadequacy. Yet, what, I wondered, was the cause of this inadequacy?

I had listened to the explanation of his motor tremor, but I had noticed that this tremor only occurred before a vowel and towards the end of a word, and was, therefore, in some way related to the meaning of stress. This aside, I had witnessed how he demonstrated a high degree of finger dexterity in various tasks I had seen him involved with. Putting this tremor explanation aside, I began to study how he held a pen and made a relation to the paper with this.

Now, if I were to ask you to pick up a pen with your eyes closed, you would feel for the correct position of the pen within your fingers and make an adjustment until it was right for you.

Each of us has our own way of holding and making use of a pen. When this young man held a pen, it was so close to the tip that he retarded any operation of dexterity that he might make in describing a character. I asked him to try to accept a different hold on the pen he was using. While such new positioning was unnatural for him, he was more able to elaborate on the description of a character. Why, I pondered, should the form of letters be so inconsistent?

All learning in school, as we have explained, is based upon rules. We may understand, for the moment, the rules the infant has to learn to write letters. So, they will listen to

the teacher and also watch other children to see how they will copy from their teacher. In this way, they will become familiar with a sheet of paper and learn how to write upon it.

Thus, the infant will learn to compartmentalise the paper into potential lines and spaces. As they decide where the left-hand margin will be, they also decide where the right-hand margin will lie, and so the point at which their writing will move to a lower line. If the paper has no lines, they will learn how to write across the page by constantly referring to past letters, marks higher up the page, and the potential space to the right, so that the line of their writing is even and balanced. When the paper is marked into lines, as it more often is, they will learn to create an imaginary line that sets the height of letters, so all will appear of a uniform height when they rest them upon the inked line.

This writing may seem automatic, but it is, however, learned through such rules. With experience, the child automatically and now naturally scans for the height and width of each character before they make it. With every act of performance, no matter how small or how irrelevant it may seem, it had to be learned at one time.

Learning requires a degree of sensitivity in how to perform the actions of another, as they learn from them.

In the same way that you may verbally talk to yourself when you learn to change gears in a car for the first time, and then no longer need to do this as you progress to automatically perform this action, so the child in school is minutely conscious of small details when they first learn a task.

You only have to watch an infant watch the one they are sitting next to, to see how they watch and mimic their actions as they pick up a pencil and write a letter. They will see how the pencil is held and examine the letter that has

been drawn. Then, they will draw their personalised version of this, as they constantly check how it compares to their friends' version, as they give it their shape.

So, while we think about the words we are to write, we must remember that we learned to know that when "a" followed "i" that it was to be kept at the same height, while an "l", "t", or "h" was to be taken to twice this height. Therefore, our mind constantly seeks reference points, where it searches backwards and forwards to know how to adjust the size and form of each new character to make such a uniform presentation. This is something that we learn to do, and like riding a bicycle, we are not normally aware of how we do this. We just do it. Nevertheless, it is a learned operation based upon rules.

However, this 17-year-old did not know these rules! He did not see how one letter needed to be related to the one it followed, just as this would set the stage for those to come. The question in my mind was "Why did he not see this, and why were the vowels disguised"?

As we worked together to learn this skill, Mathew explained to me how he had been taunted for being fat when he first began school, and how he hated to be in that class, because he was always picked on by the other children. When we met him, Mathew, he was not so, but I could understand from the way he explained his feelings that the first years of school life had been quite traumatic for him. Knowing this brought sense to why he had hated to be in school earlier in his life, and so why he tried everything he could think of to escape from it.

When his teacher was explaining the vowels and phonetically sounding them out, Mathew was not paying attention. Because of this, he became confused when he should write an "e" or an "a". One teacher had smacked his hand for not concentrating, and a student laughed at him.

One teacher tried to help him, but he was too conscious of the other students, who were ready to ridicule him, to clearly think about what the teacher was saying. Then, later in his schooling, he was said to be dyslexic, and teachers mistakenly took this to mean his natural ability was limited and he should not be pressurised to learn what he was not able to do. So, his way was accepted by the teachers, but Mathew always felt embarrassed, because he could never do what other students could do.

It was also the case with the scale of letters. When others took note of the scale of letters at the beginning of their school life, Mathew's mind was closed, because he felt hurt for being laughed at. In being so distracted, he only half noticed what others took more note of. This caused him to take less care and be less aware of what was happening. (Can you see here what we mean by sensitivity in awareness?) As time went by, the inability he showed to make such uniform presentation became more and more accepted as "his" way, just as his confusion with vowels.

As we know from the principles we discussed in "Brain Plasticity: How the Brain learns Through the Mind to Create Intelligence", the behavioral experiences Mathew had did not just affect his way of understanding other children, but they also conditioned his academic ability. So, while he was in primary school, much of what he was taught —the basic rules that enable a student to achieve a level of proficiency —fell on deaf ears.

He so much hated to be in his class that he could not focus on his learning, and so developed a very bad structure to engage with information. Perhaps, to consider the complexity of the human mind, he may have done this purposely simply to demonstrate his rejection of a world that gave him pain.

However, with all this understood, I began by giving him confidence not to worry about mistakes. I told him, 'I make many mistakes, just like any human being does.' He smiled a bit when I told him this. Once, and only once, a "level of trust" with him had been gained, I began to help him learn the differences between the vowels. Not that this was easy, for at 17, he had much to reconstruct.

The important point was that Mathew began to believe that he could learn this task (because I had gained his friendship and trust), and he began to learn how to do it better. He learnt not to get stressed if he wrote the wrong vowel, but to reflect more if it was the correct one, with the model examples I had given him.

Then, we discussed the rules of character formation and relationships to help him understand the correct size of letters. By making a small mark at the appropriate height in

between the inked lines on the right side of the paper, he learned to devise an imaginary line that extended from the letters on the left, so that he could define a particular size for each letter he was about to write. This was much easier for him, and within less than an hour of practice, he had written abcde in joined-up writing with a precision that was remarkable.

As Mathew came to recognise his own improvement and his now greater possibilities, he put more effort into his studies and less effort into disturbing the class, because he had found a new way to be recognised as an achiever.

The explanation for Mathew's very distinctive change in performance came not simply from someone showing him how to do something, but from the **quality of language shared between the teacher and the taught that enabled the psychology to change the physiology.** In other words, as I more simply say,

"If you want to open the mind of a student,
You must first open their heart."

The point I wish to make here is that while Mathew's limitation, and his placement in a variation of ability with others, had always been thought to be a natural ability and thus rooted in some genetic explanation, it was proven not to be so. In other words, he simply needed more patience and love from his teachers to improve his performance, but more importantly, their effort to seek how to rebuild what he had not understood in earlier times.

It was heartwarming to receive a letter from his mother many years later, telling me how Mathew got a job as a journalist after leaving school!

We can more simply explain this very prevalent problem in school through the following example. Below you can see part of an essay written by a girl who had been in school for eight years. For eight years and with eight successive teachers, her effort was taken as "her ability," and she was awarded average marks in a class. We might think of 5/10 to 6/10. Now, in this example, there is no error in her work, except in the manner in which it is presented. Her facts are correct, but the writing is very difficult to read, and she is marked in comparison to the effort displayed by the other students in her class.

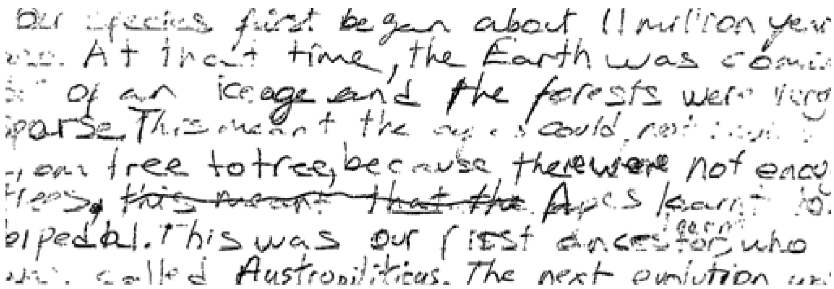
Our species first began about 11 million years ago. At that time, the Earth was coming out of an ice age and the forests were very sparse. This meant the apes could not swing from tree to tree, because there were not enough trees, ~~this meant that the~~ Apes learnt to be bipedal. This was our first ancestor who was called Austropilitcus. The next evolution was

So, the girl always gets an average grade. She trusts the mark given to her by her teacher, and in her mind, she sees herself as average. She does not think she will ever get a higher grade, and therefore does not believe in her ability to do so. The fact that a student does not believe in their ability to develop is another serious failure of the teaching and learning process that we discuss in many of our books.

However, I wanted to change this self-recognition in the girl, so I began teaching her calligraphy. For five minutes here and ten minutes there, I would demonstrate how letters can be so beautifully written. As I showed the girl my writing, she remarked on how beautiful the letters were. When I heard her say this, I knew she had "her purpose" to want to put her effort into her writing. We practised together in breaks and lunch time, and after two weeks, she produced the following.

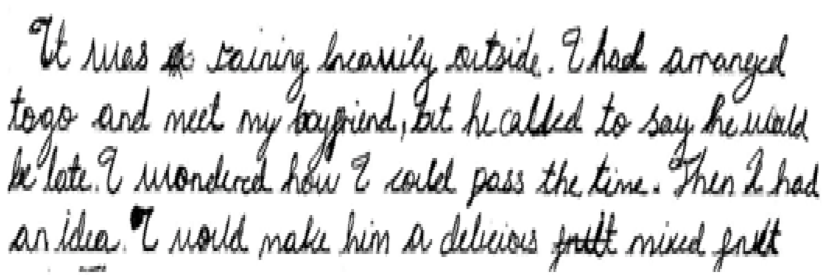
It was raining heavily outside. I had arranged to go and meet my boyfriend, but he called to say he would be late. I wondered how I could pass the time. Then I had an idea. I would make him a delicious ~~fruit~~ mixed fruit

From this moment onwards, the girl began to get top marks. Her belief in herself changed. She saw challenges to be overcome, and she now knew that she would leave school to become the doctor she had always wanted to be. A dream she had been deprived of by teachers too ready to mark what they saw, and never gave thought to the art of sensitivity in awareness.

We can see here how a student was easily and fully corrected in their poor ability, and we can imagine the change in her opportunities that came through this.

Yet, we should bear in mind that although these examples relate to letter formation, they do, in fact, explain all the means by which a student appears to be different in how they develop to remember information and how they learn to share their mind.

If you are interested to know more of my work or books, please contact me via my website

www.andersenroy.com

Story

Unforgettable Vendors of Z Street

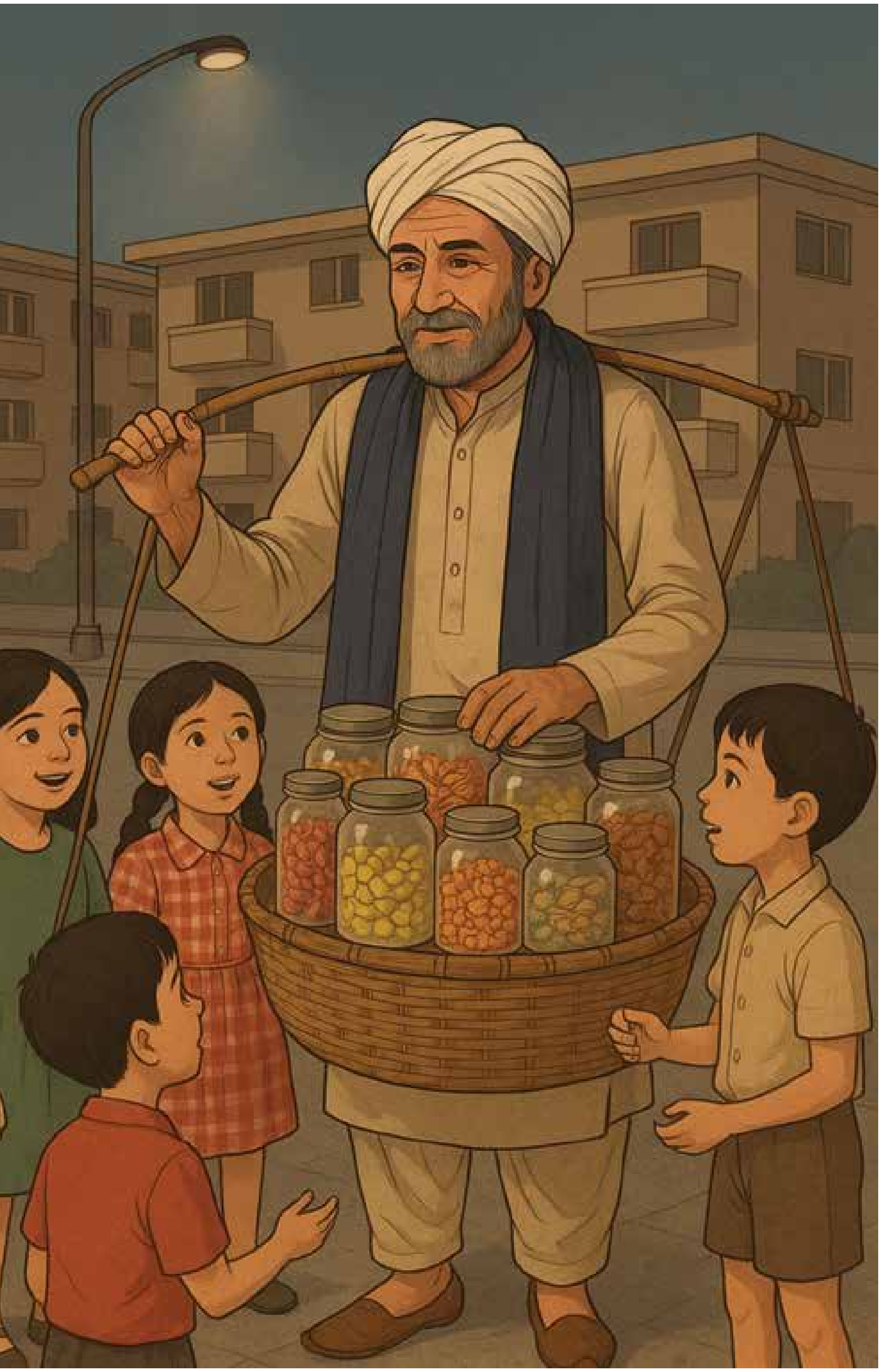

Anita Thakur

Z Street wasn't just a lane—it was a circus of smells, sounds, and stories. We didn't need clocks. Our day was divided by vendors: the bakery man's bell, the chholewala's whistle, the kulfiwala's cry, and, of course, Maatoo's laughter echoing through the evening. They didn't just sell food—they sold moments.

The Morning Bakery Man

"Ting-ting! Hot buns! Fresh biscuits!"

That bell was our alarm clock. I'd still be half-asleep, hair dripping from a freezing tap-water shower, when his bicycle jingled down the lane. My uniform—white pleated skirt, red-checked shirt—was ready. Shoes whitened with chalk, socks pulled up, I stood at the balcony clutching my coins like treasure.

He came riding his rusted bicycle, balancing a steel box that smelled like heaven. Inside were hot cross buns, tiny bread loaves, cupcakes that stuck to your fingers, crumbly nankhatai, and biscuits that could make you forget you were late for school.

"Two buns, one cupcake!" I'd shout before anyone else could.

"You'll finish it before breakfast again, beti?" he'd tease.

Of course, I would. Stuffed parathas at home were no match for a bakery bun eaten at the gate, still steaming, while my friends watched enviously. By the time we left for school, Tommy—the lane's honorary dog—waited at the

corner for his share of crumbs.

That bakery man didn't just feed us. He declared that a new day had officially begun on Z Street.

The Midday Chholewala

Around noon, when the sun melted the air, we'd hear the chholewala's rhythmic clang of spoon against steel.

"Chhole! Garamchhole! Masaledarchhole!"

He'd appear like a hero in slow motion, bicycle loaded with steel boxes that smelled of roasted cumin and mystery. His chhole came in stitched leaf bowls, topped with onions and a wicked green chutney that could make your eyes water and your heart sing.

Once I asked, "Uncle, why do your chhole taste better than my mother's?"

He winked. "Because I don't let her stir the pot!"

Even my father laughed at that one. People planned lunch around him. Old aunties sent their leftover chapatis out to be reborn as royal meals. His chhole were humble but glorious—like sunshine in a bowl.

The Afternoon Kulfi Vendor

By three o'clock, the air sizzled and so did our patience. That's when the kulfiwala's voice floated through the street like magic:

"Kuuulfiiiii! Matkaaakulfi!"

He carried an earthen pot wrapped in red cloth, balanced on ice. Inside were metal moulds chilled to perfection. For five paisa, you got a small one; ten paisa bought a feast on a stick.

We'd dash out, coins clinking, and form a line like soldiers at attention. The moment he pulled out a mould and tapped it free, we'd start drooling.

One summer, Grandma joined the fun. Toothless but determined, she smacked her lips and said, "Arrewah! It's so cold, my teeth ran away before I did!"

We licked every drop, swapped flavors in secret, and occasionally smeared a bit on our noses to make the others laugh. When cousins visited during vacation, Grandma's house turned into a full-fledged kulfi court.

The kulfiwala wasn't just selling dessert—he was selling summer itself, frozen and delicious.

The Evening Chhabriwala – Maatoo

As the sun dipped, along came our favorite—Maatoo, the Kashmiri chhabriwala. He balanced two big baskets on a bamboo pole across his shoulders, walking as if the earth itself had music.

"Aao bachcho! Dand kadaka! Imli! Mithamurmura!"

We'd run to him, waving coins, shouting over each other. He wore a long phiran, white turban, and juttis that had seen better days. His cheeks were as red as his imli candies.

"Maatoo, why do you always give Bittu extra?" I once complained.

He chuckled. "Because Bittu says please. You, madam, only say 'jaldi karo!'"

He was right. I began practicing my "please" just for him.

Maatoo never let a child leave empty-handed. His laughter could chase away a bad mood faster than his sweets could melt. He taught us that generosity could be the biggest treat of all.

The Vegetable Seller

Then came the vegetable seller, hollering like an opera singer:

"Tamatar le lo! Bhindi le lo! Tazzi gobhi!"

Aunties rushed out with baskets, and the real show began—bargaining!

"Fifteen rupees a kilo? Are you robbing me?"

"Bhenji, I'm practically giving them away!"

"Then give me two kilos for twenty."

He sighed dramatically. "Aap log toh mujhe bhooka maroge!"

The gossip flowed faster than the bargaining. They discussed neighbours, government salaries, and who was getting new curtains. He listened patiently, sometimes offering advice that had nothing to do with vegetables. And if someone ran short on cash, he'd just wave it off—"Pay me when the salary comes, Behanji!"

He wasn't just a vendor; he was part of the neighborhood news network.

The Night Vendors and Travelers

Just as the street prepared for evening tea, came the man selling Agra's moth namkeen and soft white petha. You could smell the fried gram and sugar syrup long before you saw him. Some evenings, we carried chickpeas or dried corn to the bhatti guy, who roasted them for a small fee—or just kept a handful as payment.

Then there were the exotic visitors—Bengali ladies with snapping cloth bags full of red-and-white sea-shell bangles, bright sindoor, and kantha-stitched tablecloths. They spoke fast, smiled often, and somehow made everyone buy something they didn't need.

Then came the Gujarati women, tough as nails, bargaining over old clothes and shiny new steel vessels. "You think this sari is worth two bowls? Arre, it's pure cotton!" one would declare. It always ended with one triumphant smile—and the other grumbling all the way home.

Epilogue: The Street That Sold Memories

Today, Z Street is quieter. The children are grown, the houses taller, and the bells fewer. But sometimes, when the wind blows just right, I swear I still hear the ting-ting of the bakery man's bicycle or Maatoo's booming laughter.

Those vendors didn't just feed us—they filled our days with flavor, laughter, and mischief.

Z Street wasn't just a neighborhood.

It was a menu of memories—served hot, spicy, and unforgettable.

Freelance Poet and Writer
anitathak@gmail.com

Gita Jayanti: The Celebration of Divine Wisdom

Introduction

Gita Jayanti is one of the most sacred and spiritually significant days for Hindus around the world. It commemorates the divine revelation of the Bhagavad Gita, the timeless scripture that is regarded as the essence of all Vedic knowledge and one of the greatest philosophical dialogues in world literature. The Bhagavad Gita—literally meaning "Song of the Lord"—was delivered by Lord Krishna to the warrior prince Arjuna on the battlefield of Kurukshetra. Gita Jayanti thus marks the birth of this divine discourse, a moment that transformed human understanding of duty, righteousness, and the path to liberation.

Historical and Scriptural Background

The Bhagavad Gita forms a part of the Mahabharata, specifically within the Bhishma Parva (Book of Bhishma). The Mahabharata, composed by the sage Vyasa, is not only an epic of war and heroism but also a profound exploration of dharma—righteous conduct in all circumstances. The context of the Gita is unique: it was spoken in the midst of preparation for a great war between two factions of the same royal family—the Pandavas and the Kauravas.

When Arjuna, the mighty warrior of the Pandavas, saw his kinsmen, teachers, and friends on both sides ready to fight and die, he was overcome by despair and moral confusion. He questioned the righteousness of fighting such a war, even if the cause appeared just. It was at this critical juncture that Lord Krishna, serving as Arjuna's charioteer, delivered the spiritual discourse that became the Bhagavad Gita.

Through eighteen chapters and seven hundred verses, Krishna revealed profound truths about life, duty, devotion, and the eternal nature of the soul. He guided Arjuna from confusion to clarity, from weakness to strength, and from sorrow to spiritual realization. Thus, the Gita not only helped Arjuna fulfill his immediate duty as a warrior but also became a universal guide for all humanity on how to live righteously and attain inner peace.

The Significance of Gita Jayanti

Gita Jayanti is celebrated on the Ekadashi (eleventh day) of the bright fortnight (Shukla Paksha) in the month of Margashirsha (November–December) according to the Hindu lunar calendar. The day is believed to

mark the exact occasion when Lord Krishna spoke the Gita to Arjuna over five thousand years ago on the battlefield of Kurukshetra.

The significance of this day extends far beyond a simple religious observance. Gita Jayanti represents the eternal victory of knowledge over ignorance, of dharma over adharma (righteousness over unrighteousness). The teachings of the Gita are universal in nature—they transcend the boundaries of time, geography, and culture. They address the fundamental questions of human existence: Who am I? What is my purpose? How should I act in the world? What is the ultimate goal of life?

On this day, devotees remember and honor the moment when divine wisdom descended upon humanity. It is a reminder that spiritual guidance is always available for those who seek truth with sincerity and humility.

Celebrations and Rituals

Gita Jayanti is celebrated with great reverence in many parts of India and around the world. The focal point of the celebration is the recitation and study of the Bhagavad Gita. In temples, homes, and ashrams, devotees gather to chant the verses, listen to discourses by spiritual teachers, and participate in discussions on the Gita's teachings.

In Kurukshetra—the very land where the Gita was spoken—the day assumes grand significance. Thousands of devotees, scholars, and pilgrims visit the holy city to take part in the Gita Jayanti Mahotsav. The festivities usually last for several days and include recitations, cultural programs, exhibitions, seminars, and mass Gita Path (collective recitation of the entire text). Pilgrims take a holy dip in the Brahma Sarovar, a sacred water tank associated with creation itself, symbolizing spiritual purification and renewal.

Apart from India, Gita Jayanti is observed by Hindu communities across the globe—in countries such as the United States, the United Kingdom, Mauritius, Fiji, Singapore, and many others. Temples of the International Society for Krishna Consciousness (ISKCON) and other spiritual organizations host special programs, encouraging people of all backgrounds to study and apply the teachings of the Gita in daily life.

Philosophical Teachings of the Bhagavad Gita

The enduring relevance of Gita Jayanti lies in the universality of the Bhagavad Gita's message. The scripture encompasses several key philosophical concepts that continue to inspire thinkers, leaders, and spiritual aspirants across the world.

- **Dharma (Righteous Duty):**

One of the central teachings of the Gita is the importance of performing one's duty without attachment to results. Krishna urges Arjuna to act according to his swadharma (personal duty) as a warrior, reminding him that avoiding one's responsibilities leads to

inner turmoil and social imbalance.

Karma Yoga (Path of Selfless Action):

The Gita teaches that one should act without selfish desire or expectation of reward. Such selfless action purifies the mind and leads to spiritual growth. This idea has inspired countless individuals to work for the welfare of others without attachment to personal gain.

- **Jnana Yoga (Path of Knowledge):** Through knowledge and discernment, one realizes the distinction between the eternal soul (Atman) and the temporary material body. True wisdom lies in understanding that the soul is indestructible, unborn, and ever blissful.
- **Bhakti Yoga (Path of Devotion):** The Gita highlights devotion to God as a supreme path to liberation. Through love, surrender, and faith in the divine, the seeker transcends ego and attains unity with the Supreme Being.
- **Equanimity and Detachment:** Krishna advises maintaining mental balance in success and failure, pleasure and pain. Such equanimity leads to inner peace and freedom from suffering.

These teachings make the Bhagavad Gita a practical manual for living a balanced, purposeful, and spiritually fulfilling life.

The Global Influence of the Gita

Over the centuries, the Bhagavad Gita has profoundly influenced not only Indian civilization but also global philosophical thought. Leaders such as Mahatma Gandhi, Swami Vivekananda, Sri Aurobindo, and many others have drawn inspiration from its teachings. Gandhi described the Gita as his "spiritual dictionary," saying it offered him solace and guidance during the darkest times of his life.

Western philosophers and writers such as Aldous Huxley, Henry David Thoreau, and Ralph Waldo Emerson were deeply influenced by the Gita's vision of harmony between action and spirituality. Thoreau once remarked that every morning he bathed his intellect in the stupendous philosophy of the Bhagavad Gita.

Today, universities, spiritual organizations, and scholars continue to study and interpret the Gita from various perspectives—philosophical, psychological, ethical, and ecological. It remains a source of guidance for individuals seeking balance between material pursuits and spiritual growth.

The Relevance of Gita Jayanti in Modern Times

In the modern world, characterized by stress, moral dilemmas, and materialistic pursuits, the message of the Bhagavad Gita holds even greater significance. Gita Jayanti reminds humanity that peace and fulfillment come not from external achievements

but from inner realization and right action.

The Gita's teachings on detachment, ethical responsibility, and inner discipline can be applied to contemporary issues such as mental health, environmental responsibility, and social justice. By following the principle of nishkama karma—selfless action—individuals can contribute to the welfare of society while maintaining personal tranquility.

Gita Jayanti thus encourages people to introspect, to realign their lives with higher values, and to embrace spirituality as a guiding force in the modern age. It is a celebration not only of divine revelation but also of human potential for transformation through knowledge and devotion.

Conclusion

Gita Jayanti is more than a festival; it is a reminder of humanity's eternal quest for truth. It celebrates the

moment when divine wisdom was revealed to dispel confusion and guide the soul toward enlightenment. Every verse of the Bhagavad Gita resonates with timeless truth, urging us to live with courage, clarity, and compassion.

As devotees recite the Gita on this sacred day, they reaffirm their commitment to righteousness, selfless service, and spiritual awakening. The light that shone on the battlefield of Kurukshetra continues to illuminate hearts around the world, reminding us that true victory lies not in conquest, but in the realization of the self and the fulfillment of divine purpose.

Guru Gobind Singh Jayanti: The Celebration of Courage, Faith, and Spirituality

Introduction

Guru Gobind Singh Jayanti is one of the most revered occasions in the Sikh calendar. It commemorates the birth anniversary of Guru Gobind Singh Ji, the tenth and last human Guru of Sikhism. Guru Gobind Singh Ji was not only a spiritual leader but also a philosopher, poet, warrior, and visionary who transformed the Sikh community into a disciplined and courageous order. His life and teachings continue to inspire millions around the world, emphasizing righteousness, equality, justice, and devotion to God. Guru Gobind Singh Jayanti, celebrated with deep devotion and enthusiasm, is a reminder of his sacrifice, leadership, and enduring spiritual legacy.

Early Life of Guru Gobind Singh Ji

Guru Gobind Singh Ji was born on 22 December 1666 (according to the Gregorian calendar) in Patna Sahib, present-day Bihar, India. According to the Nanakshahi calendar, his birthday is observed on different dates each year, often in December or January. His birth name was Gobind Rai, and he was the son of Guru Tegh Bahadur Ji, the ninth Sikh Guru, and Mata Gujri Ji.

From a very young age, Guru Gobind Singh Ji exhibited exceptional wisdom, courage, and spiritual depth. When he was only nine years old, he witnessed the martyrdom of his father, Guru Tegh Bahadur Ji, who sacrificed his life to protect the religious freedom of Hindus against forced conversions by the Mughal emperor Aurangzeb. This defining event shaped young Gobind Rai's vision and sense of responsibility. Following his father's martyrdom in 1675, Gobind Rai became the tenth Guru of the Sikhs.

Transformation of the Sikh Community

Guru Gobind Singh Ji's leadership was characterized by an unwavering commitment to justice, equality, and moral strength. He realized that in order to withstand oppression and defend righteousness, the Sikhs needed to be both spiritually enlightened and physically prepared. To fulfill this mission, he emphasized the importance of Shakti (power) and Bhakti (devotion), integrating the spiritual and the martial.

The most transformative event in Sikh history occurred on 13 April 1699, on the day of Vaisakhi, when Guru Gobind Singh Ji founded the Khalsa Panth at Anandpur Sahib. Gathering thousands of Sikhs, he called upon them to dedicate their lives to truth, courage, and selfless service. On that day, he introduced the initiation ceremony known as Amrit Sanchaar, through which he baptized five devoted Sikhs, known as the Panj Pyare (the Five Beloved Ones): Bhai Daya Singh, Bhai Dharam Singh, Bhai Himmat Singh, Bhai Mohkam Singh, and Bhai Sahib Singh.

He then requested the Panj Pyare to initiate him in the same manner, symbolizing equality and humility. This act marked the birth of the Khalsa, a community of saint-soldiers committed to righteousness, equality, and defense of truth.

Principles of the Khalsa

Guru Gobind Singh Ji established a code of conduct for the Khalsa that remains central to Sikh identity today. Members of the Khalsa were to adhere to the Five Ks (Panj Kakaars):

- Kesh – uncut hair, representing respect for God's creation.
- Kangha – a wooden comb, symbolizing cleanliness and order.
- Kara – a steel bracelet, signifying restraint and moral discipline.
- Kirpan – a sword, denoting courage and the duty to protect the weak.
- Kachera – cotton undergarments, representing modesty and self-control.

Guru Gobind Singh Ji gave all Khalsa Sikhs the surnames Singh (Lion) for men and Kaur (Princess) for women, emphasizing equality and dignity. This transformed the Sikh community into a unified brotherhood that transcended caste, creed, and social hierarchy.

Literary and Spiritual Contributions

Guru Gobind Singh Ji was also a profound scholar and poet. Fluent in Punjabi, Persian, Sanskrit, and Braj, he composed numerous spiritual, philosophical, and heroic works. His writings, compiled in the Dasam Granth, include compositions such as Jaap Sahib, Benti Chaupai, Akal Ustat, and Zafarnama.

Through these works, he conveyed deep spiritual truths, the importance of moral courage, and devotion to the Almighty. The Zafarnama, a letter addressed to Emperor Aurangzeb, is particularly renowned for its moral power — Guru Gobind Singh Ji rebukes the emperor for his deceit and cruelty, while reaffirming his faith in divine justice.

He also finalized the Guru Granth Sahib Ji, the eternal Guru of the Sikhs, by adding the hymns of his father, Guru Tegh Bahadur Ji, to the original AdiGranth compiled by Guru Arjan Dev Ji. Before his passing in 1708, Guru Gobind Singh Ji declared the Guru Granth Sahib Ji as the eternal and final Guru of Sikhism, thus ending the line of human Gurus.

Legacy of Courage and Sacrifice

Guru Gobind Singh Ji's life was marked by extraordinary sacrifice. He lost all four of his sons in the struggle for righteousness — two were executed by the Mughals in Sirhind, and two died fighting valiantly in battle. Despite immense personal tragedy, Guru Gobind Singh Ji remained steadfast in his mission and faith. His teachings continue to inspire people to stand up for truth and justice even in the face of adversity.

He envisioned a society where every individual could live with freedom, dignity, and equality. His message transcended religion and time, promoting harmony and spiritual

awakening.

Celebration of Guru Gobind Singh Jayanti

Guru Gobind Singh Jayanti is celebrated with great devotion and enthusiasm by Sikhs across the world, especially in Punjab and at major Sikh shrines such as Takht Sri Patna Sahib and Takht Sri Hazur Sahib (Nanded). The celebrations begin days in advance with Akhand Path (a continuous, unbroken reading of the Guru Granth Sahib Ji).

On the day of the Jayanti, processions (Nagar Kirtans) are organized, where devotees sing hymns, display martial arts (Gatka), and carry the holy scripture in beautifully decorated palanquins. Langars (community kitchens) are organized in Gurudwaras, serving free meals to people of all backgrounds, emphasizing the Sikh principles of equality, community service, and humility.

In homes and Gurudwaras, devotees gather to recite prayers, listen to kirtans (devotional songs), and reflect upon the Guru's life and teachings. The day is marked by joy, devotion, and a reaffirmation of faith in truth and selfless service.

Teachings and Relevance Today

Guru Gobind Singh Ji's teachings are timeless and continue to guide humanity. He taught that God is one, beyond form and fear, and that all human beings are equal regardless of caste, gender, or religion. His emphasis on courage and discipline reminds people to act fearlessly in defense of righteousness.

In today's world, where divisions and injustices persist, Guru Gobind Singh Ji's vision offers a path toward harmony and resilience. His concept of the "Sant-Sipahi" (Saint-Soldier) encourages individuals to combine spiritual wisdom with active responsibility, balancing compassion with courage.

He also taught self-reliance and education, encouraging his followers to develop physical, intellectual, and moral strength. His life was a perfect blend of action and spirituality — a reminder that devotion to God must also be reflected through service to humanity.

Conclusion

Guru Gobind Singh Jayanti is not merely a commemoration of a historical figure; it is a celebration of a timeless spirit that continues to illuminate the path of righteousness, courage, and devotion. Guru Gobind Singh Ji's legacy transcends religious boundaries and speaks to the universal values of freedom, equality, and justice.

Through his vision, the Sikh community emerged as a force for truth and humanity, dedicated to protecting the weak and serving society selflessly. As people celebrate Guru Gobind Singh Jayanti each year, they remember not only the Guru's extraordinary life but also the ideals he lived for — truth, compassion, courage, and unwavering faith in God.

In essence, Guru Gobind Singh Jayanti reminds us that real strength lies not in power or wealth but in the purity of heart, fearlessness of spirit, and commitment to righteousness. His life continues to inspire generations to stand firm in the face of injustice and to walk the path of virtue with humility and love.

The Winter Solstice: The Longest Night and the Turning of the Year

The Winter Solstice is one of the most ancient and universally observed natural events in human history. It marks the point in the year when the Northern Hemisphere experiences its shortest day and longest night. Although the precise date varies slightly—usually falling on December 21 or 22—the Winter Solstice has always represented far more than an astronomical event. Across millennia and civilizations, it has served as a profound symbol of death and rebirth, darkness giving way to light, and the eternal rhythm of the seasons.

The Astronomical Foundation

At its core, the Winter Solstice is a celestial event defined by Earth's axial tilt. The Earth's axis is tilted approximately 23.5 degrees relative to its orbit around the Sun. This tilt is responsible for the changing seasons as the planet makes its annual journey around the Sun. During the Winter Solstice in the Northern Hemisphere, the North Pole is tilted farthest away from the Sun. As a result, the Sun takes its lowest and shortest path across the sky, leading to the least daylight and the longest night of the year.

At the exact moment of the solstice, the Sun appears directly overhead at the Tropic of Capricorn, which lies at 23.5 degrees south latitude. After this point, the days gradually lengthen, and the Sun's arc in the sky climbs higher each day. This slow but steady return of light has given the solstice profound symbolic importance throughout human history—a celestial promise that warmth, fertility, and life will return.

Ancient Observations and Monuments

Human beings have tracked the solstices for thousands of years, using them to guide agricultural, religious, and social calendars. Long before the invention of writing, ancient peoples built monuments aligned with the movements of the Sun. These structures reveal that our ancestors not only understood the cycle of the seasons but also regarded the solstice as a sacred moment in the cosmic order.

One of the most famous solstice monuments is Stonehenge in England. The prehistoric stone circle, completed around 2500 BCE, is precisely aligned with the solstitial sunrise and sunset. On the Winter Solstice, the setting Sun aligns with the Heel Stone and the center of the monument, suggesting

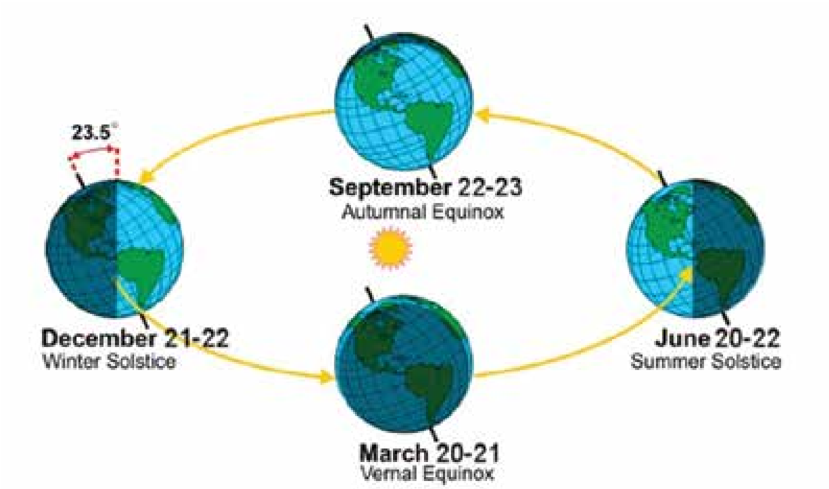

that it was used for ritual observances marking the rebirth of the Sun.

In Ireland, Newgrange, an ancient passage tomb built around 3200 BCE—older than both Stonehenge and the Egyptian pyramids—was constructed so that the rising Sun on the Winter Solstice would shine directly into its central chamber. For a few brief minutes, a shaft of sunlight illuminates the inner sanctum, symbolically awakening the tomb and reaffirming the triumph of light over darkness.

Similar alignments appear across the world: the Great Temple of Karnak in Egypt, Chaco Canyon in the American Southwest, and Machu Picchu in Peru all feature structures that celebrate the solar cycle. These monuments underscore the universality of the solstice as both an astronomical and spiritual event.

Mythology and Symbolism

The Winter Solstice has always inspired myths and festivals centered around renewal, resurrection, and the cyclical nature of existence. In many cultures, this darkest time of year symbolized both an ending and a beginning—a liminal moment when the old Sun dies and a new one is born.

In ancient Rome, the festival of Saturnalia celebrated the god Saturn, a deity of agriculture and time. Held around December 17–23, Saturnalia was a time of feasting, gift-giving, and social inversion, where slaves dined with masters and norms were relaxed. The revelry symbolized chaos before the restoration of order, reflecting the turning of the cosmic wheel.

The ancient Persians and Babylonians celebrated Yalda Night, marking the victory of the Sun god Mithra over darkness. To this day, Yalda remains a major Iranian celebration: families gather on the longest night of the year to eat pomegranates and watermelons—symbols of life and light—and to recite poetry until dawn.

In Scandinavia, pre-Christian peoples honored Yule, a festival marking the Sun's rebirth. Yule traditions—evergreen decorations, feasting, and the burning of the Yule log—later merged into Christmas customs. The Yule log, for instance, symbolized the light of the returning Sun, while evergreen boughs represented life enduring through the cold.

The ancient Chinese festival Dongzhi, meaning "arrival of winter," celebrates the balance of yin and yang. It is a time to honor ancestors and share tangyuan (sweet rice balls), which represent reunion and harmony. In Japan, the solstice is observed with hot baths scented with yuzu fruit and prayers for good fortune in the coming year.

Across Indigenous cultures of the Americas, the solstice holds deep spiritual significance as well. The Hopi of the American Southwest celebrate Soyal, a ceremony marking the Sun's return and the renewal of life. In the Andes, the Inti Raymi festival—now celebrated in June, during the Southern Hemisphere's solstice—honors the Sun god Inti, reinforcing the reciprocal relationship between humans and the

natural world.

The Solstice and the Birth of Modern Holidays

Many aspects of modern winter holidays have roots in solstice traditions. When Christianity spread through Europe, early church leaders aligned the celebration of Christmas with pre-existing pagan solstice festivals. Though the exact date of Jesus' birth is unknown, December 25 was chosen partly because it coincided with Roman festivities honoring Sol Invictus, the "Unconquered Sun." This blending of traditions allowed Christian symbolism of divine light entering the world to merge seamlessly with ancient solar imagery.

Similarly, Hanukkah, the Jewish Festival of Lights, though not directly tied to the solstice, falls around the same season and emphasizes light's triumph over darkness. In modern times, holidays such as Kwanzaa and New Year's Eve have also become part of this broader cultural pattern of reflection, renewal, and community gathering around the darkest days of winter.

The Science and Spirituality of Light

The Winter Solstice invites contemplation of both scientific wonder and spiritual depth. Scientifically, it demonstrates Earth's dynamic relationship with the Sun—the source of all life. Spiritually, it reflects the resilience of hope. The fact that after the longest night the light begins to return is an enduring metaphor for human endurance and renewal.

For many, the solstice is a time for stillness and introspection. It asks us to slow down, to rest as the natural world does, and to prepare for the gradual return of vitality. Modern solstice celebrations—whether secular or spiritual—often involve candlelight ceremonies, meditations, or outdoor gatherings to watch the sunrise. In a world often dominated by artificial light and constant motion, reconnecting with this natural rhythm can be profoundly grounding.

Contemporary Relevance

In the modern era, the Winter Solstice continues to resonate as a reminder of humanity's connection to the cosmos. Amid climate change and environmental crisis, it invites reflection on our dependence on the cycles of nature. The growing popularity of solstice festivals, eco-spirituality, and seasonal mindfulness practices shows a renewed appreciation for ancient.Wisdom that recognized humans as part of, not apart from, the Earth's rhythms.

Many communities now celebrate the solstice as a sustainable alternative to commercialized holiday culture. Bonfires, lantern walks, and community feasts emphasize shared warmth and gratitude rather than material consumption. The solstice thus serves as both a physical and ethical turning point—a time to honor the past, release what no longer serves us, and set intentions for the returning light.

Conclusion

The Winter Solstice is more than an astronomical event; it is a timeless symbol of transformation. From prehistoric stone circles to modern festivals of light, humanity has always marked this moment when darkness reaches its peak and the promise of light begins anew. The solstice speaks to something fundamental in the human spirit: the awareness that even in our darkest hours, renewal is possible.

As the Earth tilts once more toward the Sun, we are reminded that the cycles of light and shadow, rest and renewal, death and rebirth are universal truths—woven into the fabric of both the cosmos and our own lives. The longest night, then, is not merely an end, but a beginning—the quiet turning of the wheel that brings us back, again and again, into the light.

माननीय संपादक महोदय!

सादर प्रणाम।

'शिक्षा सारथी' के गत माह के अंक को पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। विशेष रूप से पृष्ठ-5 पर प्रकाशित 'एआई के युग में शिक्षा' और पृष्ठ-9 पर 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स का शिक्षण-अधिगम में नवोन्मेषी अनुप्रयोग' लेख शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे। आज के तेजी से बदलते डिजिटल युग में शिक्षा को प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ने की आवश्यकता आपकी पत्रिका ने पूरी गहराई से समझी और पाठकों तक पहुँचाई है।

साथ ही पृष्ठ-13 पर प्रकाशित 'एआई युग की शिक्षाः संतुलन तकनीक और नैतिकता' लेख ने एआई के विवेकपूर्ण उपयोग और मानव मूल्यों की रक्षा के बीच संतुलन बनाए रखने पर विचारपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। यह लेख शिक्षकों को केवल तकनीक अपनाने ही नहीं बल्कि उसके नैतिक पक्ष को समझने के लिए भी प्रेरित करता है। ऐसे विषयों को सरल भाषा में और व्यावहारिक उदाहरणों के साथ प्रस्तुत करने के लिए आपकी संपादकीय टीम बधाई की पात्र है। आशा है, भविष्य में भी पत्रिका इसी प्रकार शिक्षा जगत् को नई दिशा देती रहेगी।

धन्यवाद और शुभकामनाएँ।

रहमदीन
प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर
लेंग्वेज़ एंड लर्निंग फाउंडेशन
शिक्षा सदन, पंचकूला

माननीय संपादक महोदय!

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' के गतांक में प्रकाशित लेखों ने विद्यालय और समुदाय के बीच सहयोग तथा विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया, जो अत्यंत प्रासंगिक है। ऊर्जा संरक्षण पेंटिंग प्रतियोगिता-2025 की विस्तृत रिपोर्ट पढ़कर हर्ष हुआ। ऐसी प्रतियोगिताओं से न केवल विद्यार्थियों में रचनात्मकता विकसित होती है, बल्कि पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का भाव भी जागृत होता है।

इसी प्रकार बड़ौली विद्यालय में लोक-कला संरक्षण का सुंदर प्रयास पढ़कर प्रेरणा मिली। स्थानीय संस्कृति और लोककला को विद्यालय स्तर पर जीवित रखने की पहल सराहनीय है। इसके अतिरिक्त 'स्कूल और समुदाय के बीच समन्वय : एक आवश्यक साझेदारी' शीर्षक लेख ने यह स्पष्ट किया कि विद्यालय अकेले शिक्षा का केंद्र नहीं हैं, बल्कि समाज के सहयोग से शिक्षा और भी प्रभावी हो सकती है। यह दृष्टिकोण आज के समय में अत्यावश्यक है। मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि आने वाले अंकों में भी ऐसे प्रेरणादायक प्रयासों और नवाचारों को स्थान दिया जाए।

सादर, आभार सहित।

पूनम कौशिक
पीजीटी अर्थशास्त्र
रावमा विद्यालय कोट, जिला- पंचकूला

होमवर्क

बच्चों के होमवर्क में
नहीं होतीं घर की कोई बातें
गुल्ली-डंडा, छुपम-छुपाई,
और दादी-नानी की कहानी भरी रातें।
फसलों की महक, तालाब, मेंढक और मछलियाँ
नीम के पेड़ पर चढ़ता-उतरता गिलहरियों का झुंड।
तवे पर नाचती गोल रोटी
गाय के गले में पड़ी घण्टी की रुनझुन
नरम-नरम घास का एहसास
पत्तों पर दमकती ओस की बूँदें
सुबह की गुनगुनी धूप
और अमावस की रातें।
हाँ, बच्चों के होमवर्क में
नहीं होतीं घर की कोई बातें।

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

आशीष दे माँ भारती

माँ भारती, मैं सारथी
उतारूँ तेरी आरती
कर्तव्य पथ पर मैं अटल
चलता रहा हूँ अविकल
गंतव्य मेरा लक्ष्य है
उत्साह असीम अक्षय है
गगन निहारता मुझे
धरा मुझे पुकारती
माँ भारती, मैं सारथी
उतारूँ तेरी आरती

प्रकाशित मैं दीप सम
हर रहा गहन तम
प्रचंड रण है शाश्वत
कर्मरत हूँ मैं सतत
अडिग अथक मैं सेवारत
आशीष दे माँ भारती
माँ भारती, मैं सारथी
उतारूँ तेरी आरती

भार गुरुतर लिए हुए
मैं प्रज्वलित करता दिये
प्रगति पथ पर अग्रसर
रहें शिष्य मेरे निरन्तर
दौड़ता रहे ये रथ
बना रहूँ सारथी
माँ भारती, मैं सारथी
उतारूँ तेरी आरती
संस्कार दूँ समाज को
नवीन पंथ आज को
बढ़ता चलूँ अनन्त को
गुँजाता मैं दिगंत को
प्रकाशित पुण्य पंथ है
माँ शारदे दुलारती
माँ भारती, मैं सारथी
उतारूँ तेरी आरती।

प्रभुदयाल हंस

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114